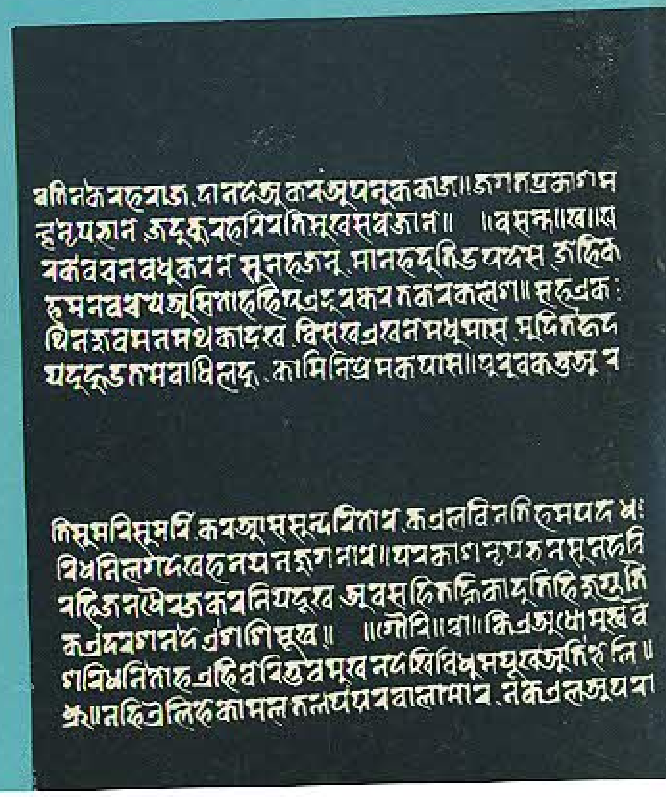
मध्यकालमे नेपाल उपत्यकाक प्रसिद्ध मल्ल-राजवंशक भक्तपुर शाखामे उद्भूत राजा जगत्प्रकाशमल्ल (1639-73 ई.) राजत्व ओ कवित्वसँ सम्पन्न एकटा विशिष्ट साहित्यकार छलाह। साहित्य, संगीत ओ कलाक क्षेत्रमे हिनक योगदान महत्त्वपूर्ण रहलनि। साहित्यविद्याविद्, वैदग्ध्यपाथोधि, गन्धर्व-विद्यागुरु सन विरुदसँ विभूषित जगत्प्रकाश जीवनक अल्पावधि ओ संघर्षमय राजनीतिक परिस्थितिक मध्यहु साहित्य-सर्जनक प्रति समर्पित रहलाह। कवि ओ नाटककारक रूपमे ख्यात एहि साहित्यस्रष्टाक अनेक गीत-संग्रह ओ नाटक सब उपलब्ध अछि। पौराणिक परिवेशमे रस-सृष्टि हिनक काव्य-नाटकमे सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ। विविध रसमध्य भक्ति ओ श्रृंगारक विशेष अवक्षेपण, प्रेमक श्रेष्ठता, निरलंकृत सरल भाषामे भावाभिव्यक्ति, संगीततत्त्वक व्यापकता हिनक वैशिष्ट्य थिकनि। मध्यकालक मैथिली साहित्यमे जगत्प्रकाश प्रायः एकमात्र कवि थिकाह जनिक काव्यमे सर्वथा वैयक्तिक भावावेश ओ आत्मानुभूतिक कारुण्यपूर्ण निश्छल ओ अनाबिल अभिव्यंजना देखल जाइछ। वास्तवमे जगत्प्रकाशक कृति मैथिलीक संगहि भारतीय साहित्यधाराक महत्त्वपूर्ण सम्पति थिक।

एकर रचयिता डा. रामदेवझा, विश्वविद्यालय प्राचार्य, मैथिली-विभाग ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, मैथिली साहित्यक वरिष्ठ अध्यापक ओ विशिष्ट विद्वाने नहि, आलोचक-गवेषकक संगहि प्रतिष्ठित कथाकार, नाटककार, निबन्धकार ओ कवि सेहो छथि। मैथिली क्षेत्र मे सव्यसाची साहित्यकारक रूपमे विश्रुत डाक्टर झाक 'एक खीरा : तीन फाँक,' 'मनुक सन्तान', 'धरती माता', 'इजोती रानी' कथा-संकलन; 'पसिझैत पाथर' नाट्य-संग्रह; 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका', 'मैथिली शैव साहित्य', 'उमापति' अनुसन्धान-आलोचना एवं अन्यान्य बहुशः शोध-निबन्ध ओ सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित छनि।

आवरण : जगत्प्रकाशक अप्रकाशित ग्रन्थक पाण्डुलिपिक
किछु पृष्ठक प्रतिच्छवि

जगत्प्रकाशमल्ल

रामदेवझा



भारतीय
साहित्यक
निर्माता

जगत्प्रकाशमल्ल

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता राजाक समक्ष भगवान बुद्धक माया रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कऽ रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

जगत्प्रकाशमल्ल

रामदेवझा

साहित्य अकादेमी

Jagat Prakash Mall : A monograph on medieval Maithili poet
by Ramdeo Jha. Sahitya Akademi, New Delhi (1990)

प्रथम संस्करण : 1990

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवन तारा बिल्डिंग, चौथा तल, 23ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता 700 053
29, एलडाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

मुद्रक
भारती प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा
दिल्ली 110 032

प्राक्कथन

मध्यकालक बहिरंग मैथिली साहित्यमे जगत्प्रकाशक महत्त्वपूर्ण स्थान मानल जाइत अछि। नेपालक भक्तपुरक मल्ल राजवंशमे उद्भूत महाराज जगत्प्रकाशमल्ल विशिष्ट कवि ओ नाटककार रूपमे विख्यात छथि। राजत्व ओ साहित्य-सृष्टिक अद्भुत संगम हिनक व्यक्तित्वमे देखल जाइत अछि। जगत्प्रकाशक जीवन राजा-दैव दुहूसँ प्रताडित रहलनि। बाल्यकालमे मातृ-पितृ-वियोग, पारिवारिक स्नेह-वात्सल्यक छत्रच्छायाक अभाव, समस्त जीवनमे प्रतिवेशी शासक द्वारा निरन्तर आक्रमण ओ अत्याचार तथा अन्ततः अल्पायुमे मृत्यु सन परिस्थितिकेँ देखैत जगत्प्रकाश द्वारा निरन्तर संघर्ष, भक्तपुरक सत्ता-प्रतिष्ठाक पुनस्संस्थापन, पारिवारिक दायित्वक निर्बाह ओ साहित्य-संगीत-कलाक क्षेत्रमे प्रभूत योगदान वास्तवमे अभिभूत कऽ देबऽवला अछि। परन्तु समग्रतामे हिनक जीवन ओ साहित्यक समालोचनाक एखनधरि कोनो प्रयास नहि भेल छल। अतः कवि नाटक-कारक रूपमे जगत्प्रकाशमल्ल पर ई सर्वप्रथम परिचयात्मक ओ आलोचनात्मक पुस्तक थिक। एहिठाम हुनक रचनाक साहित्यिक पृष्ठभूमि, समकालिक राज-नीतिक परिवेश, हुनक जीवन ओ साहित्यक परिचय दैत ओकर विशेषताक विश्लेषण कयल गेल अछि। एहि क्रमेँ अनेक नवीन तथ्यक उद्घाटन ओ निष्कर्षक प्रतिपादन भेल अछि। संभव अछि, कतोक विद्वान् एहिसँ भिन्नो अभिमत रखैत होथि अथवा भविष्यमे नवीन तथ्यक आलोकमे नवीन अवधारणा बनय। तथापि प्रस्तुत विनिबन्ध जगत्प्रकाशक काव्य-व्यक्तित्वक निरूपण-रेखांकनमे अवश्य सहायक सिद्ध होयत।

एकटा विशिष्ट साहित्य-निर्माता होइतो जगत्प्रकाशक समग्र कृति प्रकाशित नहि भऽ सकल अछि। नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे हिनक अप्रकाशित कृतिक पाण्डुलिपि सब सुरक्षित अछि। एहि ग्रन्थक लेखनमे विशेष रूपसँ अप्रकाशित पाण्डुलिपि पर अवलम्बित रहबाक अनिवार्य विवशता रहल अछि।

पुस्तकक शैली सामान्यतः विवरणात्मक राखल गेल अछि। अत्यावश्यक भेले पर कतहु-कतहु सन्दर्भ-निर्देश कयल गेल अछि। एहिठाम कालगणनामे नेपाल संवत् ओ इसवी सन दुहुक उपयोग कयल गेल अछि। स्मरणीय अछि जे नेपाल-

संवत्‌क प्रवर्त्तन 880 इसवीक कार्तिक अमावास्याकेँ भेल छल। अतः सामान्यतः नेपालसंवत्‌मे 880 वर्ष जोड़लापर इसवी सन ज्ञात होइछ तथा इसवीसनमे सँ एतबहि घटौलापर नेपाल संवत् प्राप्त होइछ जकरा संक्षेपमे ने० सं० सेहो लिखल जाइत अछि।

पुस्तक-लेखनमे आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन', पण्डित चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' तथा डॉ० शैलेन्द्रमोहनझासँ महत्त्वपूर्ण विमर्श प्राप्त भेल अछि। लेखक एहि गुरुजनक प्रति नतमस्तक छथि। प्रो० लक्ष्मीकान्तझा (मैथिली विभाग, सी० एम्० कालेज दरभंगा), डॉ० रत्नेश्वरझा (संस्कृत विभाग, सी० एम्० कालेज, दरभंगा) तथा प्रो० भोलाझा (मैथिली विभाग, जे० एन० कालेज, नेहरा, दरभंगा) क कतिपय सामग्रीक उपयोग करबाक सौविध्य एहि ग्रन्थक लेखनमे प्राप्त भेल तदर्थ कृतज्ञता निवेदित अछि। प्रो० भीमनाथझा (मैथिली विभाग, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) धन्यवादक भागी छथि जे ग्रन्थक पाण्डुलिपिक अधिकांश भाग धैर्यपूर्वक पढ़ि अनेक संशोधनक प्रस्ताव कयलनि। भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलामे जगत्प्रकाशमल्ल पर मैथिलीमे विनिबन्ध-लेखनक सुअवसर प्रदान करबाक हेतु लेखक साहित्य अकादेमीक प्रति हृदयसँ आभारी छथि।

श्रावणी पूर्णिमा
17 अगस्त, 1989
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा

—रामदेवझा

विषय-सूची

जगत्प्रकाशमल्लक पूर्ववर्त्ती मैथिली साहित्य-धारा

मैथिली साहित्यक इतिहासक मध्यकाल साधारणतः सोलहम शताब्दीक मध्यसँ मानल जाइत अछि। मध्यकालक मैथिली साहित्य मिथिलाक सीमासँ बाहरो पूर्वोत्तर भारतक विस्तृत भूभागमे प्रसूत-विकसित भेल। मिथिला ओ मिथिलासँ बाहर प्रवहमान साहित्य-धारामे प्रवृत्तिमूलक भिन्नता रहल अछि। अतः समस्त मध्यकालिक मैथिली साहित्यकेँ दुइ वर्गमे राखल जा सकैत अछि। मिथिलामे जे साहित्य रचित भेल तकर रचयिता मिथिलावासी छलाह। हुनका लोकनिक मातृ-भाषा मैथिली छलनि तथा हुनका लोकनिक सामाजिक परिवेश सामान्यतः मिथिले छल। मिथिलाक एहि साहित्य-धाराकेँ **अन्तरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्य** कहि सकैत छी। दोसर दिस मिथिलासँ बाहर एकटा वृहत्तर क्षेत्रक विभिन्न जन-पदमे मैथिली काव्य तत्तत् जनपदक जनसमुदायकेँ आकृष्ट कयलक। ओहन कवि-साहित्यकार जे मिथिलावासी नहि छलाह, जनिका लोकनिक मातृभाषा मैथिली नहि छलनि तथा भाषिक परिवेश सेहो मैथिलीसँ भिन्न छलनि; सेहो लोकनि मैथिलीक काव्य-माधुरीसँ आकृष्ट भऽ मैथिलीमे काव्य-सृष्टि करैत रहलाह एवं हुनक समाज ओहि काव्यक रसपान करैत रहल। बंगाल, असम, उड़ीसा ओ नेपालमे मैथिलीक ई काव्य-परम्परा जीवन्त रहल। अतः एहि चारू प्रदेशक मैथिली साहित्यकेँ **बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्य** कहब उपयुक्त होयत। बंगाल, असम ओ उड़ीसाक मैथिली साहित्यकेँ **ब्रजबुलि साहित्यक** अभिधान देल गेल अछि। परन्तु नेपालक मैथिली साहित्यकेँ ब्रजबुलिक अन्तर्गत परिगणित करब समीचीन नहि कहल जा सकैत अछि; कारण एकर प्रेरणा, पृष्ठभूमि ओ परिवेश ब्रजबुलिसँ सर्वथा भिन्न रहल। तेँ एकरा **नेपालीय मैथिली साहित्य** कहबे उपयुक्त होयत।

बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्यक नेपालीय परम्परामे अनेकानेक कवि-नाटककार प्रादुर्भूत भेलाह जाहिमे एकटा प्रमुख नाम छनि जगत्प्रकाशमल्लक। परन्तु जगत्प्रकाशमल्लक सम्बन्धमे विचार करबासँ पूर्व ओहि पृष्ठभूमि ओ परम्पराक विश्लेषण एवं परिचय अपेक्षित अछि जाहिमे बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्यक एतेक विकास संभव भऽ सकल तथा मैथिली साहित्यक इतिहासमे नेपालकेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान भेटि सकल।

एहि ठाम स्मरणीय जे नवमे-दशम शताब्दीमे **बौद्ध सिद्ध** लोकनि अपन भावाभिव्यक्तिक **माध्यम** बनाय पूर्वाञ्चलक लोकभाषाकेँ प्रतिष्ठित कऽ देलनि। चर्याचर्यविनिश्चयक राग-ताल-बद्ध गीत सब एहि बातक प्रमाण अछि जे ओहि कालमे लोकभाषामे जे गेयधर्मिताक गुण छल ताहिसँ ओ लोकनि पूर्ण प्रभावित छलाह। प्राच्ये भारतमे बारहमे शताब्दीमे जयदेव लोकभाषाक गेयधर्मिता तथा रागमय गीतात्मकताक आश्रयण कऽ संस्कृत भाषामे राधाकृष्णक प्रेमलीला विषयक **गीत गोविन्द** नामक प्रबन्धक रचना कयल। एहि कृतिक बाह्य स्वरूप प्रबन्धात्मक छल परन्तु आभ्यन्तर संरचना गीतात्मक छल जकरा नामोमे संयोजित कऽ देल गेल अछि। जयदेवक ई संस्कृत भाषामय कोमल-कान्त पदावली, सरल पदबन्ध, लयात्मकता, अन्त्यानुप्रासिकता तथा रसवत्तामे संस्कृत काव्य-परम्परासँ भिन्न तथा लोकभाषाक अत्यन्त निकट छल। तेँ डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी एकरा भारतीय साहित्य मध्य नवयुग अर्थात् भाषा-युगक प्रवेश-गीत कहने छथि।[1] आ एही विशेषताक कारणे **गीत गोविन्द** अत्यन्त लोकप्रिय भेल। जनमानस जयदेवक काव्य-रस-सीकरसँ आप्यायित भऽ गेल। परवर्त्ती कवि-मानस पर सेहो एकर प्रभाव पड़ब स्वाभाविक छल। गीत गोविन्दक विषय ओ शैलीक अनुसरण संस्कृत ओ लोकभाषा, दुहूक माध्यमे होमऽ लागल। परन्तु दुहूमे अनुसरणक प्रक्रियामे भिन्नता देखल जाइत अछि। संस्कृतमे जयदेवक प्रबन्ध शैलीकेँ यथावत् स्वीकार कऽ लेल गेल जे ओहि पद्धति पर रचित बिभिन्न संस्कृत काव्यकृतिसँ स्पष्ट अछि। परन्तु लोकभाषामे **गीतगोविन्दक** प्रबन्ध शैलीकेँ छोड़ि ओकर गीतशैली मात्रकेँ मुक्तक काव्यक रूपमे ग्रहण कयल गेल।

नव्य भारतीय आर्यभाषा सभक आदिकालीन साहित्येतिहासक पर्यालोचनसँ ई बात स्पष्ट होइत अछि जे जयदेवक प्रभाव उच्छल प्रवाहक रूपमे सर्वप्रथम मैथिलीएमे अवक्षेपित भेल : से भेल कविकोकिल विद्यापतिक ललितपदविन्यासमय रससिक्त अजस्र गीति-रचनामे। **गीतगोविन्दक** रचनाकार जयदेव छलाह, तेँ विद्या-पति **अभिनवजयदेवक** रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह।

परन्तु ई कहब जे सर्वथा जयदेवक प्रभावसँ विद्यापतिमे अकस्मात् काव्यस्फुरण भेलनि—समीचीन नहि लगैत अछि। विद्यापति जाहि देसिल बयनाकेँ अपन काव्य-सर्जनक माध्यम बनौलनि, ताहिमे हुनकासँ पूर्वक एकटा समृद्ध साहित्य-परम्पराक आधार **विद्यमान** छल। गीत, नाटक ओ **गद्य**-साहित्यक क्षेत्रमे मैथिली प्राक्विद्या-पतिए **युगमे अपन** अभिव्यक्ति-सामर्थ्यक परिचय दऽ चुकल छल।

बौद्ध सिद्धलोकनिक **चर्यागीतिक** उत्तराधिकार मैथिलीयोकेँ ओतबे प्राप्त

1. जयदेव—डा० सुनीति कुमार चटर्जी, मैथिली अनुवाद, डॉ० शैलेन्द्रमोहनझा, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, 1983, पृ०-10

छलैक जतबा मागधी-प्रसूत अन्य भाषा सबकेँ। परन्तु अन्य कोनहु मागधीजात नव्यभारतीय आर्यभाषामे चर्यागीतक शैलीक निर्बाध परम्परा देखबामे नहि अबैत अछि। परन्तु जाहि कालमे जयदेव **गीतगोविन्दक** रचना कयल ठीक ओही काल-सन्निधिमे विक्रमशिला महाविहारमे एकटा बौद्धचिन्तक **विनयश्रीकेँ** मैथिलीमे **गीत-रचना** करैत देखैत छियनि। विनयश्रीक एहि गीतक **उद्धार** महापण्डित राहुल सांकृत्यायन द्वारा सम्भव भऽ सकल। विनयश्रीक **गणना** सिद्ध लोकनिमे नहि होइत छनि मुदा हुनक गीतमे चर्यागीतक समस्त विशेषता पाओल जाइत अछि। आगाँ तेरहम-चौदहम शताब्दीक सन्धिकालमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर-केँ साहित्य-मंच पर अपन बहुमुखी **प्रतिभाक** संग उपस्थित देखैत छियनि।

मैथिलीक परिमार्जित शैलीमे रचित ज्योतिरीश्वरक गद्यग्रन्थ **वर्णरत्नाकर**केँ नव्यभारतीय आर्यभाषामे सर्वप्रथम **गद्यग्रन्थ** होयबाक गौरव प्राप्त छैक। कवि-शेखर एक दिवसमे चारिसय श्लोक-रचना **करबाक** सामर्थ्य रखैत छलाह किन्तु ओहि सामर्थ्यक प्रतिफल सम्प्रति कालक गर्त्तमे चल गेल अछि। तथापि हुनक एकगोट नाट्यकति **धूर्त्तसमागम** उपलब्ध अछि। ज्योतिरीश्वरमे **प्रयोगधर्मिताक** प्रति एकटा सहज रुझान दृष्टिगोचर होइत अछि जकर प्रमाणमे **धूर्त्तसमागमकेँ** प्रस्तुत कयल जा सकैछ।

धूर्त्तसमागम नाट्यशास्त्रक दृष्टिएँ रूपकक एकटा प्रभेद **प्रहसन** थिक। एहि प्रहसनक दुइ गोट रूप देखल जाइत अछि। पहिल रूप ओ थिक जाहिमे संस्कृत नाट्यपरम्पराक अनुरूप संस्कृत-प्राकृतक गद्य-पद्य संवादक प्रयोग भेल अछि। ई रूप मिथिला एवं मिथिलासँ बाहरक संस्कृतज्ञ प्रेक्षकक लेल छल। **धूर्त्तसमागमक** ई रूप लोकप्रियता सेहो प्राप्त कयलक ताहिमे सन्देह नहि। परन्तु एकर एक गोट दोसर रूप सेहो छल जकर एक जीर्ण खण्डित प्रतिक अन्वेषण नेपालक दरबार लाइब्रेरीसँ कऽ कऽ डा० जयकान्तमिश्र सर्वप्रथम प्रकाशित करबौलनि। एहि प्रतिमे संस्कृत प्रहसनक ओही संरचनामे मैथिली गीतक सेहो समावेश अछि जाहिमे पात्रक प्रथम प्रवेशक सूचना; ओकर रूप, गुण, स्वभाव ओ परिधानक वर्णन; पात्रक कथन तथा नाटकीय क्रिया आ घटनाक सूचना देल गेल अछि।

धूर्त्तसमागमक गीत-योजना वास्तवमे मिथिलामे ओहि कालमे प्रचलित नाट्यशैलीक संकेत दैत अछि जाहिमे गीतक प्रधानता रहैत छल आ से गीत रहैत छल मिथिला भाषाक। ज्योतिरीश्वर संस्कृत नाट्य पद्धति तथा लोकनाट्य पद्धतिक सम्मिश्रणसँ अभिनव नाट्यशैलीक निर्माण कयलनि आ प्रायः तेँ हुनक एकटा विशेषण **अभिनवभरत** सार्थक लगैत अछि।

धूर्त्तसमागमक गीत सब राग-ताल-निर्देश पूर्वक अछि। छन्द मात्रा पर आधृत तथा अन्त्यानुप्रासक निर्वाह सर्वत्र अछि। नारी-स्वरूपक वर्णनमे जयदेवक प्रभाव परिलक्षित होइछ अवश्य परन्तु अन्यत्र स्थानीयताक रंग विशेष। ई सब, गीतक

मैथिली परम्परा दिस संकेत करैत अछि ।

एहि ठाम **प्राकृत पैङ्गलम्क** ओहन पद्य सभ दिस ध्यानाकृष्ट करब अपेक्षित जाहिमे भाषाक स्वरूप मिथिलापभ्रंशक अछि तथा ओकर विषय-वस्तु सेहो अछि जकरा परवर्त्ती मैथिली कवि पल्लवित कयल। पद्यरचनाक दृष्टिएँ डाकक वचन ऐतिहासिक महत्त्वक मानल जा सकैत अछि जकर उद्धार प० जीवानन्द ठाकुर प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थ तथा तालपत्रक पोथी सबसँ कयलनि एवं जकर रचनाकाल हुनका विचारेँ बारहम-तेरहम शताब्दी भऽ सकैत अछि ।

प्राक्मैथिली साहित्यक जतबा साहित्यिक सामग्री सुनिश्चित रूपेँ ज्ञात अछि तदनुसार चर्यागीत, विनयश्रीक गीत, ज्योतिरीश्वरक गद्य ग्रन्थ ओ गीतिमय नाटक, प्राकृत पैङ्गलक मिथिलापभ्रंशक पद्य तथा डाकक वचनक पद्यक साहित्यिक परम्पराक रिक्थ विद्यापतिकेँ प्राप्त छलनि । विद्यापति अपन काव्यरचनागे जयदेवक शैलीक संयोगसँ एकटा नवीन प्रकारक गीत-शैलीक आविष्कार कयलनि । संगहि **गोरक्षविजय** नाटकक रचना द्वारा ओ मिथिलाक ओहि नाट्यशैलीकेँ संबलित कयल जकर सुनिश्चित रूप-रेखा ज्योतिरीश्वरक मैथिली **धूर्त्तसमागममे** देखल जाइत अछि । विद्यापतिक अभिनव गीत-शैली ओ मिथिलाक लोकभाषामय नाट्यशैली, पश्चात्काल मिथिला ओ प्राच्यभारतक विभिन्न जनपदमे अनुकरणीय भऽ उठल । मिथिलासँ बाहर अनुकरणक ई परम्परा तीन-चारि शताब्दी धरि अव्याहत गतिएँ चलैत रहल आ एहि अन्तर्गत प्रचुर ओ प्रकृष्ट साहित्यिक रचना होइत रहल जकरा स्थानीय रूपसँ -जे नाम देल जाउक मुदा थीक ई मैथिली साहित्य, बृहत्तर मैथिली साहित्य ।

मैथिली भाषा-साहित्यक ई विस्तार इतिहासक एकटा अद्भुत घटना मानल जा सकैत अछि । साधारणतः राजनीतिक विजयक संग विजेता जातिक भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसार विजित ओ शासित प्रदेशमे होइत देखल जाइत अछि । अरबी, फ़ारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच, पोर्तुगीज इत्यादि भाषाक प्रचार एकर प्रमाण थिक । परन्तु मैथिलीक संग एहन कोनो राजनीतिक घटना नहि भेल । तखन एकर प्रचारक पृष्ठभूमिमे जे कारण रहल अछि से पूर्णतः सामाजिक ओ सांस्कृतिक कहल जा सकैछ ।

मिथिला सब दिनसँ दार्शनिकक भूमि रहल अछि । विशेषतः स्मृति, न्याय, ओ मीमांसा दर्शनक क्षेत्रमे मैथिल मनीषी लोकनि भारतक नेतृत्व करैत रहलाह । जखन मगधकेँ केन्द्र बनाय बौद्ध लोकनि वैदिक धर्म एवं ओकर मान्यता पर प्रचण्ड प्रहार करऽ लगलाह तँ ओकर प्रतिरोध मिथिलाहिक दार्शनिक लोकनि कयलनि । बारहम शताब्दीमे उदयनाचार्य बौद्ध दार्शनिक लोकनिकेँ सर्वदाक हेतु निरस्त कऽ देलनि तथा तेरहम शताब्दीमे गंगेशोपाध्याय न्यायशास्त्रक एकटा नवे पद्धतिक प्रवर्त्तन कयल जे नव्य न्यायक नामसँ प्रख्यात भेल । मिथिला प्राचीन न्याय एवं नव्य न्यायक केन्द्र बनि गेल । एहि प्रसंगमे महापण्डित राहुल सांकृत्यायनक अभिमत छनि जे—वाचस्पति मिश्रक बाद तँ ब्राह्मण-न्यायशास्त्र पर तिर्हुतक एकच्छत्र राज्य भऽ जाइत अछि । ओ उदयन ओ बर्द्धमान सन प्राचीन न्यायक आचार्यकेँ उत्पन्न करैत अछि, आओर गङ्गेश उपाध्यायक रूपमे तँ ओहि नव्य-न्यायक सृष्टि करैत अछि, जे आगाँ चलि ततेक विद्वत्प्रिय भऽ जाइत अछि जे प्राचीन न्यायशास्त्रक पठन-प्रणालिएकेँ एक प्रकारसँ उठाब कऽ दैत अछि । यद्यपि नव्यन्यायक विकासमे नवद्वीप(बंगाल)क सेहो योग अछि, तथापि हम ई निस्संकोच कहि सकैत छी जे वाचस्पति मिश्र(841 ई०)क बादसँ मिथिला (देशक अर्थमे) न्याय-शास्त्र(प्राचीन ओ नव्य दुहू)क केन्द्र बनि जाइत अछि, आओर प्रत्येक कालमे भारतक श्रेष्ठ नैयायिक बनबाक सौभाग्य कोनो मैथिलेकेँ भेटैत अछि ।[1]

मिथिलामे अध्यापनक हेतु चौपाड़ि चलैत छल । भारतक अन्यान्य प्रदेशक दर्शन-शिक्षिक्षु लोकनि मिथिला दिस स्वाभाविक रूपेँ आकृष्ट भऽ ज्ञानार्जनक उद्देश्यसँ अबैत छलाह आ एहि चौपाड़ि सब पर वर्षक वर्ष रहि मैथिल गुरुसँ शास्त्र पढ़ैत छलाह । ई अन्यदेशीय छात्र लोकनि चिरकाल धरि मिथिला-निवास करैत एहि ठामक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जीवनमे समरस भऽ अनायासे मिथिलाभाषा सीखि जाइत छलाह । मिथिलाभाषाक गीत-नाटक इत्यादिक आनन्द सहज रूपेँ प्राप्त होइत जाइत छलनि । ओ लोकनि निष्णात भऽ जखन अपन देश जाइत छलाह तँ मस्तिष्कमे मैथिल गुरुसँ अर्जित शास्त्र-ज्ञानक संग ठोर पर मिथिलाभाषा ओ कण्ठमे मैथिलीक गान, जाहिमे विद्यापतिक गीतक प्राचुर्य रहैत छल, सेहो लेने जाइत छलाह ।

असम, बंगाल ओ उड़ीसामे मैथिली काव्यक लोकप्रियताक मूलमे मिथिलाक संग सांस्कृतिक अनुरूपता तथा भाषागत समरूपता सेहो महत्त्वपूर्ण कारण छल । एहि तीनू प्रदेशमे मूल मैथिली गानक परिपाटीक आधार पर स्थानीय कविलोकनि द्वारा काव्यरचना करबाक प्रेरक बनि गेल वैष्णव दर्शन । बंगाल-उड़ीसामे चैतन्य महाप्रभु मैथिली गानकेँ मधुरा-भक्तिक दार्शनिक संस्पर्श प्रदान कयल, तँ असममे महापुरुष शंकरदेव अपन वैष्णव धर्मक प्रचार-माध्यमक रूपमे मिथिलाभाषाकेँ अंगीकार कयल ।

बंगाल-उड़ीसाक ब्रजबुलि साहित्य एवं असमक अंकीयानाट ओ बरगीतक परम्परा ओकरहि परिणाम थिक ।

मैथिली-काव्यक देशान्तरमे प्रचार-प्रसारक एकटा दोसरो माध्यम रहल । मिथिलाक विद्वान्, कवि, संगीतज्ञ, विद्यावन्त, कलावन्त लोकनिकेँ देशक अन्य

1. मिथिलाङ्क, मिथिला-मिहिर, 1936 मे प्रकाशित निबन्ध 'बौद्ध नैयायिक', पृष्ठ 12 ।

भागमे बड़ आदरपूर्ण स्थान भेटैत छलनि। इतिहासक विभिन्न कालमे, विभिन्न राजसभामे मैथिल लोकनिकें समादृत होइत देखैत छियनि। कतोक मैथिली कवि मैथिलेतर आश्रयदाताकें अपन गीत समर्पित कयने छथि, जे हुनका लोकनिक गीतक भणिताक चरणसँ स्पष्ट प्रमाणित होइत अछि।

नेपालमे, मैथिलीभाषा ओ साहित्यक लोकप्रियता तथा ओहि परिपाटीक अनुसरण करैत साहित्यक विकासक कारण ओ परिस्थिति असम-बंगाल-उड़ीसाक तुलनामे किछु भिन्न रहल। एहि विन्दु पर आगाँ नेपालक प्रसंग क्रमे विशेष प्रकाश देबाक अवसर भेटत।

साहित्यिक अनुसरण-अनुकरण प्रक्रियाक केन्द्रविन्दु विद्यापतिए छलाह वा मिथिलाक अन्यो कविगण—ईहो एकटा विचारणीय प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि। निश्चये अपना युगमे गीत रचयिताक रूपमे विद्यापति मात्र नहि छलाह। अन्यान्यो कवि गण छलाह, जाहिमे कमसँ कम तीन गोट कवि-भवेश, अमृतकर एवं विष्णुपुरी एहन ज्ञात कवि थिकाह जे विद्यापतिक सद्यः समकालिक छलाह। हिनकहु लोकनिक गीत उपलब्ध अछि, आ एहन जे विद्यापतिक गीतमे मिझड़ा गेला पर बेकछायब कठिन।

विद्यापतिक पश्चात् जाहि मैथिली काव्य-सरणिक विस्तार-प्रस्तार भेल तकर आरम्भिक चरणमे विद्यापति ओ हुनक समकालिक तथा कतोक परवर्त्तीयो कवि-लोकनिक कृतिक समवायिक योगदान रहल। परन्तु कालक्रमे अन्य कविक आभा विद्यापतिक विराट काव्य-प्रतिभाक ज्योतिपुंजमे विलीन-क्षीण भऽ गेल तें परवर्त्ती मैथिली काव्य-परम्पराकें विद्यापतिक काव्य-परम्परा कहब असंगतो नहि। विद्यापतिक तिरोधानक पश्चात् मिथिला, बंगाल, उड़ीसा, असम एवं नेपालक कविगणक लेल विद्यापतिहिक काव्य प्रेरणादर्श बनल रहल तथा ओ लोकनि विद्यापतिक भाव, भाषा, भास, छन्द ओ उक्ति-भंगिमाक एकात्म भावें अनुकरण-अनुसरण करैत रहलाह। एहिमे मिथिलेतर प्रदेशक मैथिली गीत काव्य ओ नाट्य साहित्य-सम्पदा भेल : बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्य। बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्यक नेपालीय परम्परामे एकटा प्रमुख नाटककार ओ गीतकारक रूपमे जगत्प्रकाशमल्लक नाम अबैत छनि।

नेपालीय मैथिली साहित्य ओ जगत्प्रकाशमल्ल

बंगाल, उड़ीसा ओ असममे मैथिलीकें वैष्णव धर्मक व्यापक आधार प्राप्त भेलैक परन्तु एहिसँ भिन्न नेपालमे मैथिलीकें व्यापक राज्याश्रय प्राप्त भेलैक। एहि ठाम विद्यापति सहित मैथिलीक अन्यो कविहुक काव्य-नाटकादिक आदर भेल तथा हुनक भाव, भाषा, छन्द, उक्तिभंगिमाक गम्भीर अनुसरण-अनुकरण भेल। सोलहम, सतरहम ओ अठारहम—तीन शताब्दी धरि मैथिलीमे अजस्र साहित्यक अनवरत सर्जन होइत रहल।

वर्तमान नेपालक राजनीतिक सीमाक अन्तर्गत आलोच्य कालमे अनेक स्वतन्त्र राज्य सभ छल, जाहिमे अनेक राज्यमे मैथिली साहित्यक सम्पोषण-संवर्द्धनक प्रमाण अछि। नेपाल-परिसरमे अवस्थित नेपाल उपत्यकाक तीनू शाखा-राज्य भक्तपुर, काठमाण्डू ओ पाटन; मोरंग, मकमानी (मकवानपुर), भगवतीपुर, सप्तरी इत्यादिमे मैथिली सुसंस्कृत साहित्यिक भाषाक रूपमे समादृत छल। परन्तु एहि सबमे सर्वोच्च स्थान रहल नेपाल उपत्यकाक तीनू मल्लवंशीय राजा लोकनिक। ई राजा लोकनि कलाप्रेमी, गुणग्राही, सहृदय एवं साहित्यिक अभिरुचिसँ सम्पन्न छलाह। ई लोकनि मिथिलासँ निरन्तर सम्पर्क बनौने रहैत छलाह। मिथिलासँ संस्कृतक विविध शास्त्र ओ साहित्य विषयक ग्रंथ सभ संग्रह करबाय अपना संग्रहालयमे रखबबैत छलाह। मैथिल विद्वानकें आश्रय दऽ ओकर प्रतिलिपि करबबैत छलाह। तहिना मिथिलामे रचित मैथिली गीत ओ नाटककें सप्रयत्न अनबाय, प्रतिलिपि करबाय, ओकर सभक गान ओ अभिनय करबाय नेपालीय नागरजनकें आनन्द लाभक अवसर प्रदान करबबैत छलाह। स्वयं नेपालीय नागरजन सेहो मैथिली गीत ओ नाटकक प्रति आकृष्ट छलाह ओ अपनहुँ प्रयत्नपूर्वक मैथिली गीत-नाटकक संग्रह कऽ ओकार गान एवं अभिनयसँ रसग्रहण करैत छलाह। एतबय नहि, मिथिलासँ मैथिली कवि-नाटककारकें आमन्त्रित कऽ आश्रय दऽ साहित्य-रचनाक हेतु प्रोत्साहन दैत छलाह। यैह कारण अछि, जे नेपाल उपत्यकाक विभिन्न प्राचीन ग्रंथ-संग्रह सबमे मूल मिथिलाक्षरमे तथा नेवारी लिपिमे मिथिलाक संस्कृत ओ मैथिलीग्रन्थ सब सहस्र संख्यामे सुरक्षित अछि। एही संग्रह सबसँ मैथिलीक कतोक प्राचीन कविक साहित्यक अपन मूल रूपमे उद्धार सम्भव भऽ

सकल अछि।

नेपाल उपत्यका ने केवल मिथिलामे रचित मैथिली साहित्यकेँ संरक्षण देल अपितु दैशिक मैथिली-साहित्य-रचनाकेँ सेहो पूर्ण प्रोत्साहन देल। मल्लवंशीय राजा लोकनि स्वयं काव्य-नाटकक रचना-प्रवृत्तिसँ युक्त छलाह तथा अपना आश्रयमे नव-नव काव्य रचना करबाक हेतु साहित्यकारकेँ उपयुक्त साहाय्य ओ अवसर प्रदान करैत छलाह। तेँ नेपालक अधिकांश राजाक रचित वा हुनका शासनकालमे रचित गीत-नाटक सब विपुल परिमाणमे उपलब्ध अछि।

मिथिला ओ नेपालक सांस्कृतिक सम्बन्ध ओ सम्पर्क चिरन्तन कालसँ चल आबि रहल अछि। ई सम्बन्ध तहियासँ और प्रगाढ़ भऽ गेल जहिया मिथिलाक कर्णाट वंशक अन्तिम राजा हरसिंह देव (1324 ई० मे) मुहम्मद तुगलकसँ पराजित भऽ पार्वत्य प्रदेशक आश्रयण कऽ ओतऽ शासन स्थापित कयलनि। ओहि ठाम हरसिंहदेवक वंशधर लोकनिक शासन कोनो भूभागमे रहबाक उल्लेख भेटैत अछि। मिथिलाक संग नेपालक सांस्कृतिक सम्बन्ध जयस्थितिमल्ल नामक एकटा राजकुमारक वैवाहिक सम्बन्धसँ पूर्ण स्थायित्व प्राप्त कयलक।

जयस्थितिमल्लसँ पूर्वक मल्लवंशक इतिहास सर्वथा तिमिराच्छन्न ओ अस्पष्ट अछि। वास्तवमे मल्लवंशक क्रमबद्ध व्यवस्थित इतिहास जयस्थितिमल्लहिसँ उपलब्ध होइत अछि। 1354 ई० मे कर्णाट वंशजा राजल्लदेवी-संग विवाह भेलाक कारणे जयस्थितिमल्ल अत्यन्त शक्ति सम्पन्न भऽ गेलाह तथा नेपाल उपत्यकाक सार्वभौम शासकक रूपमे अपनाकेँ प्रतिष्ठित कयल। ओ मिथिला एवं अन्यत्रसँ पाँच जन पण्डित—कीर्त्तिनाथ उपाध्याय, रघुनाथझा, श्रीनाथ भट्ट, महीनाथ भट्ट तथा रामनाथझाकेँ आमन्त्रित कऽ नेपालक प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक विषयक व्यवस्थापन हेतु विधानक निर्माण कयलनि। वास्तविकता ई अछि जे हुनकहि द्वारा संघटित ओ प्रचालित समाज-व्यवस्था औखन धरि नेपालमे विद्यमान अछि। स्थितिमल्लक मृत्यु 1395 ई० मे भेल। हुनक पौत्र यक्षमल्ल (1408 ई०-1481 ई०) एकटा प्रभावशाली राजाक रूपमे दीर्घकालधरि शासन कयल परन्तु हुनक मृत्युक पश्चात् नेपाल राज्य हुनक पुत्र सबमे विभक्त भऽ गेल। ज्येष्ठपुत्र रायमल्ल (1482-1505) भक्तपुर(भातगाँव)क राजा भेलाह। दोसर पुत्र रत्नमल्ल (1482-1520) कान्तिपुर(काठमाण्डू)क तथा रणमल्ल बणिकपुर (बानेपा)क शाखा राज्य स्थापित कयल। एहिमे बानेपा बेसी दिन धरि स्वतन्त्र नहि रहि सकल तथा ओ भक्तपुरहिमे अन्तर्भुक्त भऽ गेल।

कान्तिपुर (काठमाण्डू)क राजा रत्नमल्लक छठम पीढ़ीमे उत्पन्न शिवसिंहक राजत्व 1578 ई० सँ 1620 ई० धरि रहल। हिनक जीवने कालमे हिनक एकमात्र पुत्र हरिहरसिंहक मृत्यु भऽ गेल छलनि। अतः शिवसिंहक मृत्युक पश्चात् ज्येष्ठ पौत्र लक्ष्मीनरसिंह मल्ल कान्तिपुरक राजा भेलाह आ हुनक कनिष्ठ पौत्र

सिद्धि नरसिंहमल्ल ललितपुर(पाटन)क शासक बनलाह। अतः 1620 ई० सँ मल्लवंशक तेसर शाखाराज्य ललितपुरक श्रीगणेश भेल। सिद्धिनरसिंहमल्ल स्वतंत्र राजाक रूपमे 1661 ई० धरि शासन कयल तथा अपन पुत्र श्रीनिवासमल्लक राज्याभिषेक कऽ स्वयं विरक्त भऽ गेलाह। एही श्रीनिवासमल्लक संग हमर विवेच्य पुरुष जगत्प्रकाशमल्लक योगायोग विशेष रूपसँ रहल। पाटन राज्यसँ पाछाँ एकटा छोट शाखा चम्पानगर (चाँपागाँव) स्थापित भेल जे बड़ अल्पकालेधरि स्वतन्त्र रहि सकल।

कान्तिपुरमे लक्ष्मीनरसिंहमल्ल 1641 ई० धरि शासन कयल परन्तु निरन्तर अपन महत्त्वाकांक्षी पुत्र प्रतापमल्लसँ आन्तरिक संघर्ष होइत रहलनि। अन्ततः प्रतापमल्ल अपन पिताक जीवनहि कालमे राजसत्ता छीनि कऽ शासक बनि गेलाह आ 1674 ई० धरि शासन करैत रहलाह। प्रतापमल्ल लड़ाकू स्वभावक छलाह तेँ निरन्तर अपन पड़ोसी राज्यक संग युद्ध ओ भयक वातावरण बनौने रहलाह। कहियो पाटन पर आक्रमण करैत छलाह तँ कहियो भक्तपुर पर। भक्तपुरक जगत्प्रकाशमल्लक संग हुनक संघर्ष चिरकाल धरि चलैत रहल।

भक्तपुरक राज्य यक्षमल्लक ज्येष्ठ पुत्र रायमल्लकेँ भेटल छलनि तेँ भक्तपुर राज्य एवं एकर राजवंशकेँ विशेष प्रतिष्ठा रहलैक। रायमल्लक प्रपौत्र विश्वमल्ल (1547-1560) तेरह वर्षमात्र शासन कयल। हिनक मृत्युक समय हिनक दुइ गोट पुत्र त्रैलोक्यमल्ल तथा त्रिभुवनमल्ल प्रायः शैशवमे छलथिन तेँ विश्वमल्लक पत्नी गंगादेवी अपन दुहू पुत्रकेँ संयुक्त राजा बनाय शासन करैत रहलीह। हिनकालोकनिक शासन 1613 ई० धरि चलैत रहल। एहि कालसँ नेपालमे मैथिली गीत ओ नाटकक रचनाक सुनिश्चित प्रमाण भेटऽ लगैत अछि।

त्रैलोक्यमल्ल जेँ ज्येष्ठ छलाह तेँ सार्वभौम राजत्व हिनकहि प्राप्त छलनि। अतः हिनक पुत्र जगज्ज्योतिर्म्मल्ल पश्चात् राज्यक उत्तराधिकारी भेलाह। इतिहासकार लोकनि हिनक शासन काल 1637 ई० धरि मानैत छथि। ई अत्यन्त कलाप्रिय राजा छलाह। शास्त्र, साहित्य, संगीत एवं कलाक अभ्युन्नति हिनका समयमे खूब भेल। मैथिली साहित्यमे हिनक योगदान विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि जाहि सम्बन्धमे आगाँ विचार करबाक अवसर भेटत।

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक पुत्र नरेशमल्ल (1637 ई०-1643 ई०) अल्पसमय धरि शासन कयलनि। हिनका पर प्रतापमल्ल आक्रमण कऽ भक्तपुरक किछु भागकेँ छीनि लेल। हिनक समयमे साहित्यिक गतिविधि शून्ये रहल। हिनक मृत्युक पश्चात् हिनक पुत्र जगत्प्रकाशमल्ल शैशवमे राज्यासीन भेलाह। हिनक शासनकाल 1643 ई० सँ 1673 ई० धरि रहल। नेपालक इतिहासकार सूर्यविक्रमज्ञवाली जगत्प्रकाशमल्लकेँ जगज्ज्योतिर्मल्लक पुत्र ओ उत्तराधिकारी मानैत हिनका

1631 ई० मे राज्यासीन भेल मानैत छथि ।[1] परन्तु दिल्लीरमणरेग्मी जगत्प्रकाशमल्लकेँ जगज्ज्योतिर्मल्लक पुत्र नहि अपितु पौत्र मानैत छथि तथा दुहूक मध्य नरेशमल्लक अस्तित्व सिद्ध करैत हुनक छओ-सात वर्षक शासन कालक विवरण दैत छथि ।[2] वास्तवमे रेग्मी महोदयक कथन अत्यन्त प्रमाण-पुष्ट अछि । जगत्प्रकाशमल्ल अपन नाटक 'प्रभावती हरण' तथा 'पारिजातहरण' मे अपनाकेँ नरेशमल्लक पुत्र कहि कऽ उल्लेख कयने छथि ।

1637 ई० सँ 1643 ई०क अवधिमे नरेशमल्लक शासन-सूचक कतोक शिलालेख उपलब्ध अछि । अतः जगत्प्रकाशमल्ल जगज्ज्योतिर्मल्लक पुत्र छलाह तथा हुनक अव्यवहित पश्चात् राजत्व कयल—से धारणा निर्मूल ओ अशुद्ध अछि ।

जगत्प्रकाशमल्लक जीवन ओ घटना चक्रक विवरण स्वतन्त्रे रूपसँ विवेच्य अछि । परन्तु जगत्प्रकाशमल्लक पश्चात् शासनाधिकार सरलतापूर्वक एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि अन्तरित होइत रहल । जगत्प्रकाशमल्लक पुत्र जयजितामित्रमल्ल (1673-1696), पौत्र भूपतीन्द्रमल्ल (1696-1722) एवं प्रपौत्र रणजितमल्ल (1722-1769) सुयोग्य राजा भेलाह तथा साहित्य-संगीत-सम्पोषणक कौलिक परम्परा ओ मर्यादाक कुशलतापूर्वक निर्वाह करैत रहलाह ।

भक्तपुर, कान्तिपुर ओ पाटनमे; केवल भक्तपुरेमे शान्तिपूर्वक सत्ताहस्तान्तरणक प्रक्रिया देखल जाइत अछि । कान्तिपुर ओ पाटनमे परवर्ती कालमे बड़ कमे राजा भेलाह जे दीर्घकाल धरि शासन कयल । अधिकांश राजा अल्पवयस्क, अल्पकालिक ओ दुर्बल होइत गेलाह । छीना-झपटी ओ दुरभिसन्धिक पृष्ठभूमि निरन्तर विद्यमान रहल । संगहि तीनू शाखा राज्यकेँ पारस्परिक वैमनस्य, शंका ओ भय आक्रान्त कयने रहैत छल । तीनू राज्यमे एकता ओ सहयोगक अभाव छल ।

एहने राजनीतिक पृष्ठभूमिमे अठारहम शताब्दीक तेसर चरणमे गोरखा प्रदेशक स्थानीय शासक पृथ्वीनारायणशाहक उदय एकटा प्रचण्ड शक्तिक रूपमे भेल । पृथ्वीनारायण साहसी योद्धा, राजनीति, कूटनीति ओ रणनीतिमे कुशल, अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति छलाह । ओ क्रमशः छोट-छोट राज्यकेँ जीति अपन राज्यक विस्तार करैत गेलाह । अन्ततः नेपाल उपत्यकाक तीनू मल्लराज्यक घेराबन्दी कऽ देल । साम, दाम, दण्ड, भेद नीतिक अनुसरण कऽ तीनू राज्यकेँ दुर्बल कऽ 1768 ई० मे पाटनक अन्तिम शासक तेजनरसिंह मल्ल तथा काठमाण्डूक

1. नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास—सूर्यविक्रमज्ञवाली, रायल नेपाल एकेडमी, काठमाण्डू, विक्रम सम्वत् 2019, पृ० 105
2. मेडियावल नेपाल, पार्ट-2, डी० आर० रेग्मी, फर्मा के० एल० मुखोपाध्याय, कलकत्ता, 1966, पृ० 218-20

जयप्रकाशमल्लकेँ युद्धमे पराजित कऽ दुहू राज्य पर अधिकार कऽ लेल । अन्ततः एक-सवा वर्षक बाद 1769 मे भक्तपुरक रणजितमल्लकेँ सेहो कठोर संघर्षक बादो पराजित भऽ वाराणसी पलायन करऽ पड़लनि । आ एहि तरहेँ नेपाल उपत्यकाक मल्लराजवंशक इतिश्री भऽ गेल ।

जगत्प्रकाशमल्ल नेपालक मैथिली साहित्यक विकासक्रमक मध्यवर्त्ती बिन्दु थिकाह जे अपन पूर्ववर्त्ती काव्यपरम्पराकेँ आत्मसात कयल तथा परवर्त्ती साहित्य-प्रवाहकेँ सशक्त ओ विस्तृत कयल ।

जगत्प्रकाशमल्लक परिवार ओ परिजन

जगत्प्रकाशमल्ल शैशवेमे मातृ-पितृ विहीन भऽ गेलाह। भ्राता-भगिनी विहीन सेहो छलाह। ओ अपन जीवन-यात्रा स्नेहाश्रय-विहीन ठुगर राजाक रूपमे आरम्भ कयलनि। सोलह-सतरह वर्षक अवस्थामे विवाह भेलनि। हिनक प्रथम नाटक **प्रभावती** हरणक प्रस्तावनामे दुइ गोट पत्नीक नाम-पद्मावती ओ चन्द्रावती देल गेल अछि। शिलालेख सबमे एक गोट और पत्नी अन्नपूर्णा लक्ष्मीक उल्लेख भेटैत अछि जे चन्द्रशेखरसिंह नामक मित्रक प्रयत्नसँ भेटल छलथिन। अन्नपूर्णा एकटा मन्दिर बनवाय ओहिमे भवानी-शङ्करक मूर्ति स्थापित कयने छलीह। एहि मन्दिरक शिलालेखमे जगत्प्रकाश अन्नपूर्णा लक्ष्मीक सौन्दर्य ओ शालीनताक मनोरम वर्णन करैत **वरामात्याग्रणी** चन्द्रशेखरसिंहक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कयने छथि, जनिका द्वारा अन्नपूर्णा सन गृहिणी प्राप्त भेलथिन। अनुमान होइत अछि जे अन्नपूर्णालक्ष्मी हिनक पट्टराजमहिषी छलथिन। एहि अन्नपूर्णाक उल्लेख 'मदन चरित्र' नाटकमे सेहो भेल अछि—

'अन्नपूरणा पति जगत प्रकाश नृप
अभय कय उधारह मोही॥'

जगत्प्रकाशमल्लकेँ जितामित्रमल्ल ओ उग्रमल्ल नामक दुइ गोट पुत्र छलथिन। दुहू सोदर छलाह वा वैमात्रेय से स्पष्ट नहि अछि। परन्तु दुहू भ्रातामे भ्रातृ-स्नेह अखण्ड रहनि तकर पाठ आरम्भेसँ दैत रहलथिन। यैह कारण अछि जे जितामित्र ओ उग्रमल्लमे आजीवन कहियो मनोमालिन्य नहि भेलनि एवं राम-लक्ष्मण जकाँ सोदर-स्नेह अक्षुण्ण रहलनि। वास्तवमे जीवनक जाहि-जाहि विन्दु पर जगत्प्रकाशकेँ अपना अभावक बोध होइत रहलनि तकरा अपन पुत्र द्वयमे पूर्ण करवाक चेष्टा कयलनि। जितामित्र मल्लक प्रशिक्षण हेतु जगत्प्रकाश सतत सचेष्ट रहैत छलाह। अपन राजकीय नीति निर्धारणमे जितामित्रकेँ संग रखैत छलथिन। हुनक शिक्षा-दीक्षाक हेतु भागिरामजू ओ भायिरामजू नामक अनुभवी व्यक्तिकेँ नियुक्त कयलनि जे पश्चात् जितामित्रक महामात्यक पद ग्रहण कयलनि। जितामित्र किशोरावस्थामे छलाह तखने हुनका राज्यशासनक किछु-किछु भार देल जाय

लगलनि। जगत्प्रकाशक मृत्युसँ पूर्व जितामित्रक आदेशसँ अनेक नाटकक अभिनय होयबाक प्रमाण भेटैत अछि। जितामित्र क्रमशः अभिनव राजाक रूपमे प्रशस्ति पाबऽ लगलाह। जितामित्रक आदेशसँ अभिनीत नाटकक राजवर्णनामे वा भरत-वाक्यमे जितामित्रक प्रशस्ति अछि जाहिमे हुनका अभिनव राय कहल गेल अछि। प्रमाण स्वरूप उग्रमल्लक उपनयनक अवसर पर जितामित्रक आदेशसँ 1670 ई०-मे अभिनीत नाटक **मदन चरित्रक** राजवर्णनाक पंक्ति उपस्थित कयल जा सकैछ—

नृपति जितामित्र नवराय आवे।
एकरा बले अरि कातर फल पावे॥

जगत्प्रकाशमल्लक कतोक नाटकक अभिनय जितामित्रहिक आदेशसँ भेल छल, तकर प्रमाण अछि। लगैत अछि जेना जगत्प्रकाशकेँ अपन अल्पायुताक आभास पूर्वहिसँ छलनि। प्राय: तेँ यद्यपि अपनहु वयस अधिक नहि भेल छलनि, युवत्वसँ प्रौढ़त्व दिस अग्रसर भैए रहल छलाह, तथापि पाटनक सिद्धिनरसिंहमल्लक अनुसरण करैत अल्पवयस्क महाराजकुमार जयजितामित्रमल्लकेँ राजत्वमण्डित कऽ देलनि तथा मृत्युसँ दस वर्ष पूर्वहि 1663 ई०मे जितामित्रक नामसँ एकटा मुद्राक निर्माण करा देलनि। ई कृत्य जगत्प्रकाशक दूरदर्शिताक प्रमाण थिक जे कोनो प्रौढ़ बुद्धिक व्यक्ति कऽ सकैत अछि। एकर सुपरिणाम भेल जे जखन जगत्प्रकाशक आकस्मिक मृत्यु भेलनि तखन जितामित्र किशोरावस्थासँ युवावस्थामे प्रवेशे कऽ रहल छलाह, तथापि राज्य-शासनक दायित्वकेँ कुशलतापूर्वक सम्हारि लेलनि तथा नेपाल उपत्यकाक तीनू शाखा-राज्यमे अपनाकेँ सबसँ प्रपत्तिवान् शासकक रूपमे स्थापित कऽ लेलनि।

चन्द्रशेखरसिंह एवं जगच्चन्द्र

जगत्प्रकाशमल्लक संग दुइ गोट नाम चन्द्रशेखरसिंह एवं जगच्चन्द्रक उल्लेख बारंबार देखल जाइत अछि। ई दुनू नाम जगत्प्रकाशक नाटक, गीत एवं शिलालेख सबमे भेटैत अछि। परन्तु समकालिक ऐतिहासिक विवरण ओ अभिलेख सबमे एहि दुनू व्यक्तिक कोनो परिचय वा चर्चा नहि भेटैत अछि। अत: दुहूक यथार्थ परिचय तथा जगत्प्रकाशक संग सम्बन्ध-सूत्र अज्ञात अछि। किन्तु हुनक जीवनमे चन्द्र-शेखरसिंह ओ जगच्चन्द्रक स्थान अवश्ये महत्वपूर्ण छल।

चन्द्रशेखरसिंह जगत्प्रकाशमल्लक अन्तरंग जीवनमे जेना व्याप्त भऽ गेल छल-थिन से हुनक व्यक्तित्वक वैशिष्ट्य प्रकट करैत अछि। जगत्प्रकाशक शिलालेख, गीत, नाटक ओ मुद्रा पर्यन्तमे चन्द्रशेखरक बेर-बेर उल्लेख विभिन्न भाव-भंगिमाक संग भेल अछि। नेपाली इतिहासकार चन्द्रशेखरक सम्बन्धमे सर्वथा मौन छथि।

ओहि कालक वंशावली ओ अन्यान्य आनुषंगिक अभिलेखमे सेहो कतहु हिनक चर्चा नहि भेटैत अछि। मुदा जगत्प्रकाशक तीन गोट शिलालेखमे चन्द्रशेखर चर्चित छथि। एकटा शिलालेख, जकर चर्चा ऊपर अन्नपूर्णाक प्रसंगमे भेल अछि, ताहिमे हिनका स्वप्राणोपम चन्द्रशेखर वरामात्याग्रणीक विशेषण दैत जगत्प्रकाशक आत्मोक्ति छनि जे हुनका अन्नपूर्णा सन धर्मपत्नी हुनकहिं द्वारा प्राप्त भेलथिन। 1662 ई०क एकटा सुक्की मोहर (¼ टाका) भेटल अछि जाहिमे एक पीठ पर जगत्प्रकाशक नाम तथा दोसर पीठपर चन्द्रशेखरक नाम अंकित छनि।

मलयगन्धिनी, नलीयनाटक, परिजातहरण ओ **मदन चरित्र** नाटकक गीत तथा गीत-संग्रह सभक बहुशः गीत सभक भणिताक चरणमे जगत्प्रकाश, सहयोगी, रसबोद्धा, प्राण, हृदयहार, भाइ एवं अन्यान्य भावाभिव्यंजक उक्तिक संग चन्द्रशेखरक उल्लेख कयने छथि। दैवदुर्विपाकात् जगत्प्रकाशकें चन्द्रशेखरसँ वियोग भऽ गेलनि। वियोग भेलापर हुनक स्मृतिमे रचित **गीतपंचक** नामक गीत-संग्रहमे जगत्प्रकाश कहने छथि—

> चन्द्रशेखरसिंहस्य गुणंज्ञात्वा प्रकाश्यते।
> गीत श्लोकादि भाषाभिर्लिखितं गीतपंचकम्॥

एकर अन्तिम पुष्पिका-वाक्यमे कहल गेल अछि—

इति श्रीगीतपंचके चन्द्रशेखरवियोगे श्रीश्रीजगत्प्रकाश कृते अष्टम याम वर्ण्णना समाप्ता।

वियोगजन्य भाव-विह्वलताक अभिव्यक्ति कवि जगत्प्रकाश निम्नलिखित रूपमे कयने छथि—

> भणयि प्रकाशनृप अपनुक वेदन,
> हर जनु हमरा पेम।
> चांदशेखरसिंह हित मोर तोह भाय,
> कत कर सेवा नियेम॥

चन्द्रशेखरसिंहक संग जगत्प्रकाशक भ्रातृवत् सम्बन्ध छलनि तथा एक प्राण दू देह छलाह। एहि बातकें ओ कतोक ठाम व्यक्त कयलनि अछि। **उषाहरणक** अन्तमे भगवती-प्रार्थनामे कहल गेल अछि जे दुहू भाइक कायाकें भगवती अपना चरणक निकट राखथि—

> जगतप्रकाश आस कएल तोहर चांदशेखर दुहु भाय।
> जगत जननि पद हेठहि राखह दुहु जनक दुहु काय॥

चन्द्रशेखरक प्रति जगत्प्रकाशमल्लक अभिव्यक्त किछु और भावखण्ड देखल

जा सकैत अछि—

1. चांदशेखरसिंह मोर कंठहार।
2. जगतप्रकाश चांदशेखर भाव।
3. चांदशेखरसिंह प्रेमक भंडार।
4. चांदशेखरसिंह मोर निसि दिन साथ।
5. चांदशेखरसिंह पावब सुजागे।
6. जगतप्रकाश भन चांदशेखरसिंह
   ई दुहु एकहि पराने।
7. चांदशेखरसिंह तुअ तुल नहि जन
   मोरि हृदि तोहहि बिराजे।
8. तेन साकं मया देवी चरणं प्राप्यते खलु।
   चन्द्रशेखरसिंहेन प्रकाशेन च सर्वदा॥

एहि उद्धरणक आलोकमे चन्द्रशेखरक व्यक्तित्व ओ जगत्प्रकाशक जीवनमे हुनक स्थान ओ महत्त्वक विषयमे विशेष कहबाक प्रयोजन नहि रहि जाइत अछि।

चन्द्रशेखरसिंह जे क्यो रहल होथि, जगत्प्रकाशक संग जे कोनो औपचारिक सम्बन्ध रहल होनि, जगत्प्रकाशक जे कोनो उपकार कयने होथुन मुदा ओ जगत्प्रकाशक तन-मन-प्राणमे व्याप्त भऽ कऽ हुनक काव्यक प्रेरणा-स्रोत बनि गेल छलाह। प्रतिदान स्वरूप कवि जगत्प्रकाश अपन एहि **परम बन्धुकें** अमर बना देलनि।

चन्द्रशेखरहि जकाँ जगतचन्द्र सेहो जगत्प्रकाशक जीवनकालक ओझरायल ग्रन्थि सिद्ध भेल छथि। जगत्प्रकाशक कतोक नाटकमे जगतचन्द्रक गीत सब सम्मिलित अछि। कतोक नाटक एहन लगैत अछि जेना जगतचन्द्रे ओकर रचयिता होथि। **उषाहरण, मूलदेव-शशिदेवोपाख्यान, माधव-मालति, मदन-चरित्र** तथा **महाभारत नाटकमे** जगतचन्द्र भणित गीत सब अछि। किछुमे कम, किछुमे अधिक। तीन गोट शिलालेख सेहो हिनका नामसँ भेटैत अछि जाहिमे दुइ गोट तलेजू भगवतीकें समर्पित अछि। एहि दुहूमे सँ एकमे, गीत जगत्प्रकाशक छनि तथा विवरणमे जगतचन्द्रक नाम छनि। दोसर शिलालेखमे दूटा गीत अछि-एकटा नेवारीमे, दोसर मैथिलीमे। नेवारी गीतक भणितामे जगतचन्दन नाम अछि। मैथिली गीतक भणितामे जगतचन्द्र नृप ओ जगत दुनू नामक प्रयोग भेल अछि जाहिमे जगत पद निश्चिते जगत्प्रकाश दिस संकेत करैत अछि।

जगतचन्द्रक समस्त नाटक भक्तपुरहिमे रचित भेल जाहिमे जगत्प्रकाशक गीत सब सेहो अछि तथा जगत्प्रकाश, जितामित्र ओ उग्रमल्लक चर्चा अछि। हुनक नामांकित तीनू शिलालेख भक्तपुरहिक परिसरमे उपलब्ध अछि। शिलालेखमे जाहि रूपमे **गोसाउनिक** स्तुति कयल गेल अछि से भक्तपुरक कुलदेवी तलेजू

भगवती दिस संकेत करैत अछि। अत: सहज अनुमान होइछ जे जगच्चन्द्रनृप भक्तपुरक मल्लपरिवारक क्यौ थिकाह् जनिका राजत्व प्राप्त छलनि। परन्तु ओहि कालक इतिहासमे भक्तपुरक कोन कथा जे नेपाल उपत्यकेमे कोनो जगच्चन्द्रनृपक अस्तित्व नहि भेटैत अछि। भक्तपुरमे जगत्प्रकाश राजा छलाह् तखन हुनकहि संग जगच्चन्द्रहुक नृप विशेषण संग उल्लेख करबामे कोन संगति अछि? तखन जगच्चन्द्र के छलाह् तथा जगत्प्रकाश संग हुनक केहन सम्बन्ध छलनि से प्रश्न ओझरा कऽ रहि जाइत अछि।

पूर्वमे एहि पंक्तिक लेखकक धारणा छल जे जगच्चन्द्र एकटा स्वतन्त्र कवि छलाह् जे जगत्प्रकाश ओ जितामित्रक आश्रयमे छलाह्।[1] एमहर प० सुन्दरझा शास्त्री 'फूलपात' नामक पत्रिकामे प्रकाशित जगत्प्रकाशमल्लक 'नानार्थ देव-देवी गीत संग्रह्'क भूमिकामे एकटा नव व्याख्या देलनि अछि। हुनक मन्तव्य छनि जे—'जगत्प्रकाशक पूर्व पद **जगत** एवं चन्द्रशेखरक पूर्व पद **चन्द्र**कें जोड़ि **जगच्चन्द्र पद** बनाओल गेल अछि।' एहि क्रममे ओ एक गोट युगलमूर्ति दिस ध्यान आकृष्ट करौलनि अछि जे—'भक्तपुर स्थित भैरवमन्दिरमे जगच्चन्द्रक ढलौट कयल एक आसन पर दू मूर्ति पौल जाइछ। एक मूर्ति नम्हर परन्तु कम आयुक एवं डाँरमे बान्हल पेटीक छोर ठेहुन धरि लटकल तथा दोसर मूर्ति छोट परन्तु मध्यवयस्क, कपारमे त्रिपुण्ड चानन एवं गर्दनिमे आभूषण विशेष पहिरने। ई निस्सन्देह जे त्रिपुण्डधारी मूर्ति चन्द्रशेखरसिंहक छनि।' शास्त्रीजी पहिल मूर्तिक प्रसंग मौन छथि। परन्तु विवरण देखि अनुमान कयल जा सकैत अछि जे ओ मूर्ति जगत्प्रकाशक थिकनि अर्थात् जगत् (प्रकाश) चन्द्र (शेखर) क युगल मूर्ति थिकनि। शास्त्रीजी चन्द्रशेखरक परिचय क्रममे अनुमान कयने छथि जे ओ जगत्प्रकाशक जेठसार छलथिन आ एहि मूर्तिक आधार पर हुनका मैथिल ब्राह्मण मानैत छथि। परन्तु क्षत्रिय राजाक जेठसार ब्राह्मण होथि तकर असम्भाव्यता पर शास्त्रीजी ध्यान नहि देलनि। जगत्प्रकाश अनेक ठाम चन्द्रशेखरकें **भाय कहने** छथि। एहि आधार पर एकटा अनुमान प्रस्तावित कयल जा सकैत अछि। जगज्ज्योतिर्म्मल्लक एक पुत्र शशिशेखर सिंह् छलथिन जे कवियो छलथिन आ जनिक एकगोट गीत **हरगौरी विवाहनाटकमे** उद्धृत अछि। संभव अछि जे चन्द्रशेखर सिंह् हुनकहि पुत्र रहल होथि। नामसाम्यसँ एहि अनुमानकें बल भेटैत अछि। से भेला पर चन्द्रशेखरसिंह् जगत्प्रकाशक पितियौत भाइ भेलथिन। ई सर्वथा सम्भव जे स्नेह-सुखक स्रोतसँ विरहित जगत्प्रकाश हुनकहि स्नेहक छाया प्राप्त कयने होथि तथा हुनका आमात्यपदसँ

---

1. मैथिली शैवसाहित्य—डा० रामदेवझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1979, पृ० 300-301

सम्मानित कयने होथिन तथा ओ घटकैती कऽ अन्नपूर्णालक्ष्मीसँ विवाह् करौने होथिन।

जगत्प्रकाशक बहुतो उक्तिमे हुनक चन्द्रशेखरसिंहक संग अविच्छेद्य एकात्मभाव अभिव्यक्त भेल अछि—

1. जगत्चन्द्र दुहु एकहि जिव दुय परम पद दुहु पावे।
2. जगत्प्रकाश नृप चांदशेखर सिह् जानह दुहु जन एके।
3. जगत्प्रकाश चांदशेखर भाव।

उषाहरण नाटक जाहिमे जगत्प्रकाशक अतिरिक्त जगच्चन्द्रोक भणिताक गीत सब अछि आ जकर रचयिता जगत्प्रकाश कहल गेल छथि, तकर एकटा गीतक भणितामे कहल गेल अछि—

जग मंह जगतचन्द्र भाए प्रकाश किअ गुण विचार।
देखि पद पंकज प्रणवि कए चिन्तय परलोक विचार।

एकर भाव थैह् जे संसारमे जगत्चन्द्र भऽ कऽ (जगत)प्रकाश गुण विचार कयल तथा आराध्यक पद-पंकज देखि प्रणाम कऽ परलोकक सम्बन्धमे चिन्तन कयल।

मदन चरित्रमे एकटा गीतक भणिता निम्नरूपक भेटैत अछि—

जगतचन्द्र कहि अबहि विदित सो पिरितिहि बस सब देहि।
अन्नपूरणापति जगतप्रकाश नृप भल कय उधारह् मोहि॥

ऊपर उद्धृत उक्ति सबसँ प० सुन्दरझा शास्त्रीक द्वारा प्रस्तुत परिकल्पनाक सम्पुष्टि होइत अछि जे जगच्चन्द्र वास्तवमे जगत(प्रकाश) ओ चन्द(शेखर)क संयुक्त नाम थिक जकरा जगत्प्रकाश काव्य-रचनाक क्षेत्रमे धारण कयलनि। ई मानि लेला पर 'नृपचन्द्रप्रकाश' नामसँ प्राप्त 'गीताष्टक' नामक संग्रह् पर विचार अपेक्षित। एह् नामक कविकें एहि पाँतीक लेखक जगत्प्रकाशसँ भिन्न व्यक्ति मानने छलाह्। परन्तु तथ्य सबकें देखैत नृपचन्द्रप्रकाशमे सेहो ई व्याख्या स्वीकार कयल जा सकैत अछि जे चन्द्रशेखरक पूर्व पद ओ जगत्प्रकाशक उत्तर पदकें जोड़ि 'चन्द्रप्रकाश' पद बनाओल गेल अछि। **गीताष्टक, भाषागीत** नामक एकगोट बृहत् गीत संग्रहमे अन्तर्भुक्त अछि। गीताष्टकमे भक्तिभाव मात्रक गीत सब अछि जाहिमे तीन खण्ड अछि—**विष्णुभाव, सदाशिवभाव** तथा **दशावतार कीर्त्तन भाव**।

प्रश्न उठैत अछि जे जगत्प्रकाशकें जगच्चन्द्र वा चन्द्रप्रकाश सन संयुक्त नाम धारण करबाक प्रयोजन की छल? उत्तर एकर सरल अछि। चन्द्रशेखरक संग प्रगाढ़ आत्मीयता छलनि। अकस्मात् हुनक मृत्यु भऽ गेलनि। काठमाण्डूक संग भेल

दीर्घकालिक युद्धमे जगत्प्रकाशक एकगोट प्रमुख अमात्य निहत भेल छलथिन। सम्भव अछि जे ओ अमात्य चन्द्रशेखरे रहल होथि। चन्द्रशेखर-वियोगसँ विह्वल भऽ **गीत-पंचकक** रचना कयल तथा चन्द्रशेखरक गुण-बखान करैत अपन मानसिक पीड़ाकेँ व्यक्त कयल। प्रायः एहिसँ सन्तोष नहि भेलनि तँ अपन आत्मीय बन्धुकेँ अमर करबाक हेतु, हुनका **प्रति कृतज्ञता** ज्ञापित करबाक हेतु, चिर-संगतिक अनुभूतिक हेतु तथा आत्मतोषार्थ चन्द्रशेखरक नामक पूर्व पदकेँ अपन नामक उत्तर पद बनाय जगत्-चन्द्र बनि गेलाह। प्रायः अपन बन्धुकेँ और उच्च स्थान देबाक मनोभावसँ चन्द्रशेखरक पूर्वपद ओ अपन नामक उत्तर पदकेँ जोड़ि 'चन्द्रप्रकाश' नाम ग्रहण कयलनि। मुदा लगैत अछि जेना एहि नामक उपयोग अधिक दिन धरि नहि कऽ सकलाह। यदि से, तँ **गीताष्टक** जगत्प्रकाशक अन्तिम रचना मानल जायत।

उपर्युक्त विश्लेषण यदि सत्य तँ एहिसँ जगत्प्रकाशक मित्र-निष्ठा ओ भावुक कवि-हृदयक भाव-प्रवणताक परिचय भेटैत अछि जे साहित्य-संसारक एकटा अद्वितीय घटना थिक।

एहि प्रसंगक अन्त एहि विचारक संग कयल जाइत अछि जे तथापि एहि प्रसंगमे और गम्भीर अनुसंधान ओ तथ्य संग्रहक अपेक्षा अछि जाहि आधार पर भविष्यमे सुनिश्चित निर्णय ओ निष्कर्ष निष्पादित भऽ सकय।

वंशमणिउपाध्याय ओ कृष्णदास

जगत्प्रकाशक प्रथम नाटक **प्रभावतीहरणक** प्रस्तावनामे वंशमणिक भणितायुक्त **राजवर्णना** गीत देखल जाइत अछि। नेपालीय मैथिलीनाटकक प्रस्तावनामे **राजवर्णना** गीत ओ **देशवर्णना** गीत अनिवार्य रूपेँ रहैत छल। **राजवर्णनामे** आदेष्टा राजा ओ ओकर वंशक प्रशस्ति तथा **देशवर्णनामे** ओहि देश एवं नगरक वर्णन रहैत छल जतऽ ओ नाटक रचित ओ अभिनीत होइत छल। राजाद्वारा रचित नाटकमे आत्मप्रशंसाक दोषसँ बचबाक लेल अन्य कवि द्वारा रचित प्रशस्ति-गीतक समावेश कऽ देल जाइत छल। एही परिपाटीक अनुसरण करैत प्रभावती हरणमे वंशमणिक गीतक समावेश भेल अछि।

वंशमणि उपाध्याय मध्यकालिक मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध कवि ओ नाटककार छलाह। बिल्वपंचक (बेलौंचए) मूलक मैथिल ब्राह्मण वंशमणि उपाध्याय जगत्प्रकाशमल्लक पितामह जगज्ज्योतिर्म्मल्लक साहित्य-सचिव छलाह। हुनक साहित्यिक क्रियाकलाप ओ शास्त्रीय विचार-विवेचनमे वंशमणि महत्त्वपूर्ण योगदान कयने छलथिन। जगज्ज्योतिर्म्मल्लक मृत्युक पश्चात् नरेशमल्लक शासन कालमे भक्तपुरमे साहित्यिक विचार-चर्चा अवरुद्ध भऽ गेल तँ ओ कान्तिपुरक प्रतापमल्लक आश्रयमे चल गेलाह। ओतऽ शक संवत् 1572 (1650 ई०)मे

गीतदिगम्बर नामक प्रसिद्ध नाटकक रचना कयल। ओतहि **मुदित मदालसा** नाटक सेहो रचलनि। जखन जगत्प्रकाश राजाक रूपमे बोधगर भेलाह ओ काव्य-नाटकादिकेँ प्रश्रय देबऽ लगलाह तँ वंशमणि पुनः भक्तपुर चल अयलाह। मुदा लगैत अछि जेना एहि समय धरि ओ वृद्ध भऽ गेल छलाह, कारण जगत्प्रकाशक आश्रयमे हुनक अन्य कोनो रचनाक संकेत नहि भेटैत अछि।

जगत्प्रकाशक **रामायण** नामक नाटकमे कृष्णदास कविक राजवर्णनाक समावेश भेल अछि। परन्तु एहि कृष्णदासक प्रसंग अधिक किछु ज्ञात नहि अछि।

साहित्य-संगीत-कलाक क्षेत्रमे जगत्प्रकाशमल्लक योगदान

जगत्प्रकाशमल्लकें कला ओ साहित्यक प्रति विशेष अभिरुचि छलनि। हुनक जीवन-वृत्तान्तमे देखब जे जीवनक अवधि बड़ थोड़ भेटलनि। बाल्यकालेसँ संघर्ष ओ आत्मरक्षामे हुनक विशेष समय ओ शक्ति लगैत रहलनि। कोनो आत्मीय जनक पथनिर्देशन प्राप्त नहि भऽ सकलनि। तथापि ओहनो प्रतिकूल परिस्थितिमे कला ओ साहित्यक प्रति अनुराग ओ आसक्ति उत्पन्न भेलनि आ तकरा मूर्तरूप देबाक प्रयत्न करैत रहलाह। किशोरावस्थहिमे साहित्य-रचनाक प्रवृत्ति जाग्रत भेलनि आ चौतिसे वर्षक वयस धरिमे प्रचुर संख्यामे गीत ओ नाटकक रचना कयलनि। एकरा पाछाँ अवश्ये हुनक कौलिक संस्कार ओ वैयक्तिक प्रतिभाक भूमिका रहल होयत।

वास्तुकलाक प्रति जगत्प्रकाशमल्लक जे अनुराग छल तकर प्रमाण अछि हुनका द्वारा बनवाओल विभिन्न भवन, मण्डप, देवमन्दिर इत्यादि। हुनक बनवाओल देवमन्दिर सभ एखनहुँ भक्तपुरक परिसरमे विद्यमान अछि। एहि वास्तुकर्ममे हुनक भक्तिभावना बेसी प्रबल रहल अछि। कुलदेवी तलेजू मन्दिरक आगाँमे एक-गोट प्रस्तर मण्डपक निर्माण करौलनि। नारायण चौकमे गरुड़-स्तम्भक निर्माण करौलनि। अन्नपूर्णालक्ष्मीक प्रति अपन प्रेम ओ अनुरक्ति ओ शिव-पार्वतीक प्रति भक्तिक प्रतीक रूपमे भक्तपुर राजदरबारसँ सटले खौमाटोलमे मन्दिर बनवाय ओहिमे भवानी-शंकरक युगलमूर्तिक स्थापना कयलनि। एहि मन्दिरमे शिलालेख अंकित करबाय लगबौलनि। शिलालेखमे चन्द्रशेखर ओ अन्नपूर्णाक प्रति अपन मनोभावकें मैथिली गीतमे अभिव्यक्ति देलनि। दोसर गीतमे भवानी-शंकरक अर्द्धनारीश्वर स्वरूपक स्तुति-गान कयने छथि जाहिमे अन्नपूर्णा-जगत्प्रकाशक दाम्पत्य-प्रेम ध्वनित होइत अछि। वसन्त रागमे निबद्ध ओ गीत निम्न रूपक अछि—

मातल मनमथ सहित वसन्ते।
रस निरतल देवि सदाशिव कन्ते॥
पिरितिक बस भय भेल एक देह।
कर नहि तन तेज हरहि सिनेह॥
गाढ आकम कयल शंकर भवानि।
पेमक पास बांटि राखल सयानि॥
परकाशभन चांदशेखर सभाव।

नाटक-रचना ओ तकर अभिनय करबाक अभिरुचि जगत्प्रकाशक स्वभावक अंग भऽ गेल छलनि। अभिनयक हेतु राजप्रासादक निकट नाट्यशाला ओ मन्दिर बनवाय ओहिमे नाट्येश्वर शिवक मूर्त्ति स्थापित करौलनि। एहि नाट्यशालाक मुख्य द्वार पर स्थापित सिंह मूर्त्ति-द्वय एखनहु वर्त्तमान अछि।

इतिहास ग्रन्थमे हिनका द्वारा निर्मित विभिन्न प्रासाद ओ मण्डप सभक उल्लेख कयल गेल अछि जाहिमे मुख्य अछि-विमलस्नेहमण्डप, नाखाछेदरबार, गोलक्वाथा दरबार इत्यादि। भवनक निर्माण, मन्दिरक निर्माण ओ जीर्णोद्धार तथा मन्दिरक व्यवस्थाक हेतु भूमि आदिक दान-विषयक हिनक नओ गोट शिला-लेख एखन धरि प्रकाशमे आयल अछि। एहि शिलालेख सबमे संस्कृत, नेवारी ओ मैथिली भाषाक प्रयोग भेल अछि। मैथिलीक प्रयोग केवल गीतहिमे अछि जे राग-ताल-निर्देश पूर्वक अछि। किछु गीतमे भवन-निर्माणक प्रयोजनादि वर्णित अछि, किन्तु विशेष गीत भक्तिपरक अछि, मुख्यतः देवी-वन्दना विषयक। भवानी-शंकरक मन्दिर-निर्माण सम्बन्धी एकटा गीत उदाहरणार्थ एतऽ प्रस्तुत अछि—

जेहि मोर जिव तुल चन्द्रशेखरसिंह, सेहि देलि एहि धनि वारि।
जगतप्रकाश भूप पावलि घरिनि वर, अन्नपुरना नाम नारि॥
सोहि धनि कयलिह प्रासाद अति भल, तथहु देवहि शिवमूल।
नेपालमण्डलका संवछल आवे, वाजि वसु मुनि मोति कूल॥
माघक महिना दशमि शुतिथि पर, जेठ नक्षत्र वज्रयोगे।
गुरुवार सुदिवस कनककलश भल, चढ़ावल धरमक भोगे॥
भनय प्रकाशभूप गीतहि मनोहर, एहि खने ऋतु ऋतुराजे।
चांदशेखरसिंह तुअ तुल नहि जन, मोरि हृदि तोहहि विराजे॥

प्रतापमल्ल भक्तपुरमे वास्तुशिल्पक निर्ममतापूर्वक ध्वंस कयल तथा भक्तपुरक कलात्मक सामग्रीकें तोड़ि-उखाड़ि काठमाण्डू लऽ गेल छलाह, तकर कचोट जगत्प्रकाशकें निरन्तर होइत रहलनि। तें एकटा भवनक शिलालेखीय गीतमे कहलनि—

केहु कयल पल(र) बिगाड़ि नड़ाबय
तकराक अति होय पाप ।

नेपालक मल्लराजा लोकनि केवल कलाप्रिय नहि, कलाभिज्ञो होइत छलाह। ई भक्तपुरक राजालोकनिमे विशेष रूपसँ देखल जाइत अछि। मध्यकालमे काव्य ओ संगीतमे एक प्रकारक अविनाभाव सम्बन्ध छल। गीतकारक हेतु संगीतक ज्ञान ओ अभ्यास अनिवार्य जकाँ रहैत छल। जगत्प्रकाशमल्लमे सेहो कलाभिज्ञता छल। हिनका अनेक ठाम **साहित्य विद्याविद, वैदग्ध्यपाथोधि, गन्धर्वविद्या गुरु** इत्यादि कहल गेल छनि। ई बिरुद सब जगत्प्रकाशमल्लक कलाप्रियता ओ कलाभिज्ञता दुहूक द्योतक अछि। अन्तिम बिरुद हुनक संगीतविद्याक क्षेत्रमे विशेषज्ञताक द्योतक अछि। एकर पुष्कल प्रमाणो अछि। हुनक जतेक नाटक, गीत-संग्रह ओ शिलालेखमे गीत सब अछि ताहि सबमे राग-तालक स्पष्ट निर्देश देल अछि। कतोक गीतमे, भणिताक चरणमे गीतक अंशरूपमे ओहि रागादिक निर्देश देल अछि जाहि रागमे ओहि गीतकेँ गायब कविकेँ इष्ट छलनि। एहिबातक सम्पुष्टि हेतु दू-एकटा उदाहरण पर्याप्त होयत, यथा—

1. नाट रागे गाबए इ जति ताले।
2. भयिरबि ललित लाग एहे शिव शिव।
   अथतारा(अस्तारा)नाम तारहि गाव।

सामान्यो रूपेँ पर्यालोचन कयने ई बात स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे ओहि कालमे प्रचलित राग सबमे क्वचिते एहन राग होयत जकर प्रयोग जगत्प्रकाशमल्ल नहि कयने होथि। ई एकटा सुखद आश्चर्य जे जगत्प्रकाश मिथिला देशीय प्रसिद्ध लोक-संगीतक भास—कोबर, उचिती, जोग, सोहर, बारहमासा, छओमासा, चौमासा, धुरिया मलार इत्यादिहुक प्रयोग कयने छथि।

गन्धर्वविद्यागुरु पदक आशय—गान विद्यामे श्रेष्ठ तथा गानविद्याक शिक्षा देनिहार—दुहु भऽ सकैत अछि। जगत्प्रकाश संगीतक जानकारे नहि छलाह, ओकर शिक्षा देबामे सेहो रुचि रखैत छलाह। रागशिक्षा एवं रागाभ्यासक हेतु एकगोट गीत संग्रह **पद्यसमुच्चयक** सेहो रचना कयने छलाह। एहि ग्रन्थक प्रयोजन छल रागक अभ्यासपूर्वक ज्ञान प्राप्त करब ओ तदनुसार पद्यरचनाक अभ्यास करब। एहि विषयक सम्पुष्टि ग्रन्थक पुष्पिका-वाक्यसँ होइत अछि—

नेपालेश **जगत्प्रकाशनृपते:** साहित्य विद्याविदो।
नित्यं पद्यसमुच्चय: सुकृतिभि: सानन्दमभ्यस्यताम्॥

जगत्प्रकाशमल्लक महत्त्व एहि बात लऽ कऽ विशेष मानल जयबाक चाही जे ओ भक्तपुरमे एक पीढ़ी धरिक साहित्य-संगीत-कला सम्बन्धी गतिरोधकेँ समाप्त कऽ एकटा नव उत्साहक सृष्टि कयलनि। शुष्क पड़ि गेल वातावरणमे सरसताक

मलयानिल बहा देलनि। हुनक शासन कालमे भक्तपुरक परिस्थिति बेसी काल अशान्ते रहैत छल, तथापि ओ संगीत एवं नाट्याभिनयकेँ प्रोत्साहित करैत रहलाह। हुनकहि प्रोत्साहनसँ धार्मिक उत्सव, शुभसंस्कार वा विशिष्ट अतिथिक उपस्थितिमे हुनक मनोविनोदार्थ गीत, नृत्य ओ अभिनयक आयोजन कयल जाइत छल। हुनक अपनहु नाटक सब एहने कोनो-ने-कोनो विशिष्ट अवसर पर रचित ओ अभिनीत भेल छल। एहि सन्दर्भमे किछु विशेष विचार अपेक्षित, तखनहि जगत्प्रकाशक महत्त्वक बोध सम्भव।

जगत्प्रकाशक प्रथम नाटक प्रभावतीहरणक प्रस्तावनामे सूत्रधार हुनक प्रशंसा करैत हुनका हेतु एकटा बिरुद **रघुवंशावतार श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्लक दूसर धर्मावतारक** प्रयोग करैत अछि। ई किछु विशेष अर्थ रखैत अछि।

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल छलथिन हिनक पितामह। राजनीतिक दृष्टिएँ हिनक शासनकाल शान्त ओ अचंचल रहल। कोनो प्रकारक सन्धि-विग्रह, आक्रमण-प्रत्याक्रमण, जय-पराजयक कतहु संकेत नहि भेटैत अछि। परन्तु सारस्वत क्रिया-कलापक दृष्टिएँ ई काल अत्यन्त संवेदनशील छल। कवि-नाटककार, गायक-अभिनेता, गुणज्ञ-शास्त्रज्ञ, विद्यावन्त-कलावन्त सबकेँ ओ आश्रय-प्रश्रय दैत रहलाह। विभिन्न शास्त्रक संस्कृत ग्रन्थ, संस्कृत ओ मैथिली भाषाक काव्य-नाटकादिक मिथिला एवं अन्यान्य जनपदसँ अन्वेषण कराय मङबाओल, ओकर प्रतिलिपि कराय संग्रह कराओल। बहुश: विद्वान्केँ आदेश दऽ नव-नव ग्रन्थक रचना करबाओल।

ओ स्वयं प्रतिभा-सम्पन्न एवं विभिन्न भाषा ओ शास्त्रक मर्मज्ञ विद्वान् छलाह। अत: विभिन्न विषय पर संस्कृत ओ नेवारी भाषामे अनेक ग्रन्थक रचना कयलनि। विशेष रूपसँ संगीत, नृत्य ओ अभिनयक क्षेत्रमे हुनक योगदान अद्वितीय कहल जा सकैछ। एतद्विषयक ग्रन्थ-रचना एवं ओकर प्रशिक्षण-प्रयोगसँ भक्तपुरक वातावरण कलापूर्ण भऽ उठल।

जगज्ज्योतिर्म्मिल्लसँ पूर्व नेपालमे मैथिली काव्य नाटकक रचनाक छिटफुट प्रमाण भेटैत अछि। हिनका समयमे आबि मैथिली काव्य-भागीरथीक धारा जेना शतमुखी भऽ उठल। जगज्ज्योतिर्म्मल्ल विपुल परिमाणमे काव्य-नाटकक रचना कऽ भक्तपुरक साहित्यिक प्रतिष्ठाकेँ शिखर पर बैसा देलनि। ओ **हरगौरीविवाह नाटक, मुदित कुवलयाश्वनाटक, कुंजविहार नाटक, षोडशगीतम्** (गीतनाट्य) **दशावतारनृत्यम्** इत्यादि उत्तम दृश्यकाव्यक निर्माण कयल तँ सरस ओ विविध भाव-सम्पन्न अजस्र गीतकाव्यहुक रचना कयल। हिनक अनेकानेक गीत-संग्रहमे प्रसिद्ध अछि—**गीतपञ्चाशिका, रागभजनसंग्रह, गीत-संग्रह, गाना राग, नवरस संगीतानि** इत्यादि। एकरा अतिरिक्त अन्यान्य गीत-संग्रह सबमे अन्य कविक गीतक संग हिनकहु गीत संकलित भेटैत अछि। भावक प्रौढ़ता, विविधता ओ नवीनता,

कल्पनाक कमनीयता, अलंकारक चमत्कार, छन्दक वैविध्य ओ संगीतात्मकता, भाषाक प्रांजलता ओ लालित्य, मर्मस्पर्शी अभिनव नाट्यवस्तु, अभिनेयात्मकता, परिनिष्ठित ओ चारुत्वपूर्ण नाटकीय गद्य-संल्लापसँ हिनक कृति समृद्ध अछि। काव्यक ई गुण नेपाल उपत्यकाक तत्कालिक परिवेशहिमे नहि, अपितु पूर्वापर कालहुमे जगज्ज्योतिर्म्मल्लकेँ साहित्य-स्तम्भक रूपमे स्थापित कऽ देलकनि।

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक सारस्वत श्रेष्ठता काठमाण्डू ओ पाटनक शासकमे सेहो साहित्यिक प्रतिस्पर्द्धा उत्पन्न कऽ देलक। ओहो लोकनि कवि-नाटककारकेँ प्रश्रय देबऽ लगलाह एवं अपनहुँ काव्य-नाटकादिक रचना करऽ लगलाह। ओहू दुनू राज्यमे काव्य-नाटकक रचना आनुवंशिक रूप धारण करबा दिस प्रवृत्त भेल। परन्तु जाहि उच्चता पर जगज्ज्योतिर्म्मल्ल स्वयं पहुँचलाह ओ भक्तपुरकेँ उत्थापित कऽ देल तकर अन्य प्रतिस्पर्द्धी राज्य सभ समकक्षता नहि प्राप्त कऽ सकल, ने हुनक समकालमे, ने परवर्त्तीकालमे। जगज्ज्योतिर्म्मल्लेक साहित्य-साधनाकेँ ई श्रेय अछि जे भक्तपुरीय मल्लराजवंशक चारि पीढ़ी धरि-- जगत्प्रकाश, जितामित्र, भूपतीन्द्र ओ रणजितमल्ल सन राजस् साहित्यकार ओ सम्पोषकक सृष्टि सम्भव भऽ सकलैं।

परन्तु एहि श्रेयमे जगत्प्रकाशमल्लक जे अंश रहल तकर विवेचनेसँ हुनक महत्त्व प्रतिपादित भऽ सकैत अछि। जगज्ज्योतिर्म्मल्लक साहित्य-साधनाकेँ, मैथिली काव्य-सर्जन-परम्पराकेँ पुनरुज्जीवित कऽ परात्पर अग्रिम पीढ़ी धरि अन्तरित करबामे जगत्प्रकाशमल्लक जे योगदान रहल, तकर मूल्यांकन एखनधरि नहि भऽ सकल अछि।

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक मृत्युक पश्चात् हुनक पुत्र नरेशमल्ल राजा भेलाह। हुनक शासन काल 1643 ई० धरि रहल। नरेशमल्ल अपन पिताक राजनीतिक उत्तराधिकारी भेलाह अवश्य परन्तु हुनक सारस्वतो उत्तराधिकारी होयबाक कोनो प्रमाण नहि दऽ सकलाह। एकर कारण, नरेशमल्लमे प्रतिभाक अभावक कारणे काव्य-रचनाक अक्षमता वा काव्य-नाटक-संगीतादि कलाक प्रति अरुचि वा शासनक अल्पावधि अथवा काठमाण्डू-पाटनक सम्मिलित राजनीतिक दवावजन्य विवशता, अथवा अन्य जे कोनो कारण रहल हो—नरेशमल्लक शासनकालक समस्त अवधिमे हुनक अपन अथवा अपना आश्रयमे रचित मौलिक कृतिक कोन कथा जे कोनहु ग्रन्थहुक प्रतिलिपि कयल जयबाक कोनो प्रमाण नहि अछि। एतेक धरि जे जगज्ज्योतिर्म्मल्ल द्वारा सम्पोषित वंशमणि ओ चतुर चतुर्भुज सन विशिष्ट कविकेँ भक्तपुरक परित्याग कऽ क्रमशः काठमाण्डू ओ पाटनक आश्रय लैत देखैत छियनि। नरेशमल्लक शासन कालमे भक्तपुरक कलासृष्टिक स्रोत सुखा गेल सन बूझि पड़ैत अछि। नरेशमल्लक मृत्युक पश्चात् जगत्प्रकाशमल्ल राजत्व आरम्भ कयल तखन ओ चारि-पाँच वर्षक अबोध बालक छलाह। 16-17 वर्षक वयस भेलहि पर

साहित्यबोध ओ शासन-क्षमता आयल होयतनि। ओ अपन साहित्य-सर्जन-क्षमताक प्रथम प्रमाण देलनि 1656 ई० मे **प्रभावतीहरण** नाटकक रचना द्वारा। एकर अर्थ ई भेल जे 1637 सँ 1656 ई० धरिक बीस वर्षक अवधि भक्तपुरक साहित्यिक इतिहासक अन्धकार युग बनल रहल।

जगत्प्रकाशमल्लक सर्वाधिक महत्त्व एहि बात लऽ कऽ अछि जे राजनीतिक संघर्षमय वातावरण रहितो साहित्य, संगीत ओ नाट्यकलाक अवरुद्ध प्रवाहकेँ पुनः नव गति प्रदान कयलनि। ओ अपन पितामह जगज्ज्योतिर्म्मल्लक स्थापित परम्पराकेँ पुनरुज्जीवित कऽ भक्तपुरक अग्रिम राजा लोकनिक लेल आदर्श प्रेरणा-बिन्दु बनि गेलाह तथा काव्य-यशक प्रतिस्पर्द्धी पाटन ओ कान्तिपुरक समकालिक ओ भावी राजालोकनिकेँ साहित्य-सर्जनक क्षेत्रमे स्पर्द्धाक नव आयाम प्रदान कयलनि। अतः जगत्प्रकाशमल्लकेँ जगज्ज्योतिर्म्मल्लक दोसर धर्म्मावतार कहब सर्वथा सार्थक ओ समीचीन अछि। वास्तवमे नेपालीय मैथिली साहित्यमे सतरहम शताब्दीक आरम्भमे जगज्ज्योतिर्म्मल्लकेँ नव जागरणक पुरोधा कहल जाय तँ जगत्प्रकाशमल्लकेँ ओहि शताब्दीक तेसर चरणमे पुनर्जागरणक संवाहक कहब समीचीन होयत।

जगत्प्रकाशमल्लक जीवनिका

जगत्प्रकाशमल्लक जन्म नेपाल संवत् 759, कार्तिक कृष्ण अमावास्या (1639 ई०) केँ भेलनि। हिनक जन्मक चारिम वर्षमे नेपाल संवत् 763, आश्विन वदि पंचमी (8 सितम्बर 1643 ई०) केँ पिता नरेशमल्लक मृत्यु भऽ गेलनि। चारि वर्षक अवस्थामे जगत्प्रकाशमल्लक राज्याभिषेक भेलनि। शैशव रहबाक कारणे धनदसिंह भाजु नामक सुयोग्य एवं प्रभावशाली महामात्यक अभिभावकत्वमे जगत्प्रकाशक शिक्षा-दीक्षा ओ राज्यशासन चलैत रहल। जखन ओ स्वयं दक्ष भऽ गेलाह तखन हिनक मित्र चन्द्रशेखरसिंह महामात्य भेलाह जे हिनक अत्यन्त आप्त ओ विश्वासपात्र छलाह। जगत्प्रकाशक शासनक उत्तरकालमे भोट्याभा नामक व्यक्तिकेँ मन्त्रित्व करैत देखल जाइत अछि। हिनक एकटा प्रधानाङ्ग (महामन्त्री) पद्मसिंह भारो द्वारा हिनक 'नानार्थ गीतक' प्रतिलिपि कयल हस्तलेख भेटैत अछि। ई पद्मसिंह कहियासँ कहिया धरि कार्यरत रहलाह तथा प्रशासनिक कार्यमे की योगदान रहलनि, से अज्ञात अछि।

जगत्प्रकाशमल्ल प्रौढ़ शासकक रूपमे बड़ कम समय धरि शासन कऽ सकलाह। चौंतिसे वर्षक अवस्थामे नेपाल संवत् 793, मार्गशिर कृष्ण चतुर्थी बृहस्पतिवार (28 नवम्बर 1673) केँ चेचकक प्रकोपसँ हिनक देहावसान भऽ गेलनि।

जगत्प्रकाशक जीवन अवधि बड़ छोट रहलनि मुदा संघर्ष, सक्रियता ओ सृजनशीलता हिनक जीवनक अंग बनल रहलनि।

नरेशमल्लक मृत्यु भेला पर हुनक कय गोट पत्नी हुनका संगहि सती भऽ गेलथिन। सम्भव अछि जे ओहिमे हिनक मायो रहल होथिन, कारण हिनक कोनहु अभिलेख अथवा रचनामे हिनक मायक कतहु कोनो उल्लेख नहि अछि। जगत्प्रकाश बाल्यावस्थहिमे माता-पिताक स्नेहसँ वंचित भऽ गेलाह। कोनो दोसर भाय-बहीन नहि रहने सोदर-स्नेहसँ सेहो वंचित छलाह। राज्यक भावी उत्तराधिकारीकेँ युवराजक रूपमे अपन शासक पितासँ जे निदेश, प्रशिक्षण ओ अनुभवक सम्बल प्राप्त होइत छैक तकर हिनका अभाव रहलनि। तथापि अल्पहु जीवनकालमे सर्वथा विपरीत राजनीतिक परिस्थितिमे संघर्ष करैत, भक्तपुरक मर्यादाकेँ सुरक्षित कयल, राज्यक ऊपर होइत आक्रमणक प्रतिरोध कयल, शासनकेँ सुव्यवस्थित कयल,

अपन मेधावितासँ विविध विषयक ज्ञानार्जन कयल, अपन प्रतिभाक अवदानसँ साहित्यकेँ समृद्ध कयल, कला ओ संगीत-क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान कयल तथा आरम्भिके अवस्थासँ अपन ज्येष्ठपुत्र ओ भावी उत्तराधिकारी जयजितामित्रमल्लकेँ समुचित शिक्षा-दीक्षा ओ राज्य-शासनक प्रशिक्षण दऽ ततबा योग्य बना देल जे ओ भविष्यमे नेपाल उपत्यकाक प्रौढ़ शासकक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह—से जगत्प्रकाशमल्लक व्यक्तित्वक वैशिष्ट्यक प्रमाण थिक। इतिहासहुमे एहन बहु-आयामी व्यक्तित्वक उदाहरण विरल कहल जा सकैत अछि।

जगत्प्रकाशमल्लक समकालक नेपाल-उपत्यकाक राजनीतिक परिस्थितिक आकलनसँ हिनक व्यक्तित्वक वैशिष्ट्यकेँ नीक जकाँ बूझल जा सकैत अछि। हिनक राजत्वसँ पूर्व तथा समकालमे अन्य दुहु शाखा-राज्य कान्तिपुर ओ ललितपुरमे—अत्यन्त प्रौढ़ ओ राजनीति-कुशल व्यक्ति शासनारूढ़ छलाह। सिद्धिनरसिंहमल्ल 1620 ई० मे ललितपुरक (पाटन)क राजा भेलाह आ 1661 ई० मे स्वेच्छया पुत्र श्रीनिवासमल्लकेँ राजा बनाय अपने संन्यस्त भऽ गेलाह। श्रीनिवासमल्ल राज्याभिषेकक समयमे प्रौढ़त्व प्राप्त कऽ लेने छलाह। दोसर दिस कान्तिपुर (काठमाण्डू)मे प्रतापमल्ल अपन पिता लक्ष्मीनरसिंहमल्लकेँ राजनीतिक छलछद्म ओ कूटनीतिक बलपर पूर्वहि निष्प्रभ कऽ देलनि तथा 1641 ई० मे राज्यशासन पर सेहो पूर्ण अधिकार कऽ लेलनि। प्रतापमल्ल अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी ओ आक्रामक प्रवृत्तिक शासक छलाह। नेपाल उपत्यकाक एकच्छत्र शासक बनि वास्तविक अर्थमे सकलराजचक्राधीश्वर बनबाक बलवती इच्छा छलनि।

अपन समकालिक राजागणमे सिद्धिनरसिंह मल्लसँ तँ सहजहि, प्रतापमल्ल ओ श्रीनिवासमल्ल-दुहुक तुलनामे जगत्प्रकाशमल्ल वयसमे कनिष्ठ तथा राजनीतिक ओ प्रशासनिक अनुभवमे सर्वथा न्यून छलाह। परिणामत: नेपाल उपत्यकाक ओहि कालक त्रिकोणात्मक राजनीतिक टकरावमे जगत्प्रकाशमल्लकेँ अपन अस्तित्वरक्षा हेतु निरन्तर संघर्ष करैत रहब जीवनक नियति बनि गेल छलनि।

भक्तपुरशाखा यक्षमल्लक ज्येष्ठपुत्रक वंशपरम्पराक प्रतिनिधित्व करैत छल। मल्लवंशक कुलदेवी तलेजू भगवती भक्तपुरहिमे अदौसँ स्थापित छलथिन जनिक पूजन-दर्शनक अधिकार भक्तपुरहिक राजा लोकनिकेँ छलनि, अन्यकेँ नहि। तेँ भक्तपुरक सामाजिक ओ राजनीतिक प्रतिष्ठा विशेष छलैक। कला, साहित्य ओ सांस्कृतिक क्रियाकलापमे भक्तपुरक आभिजात्य संस्कार अन्य शाखाक तुलनामे विशेष मर्यादापूर्ण छल। अत: भक्तपुरक प्रति अन्यशाखा सहजहि प्रतिस्पर्धा ओ ईर्ष्याभावसँ ग्रस्त रहैत छल।

नेपाल उपत्यकाक तीनू राज्यमे कोनो दूटा परस्पर मीलि कऽ तेसर राज्यकेँ आक्रान्त कऽ दैत छल। एहि कूटनीतिक चालिमे प्रतापमल्ल सतत अग्रणी रहैत छलाह आ तकर परिणाम भक्तपुरकेँ बेसी काल भोगऽ पड़ैत छलैक। प्रतापमल्ल

चाहैत छलाह सामाजिक प्रतिष्ठा, राजनीतिक वर्चस्व ओ अन्ततः नेपाल उपत्यकाक एकच्छत्र शासन। एहि आकांक्षा-पूर्त्तिमे सबसँ पैघ बाधक भक्तपुर छलनि। ओकर अस्तित्वकेँ बिना समाप्त कयने प्रतापमल्लक आकांक्षा-पूर्त्ति सम्भव नहि छल तेँ हुनक सतत प्रयास रहैत छल भक्तपुर ओ पाटनक मध्य विभेद उत्पन्न कऽ, पाटनकेँ अपना संग राखि भक्तपुरकेँ दुर्बल बनाय समाप्त कऽ देल जाय।

प्रतापमल्लसँ पाटन सेहो भयाक्रान्त रहैत छल। प्रतापमल्ल आरम्भमे सिद्धि-नरसिंहमल्ल पर आक्रमण कऽ हुनक राज्यक किछु क्षेत्र तथा किछु दुर्ग छीनि लेने छलथिन। सम्भवतः एही विवशताक कारण पश्चात् श्रीनिवासमल्ल भक्तपुरक विरुद्ध कतोक समय धरि प्रतापमल्लक संग दैत रहलथिन।

नरेशमल्लक राजत्वकालमे भक्तपुर पर सेहो प्रतापमल्ल आक्रमण कयने छलाह जकर उल्लेख हुनक एक गोट शिलालेखमे गर्वपूर्वक कयल गेल अछि जे—

भक्तग्राम नरेशमल्ल नृपतिर्हृत्वेभमेनं भिया।
भेजेऽसौ वसुधां जहार सुदृढं संदश्य दुर्ग पुनः॥

आक्रमणक ई क्रम जगत्प्रकाशमल्लोपर चलैत रहल जाहिमे दुइ गोट आक्रमण जबरदस्त ओ भयानक सिद्ध भेल। पहिल आक्रमण 1659 मे भेल तथा दोसर आक्रमण एक वर्षक पश्चात् भेल। दोसर बेरक आक्रमणमे युद्धक क्रम कतोक वर्षधरि चलैत रहल। ओही समयमे नेपाल-भ्रमण हेतु आयल तथा प्रतापमल्लक अतिथिक रूपमे स्थित जेसुइट इसाइ पादरी फादर ग्रूबर एहि युद्धक विवरण देने छथि। हुनका कथनानुसार जगत्प्रकाशमल्लक विरुद्ध चलैत युद्ध 19 जनवरी, 1662 केँ समाप्त भऽ गेल परन्तु जकरा ओ समाप्ति बुझने छलाह, से वास्तवमे अल्पकालिक युद्ध-विराम छल। युद्ध ओ विनाशकार्य बहुत बादो धरि चलैत रहल।

प्रतापमल्ल एहि युद्धकालमे भक्तपुर पर दारुण अत्याचार कयल। भक्तपुरक भूभागकेँ अधिकृत कैए लेल गेल संगहि ओहि ठामक राजभवन, मन्दिर, सरोवर आदिकेँ ध्वस्त कऽ मूल्यवान् वस्तु, धन-सम्पत्ति, धातुक देवमूर्त्ति इत्यादि लूटि कऽ काठमाण्डू लऽ आनल गेल। दोसर दिस भक्तपुरक आर्थिक नाकाबन्दी कऽ देल गेल। एहि कालमे भक्तपुरक जे दुःस्थिति भऽ गेल छल तकर मार्मिक वर्णन नेपालक एकगोट प्राचीन ग्रन्थ, भाषावंशावलीमे विस्तारसँ कयल गेल अछि जे—भक्तपुरक प्रजा सब घरसँ बहरा नहि सकैत छल। आक्रमणकारी द्वारा खेतक उपजा कटबा कऽ कान्तिपुर ओ ललितपुर पठबा देल गेल। अन्न बेत्रेक बहुतो व्यक्ति मुइल। बाहरसँ चाउर-चूड़ा विक्रयार्थ अनबा पर प्रतिबन्ध लगा देल गेल। दुर्भिक्ष भऽ गेल। लोक खाद्यपदार्थक अभावमे गाछक पात, बड़ीर ओ घास खा कऽ जीवन-रक्षा करऽ लागल। कतोक पुरवासी अपन पुस्तक पर्यन्त धनाढ्य लोकक हाथेँ बेचि गुजर कयल। स्त्री-पुरुषक संगमक अभावमे लोकक मुइनाइ छोड़ि ककरहु जन्म नहि भेल।[1] ठिमि नामक स्थानमे काठमाण्डूक संग भेल युद्धमे जगत्प्रकाशक एकगोट प्रमुख अमात्य सेहो निहत भऽ गेलथिन।

प्रतापक एहि नृशंस कृत्यमे श्रीनिवासोक सहयोग रहल। परन्तु एहिमे लूटिक विशेष लाभ प्रतापमल्लकेँ भेटल, अल्पलाभ ओ अयशक पैघ मोटरी श्रीनिवासकेँ। श्रीनिवास निश्चये विचारवान् पुरुष छलाह। ओ एहि बातक अनुभव कयल। एही मध्य हुनक मन्त्री विश्वरामक निधन भऽ गेल। विश्वराम अत्यन्त साहसी ओ वीरपुरुष छलाह। ओ भक्तपुर युद्धमे रणकौशल ओ वीरताक परिचय देने छलाह। विश्वरामक मृत्युसँ ललितपुरक सैन्यशक्ति दुर्बल भऽ गेल। आब श्रीनिवासकेँ पछाड़बाक हेतु प्रतापमल्लकेँ उपयुक्त अवसर भेटि गेल छल। ओ जगत्प्रकाशकेँ जीति आब श्रीनिवासकेँ छलपूर्वक बन्दी बनयबाक योजना बनाओल। योजना सफल भेला पर अनायासे ललितपुरो पर प्रतापक अधिकार भऽ जाइत। किन्तु श्रीनिवासकेँ एहि दुरभिसन्धिक आभास भऽ गेलनि। ओ आब भक्तपुरक संग मेल करबेमे अपन कल्याण बुझलनि। नेपाल संवत् 784(1664-65)क वैशाख मासमे ओ जगत्प्रकाशमल्लकेँ सन्धिक हेतु आमन्त्रित कयलनि। एहि समय धरि जगत्-प्रकाश पूर्ण युवत्वकेँ प्राप्त कऽ लेने छलाह। संघर्ष करैत-करैत राजनीतिक प्रौढ़ता आबि गेल छलनि। ओहि कालक कूटनीतिक आवश्यकता छल जे श्रीनिवासकेँ प्रतापमल्लसँ विमुख कऽ भक्तपुरकेँ मुक्त कयल जाय तथा ललितपुर ओ भक्तपुरक सम्मिलित शक्तिक बलपर प्रतापमल्लक बढ़ैत शक्ति पर अंकुश लगाओल जाय।

जगत्प्रकाशमल्ल अत्यन्त दुर्दशाग्रस्त छलाह। भक्तपुरवासी लोकनिक कष्टसँ दुखी छलाह। केश-दाढ़ी बढ़ि गेल छलनि। मुख म्लान भऽ गेल छलनि। सामान्य जन सदृश वस्त्र धारण करैत छलाह। ओहने अवस्थामे श्रीनिवासक आमन्त्रण पर ओ ललितपुर गेलाह। श्रीनिवासमल्ल जगत्प्रकाशक एहन दशा देखि द्रवित भऽ उठलाह। ओ प्रतापमल्लक दुष्टबुद्धिक अनुसार कयल गेल अपना व्यवहारक प्रति पश्चात्ताप करैत जगत्प्रकाशमल्लक पूर्ण राजकीय सम्मान कयल। ओ भक्तपुरक जे भूभाग अधिकृत कऽ लेने छलाह से ससम्मान आपस कऽ देल। जगत्प्रकाशक सम्मानमे **मदालसाहरण नाचक** आयोजन कयल। यैह मदालसाहरण नाच पाछाँ **ललित कुवलयाश्व** नाटक नामसँ प्रख्यात भेल। एहि नाटकमे श्रीनिवास अपनाकेँ जगत्प्रकाशक हितेच्छु घोषित करैत छथि—

शिरिनिवास नृप जगतक हित रे

नाटकक भरतवाक्यमे दुहूक जयकामना कयल गेल अछि—

शिरि श्रीनिवास नृप जगत्प्रकाश।
दुवहुक होव यश जय परकाश॥

1. भाषा वंशावली, भाग-2, सं० देवीप्रसादलंसाल, पुरातत्त्व प्रकाशन माला 38, नेपाल राष्ट्रिय पुस्तकालय, काठमाण्डू, वि० सं० 2023, पृ० 67-68

भक्तपुरक तलेजू भगवती मल्लवंशक मूल गोसाउनि छलथिन जनिक दर्शन-पूजनक अधिकार भक्तपुरहिक मल्लराजालोकनि मात्रकेँ छलनि। जगत्प्रकाशमल्ल श्रीनिवासकेँ भक्तपुर स्थित मल्लराजवंशक कुलदेवी मूल गोसाउनिक दर्शन-पूजनक अधिकार प्रदान कऽ अपन मैत्रीक विश्वसनीयताक प्रमाण देलनि। एहिसँ पूर्व कान्तिपुर अथवा ललितपुरक कोनहु राजाकेँ ई सौभाग्य प्राप्त नहि भेल छलनि। श्रीनिवास एहन सम्मान पाबि अभिभूत भऽ गेलाह आ एकरा पश्चात् श्रीनिवास जगत्प्रकाशक घनिष्ठ मित्र ओ शुभचिन्तक बनि गेलाह। हुनका जगत्प्रकाशमे निश्छल भ्रातृत्वक दर्शन भेलनि। जगत्प्रकाशो आजीवन श्रीनिवासकेँ अग्रजवत् आदर ओ सम्मान दैत रहलथिन। दुहूक स्नेह-सम्बन्ध एतेक बढ़ि गेल जे भक्तपुरमे मुण्डन, उपनयन, दीक्षा, विवाह अथवा अन्य कोनो धार्मिक उत्सव होइत छल तँ श्रीनिवास ओहि अवसर पर अवश्य उपस्थित होइत छलाह। कतोक बेर स्वयं भक्तपुरक तलेजू भगवतीक दर्शन-पूजन हेतु यात्रा करैत छलाह जकरा श्रीनिवासक **परमेश्वरीयात्रा, देवीयात्रा, देवीयात्रोत्सव** सन पवित्र नाम देल जाइत छल। एहि अवसर सब पर जगत्प्रकाश नव-नव नाटकक रचना कऽ श्रीनिवासक सम्मानमे ओकर अभिनय करबबैत छलाह। **मलयगन्धिनी, पारिजातहरण** एवं **नलीयनाटक** श्रीनिवासक परमेश्वरी-यात्रामहोत्सवक अवसर पर रचित ओ अभिनीत भेल छल। एहि नाटक सबमे जगत्प्रकाश मुक्तकण्ठसँ श्रीनिवासक गुणगान कयने छथि। **मलयगन्धिनी** नाटकक प्रस्तावनाक राजवर्णना गीतमे जगत्प्रकाश श्रीनिवासक गुणक प्रशंसा करैत हुनका द्वारा प्रदत्त सहायताक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत छथि—

चौखण्ड नरपति तोहर बखान।
त्रिभुवन महीपति सम नहि आन॥
निरमल मति तुअ गांग जलधार।
गल गजराजमोति सुन्दर हार॥
चौंसठि कला पर सरूपहि काम।
सरदक शशिमुख तुअ अभिराम॥
शिरिनिवास भूपति शरण लेला।
जगत्प्रकाशमति मोह सुख देला॥

आगाँ सूत्रधार नटीकेँ कहैत अछि—

'हे प्रिये एहन राजा श्रीश्रीश्रीनिवासमल्ल जनिक यशवर्णना भक्तापुरक राजा श्रीश्रीजगत्प्रकाशमल्ल सतत करथि।'

श्रीनिवास सहृदय काव्यरसिके नहि अपितु कवि, नाटककार एवं अभिनय-कलाप्रेमी छलाह। अतः जगत्प्रकाशक द्वारा एहि प्रकारक साहित्यिक सम्मान ओ

गुणगान, एक भावुक कवि-नाटककार द्वारा साहित्यिक बन्धुकेँ देल गेल सम्मानना छल, एहिमे सन्देह नहि। मुदा एकरा पाछाँ युवा राजाक आहत स्वाभिमानक प्रतिक्रिया स्वरूप उद्‌बुद्ध प्रौढ़ राजनयज्ञता सेहो अन्तर्निहित छल, तकरा अस्वीकार नहि कयल जा सकैत अछि। प्रतापमल्ल द्वारा कयल गेल नरेशमल्लक अपमान जगत्प्रकाशमल्ल बिसरियो सकैत छलाह मुदा अपना पर ओ भक्तपुरक जनता पर कयल गेल अत्याचार-यातना ओ मान-मर्दनक दीर्घकालिक त्रासदीकेँ कोना बिसरि सकैत छलाह! हुनका भक्तपुरक विखण्डित स्वाभिमानकेँ पुनः प्रतिष्ठापित करबाक छलनि। एहि हेतु श्रीनिवासमल्लककेँ प्रतापमल्लसँ फराक ओ अपना पक्षमे राखब अनिवार्य छल आ एहिमे जगत्प्रकाश सफल भेलाह।

श्रीनिवासमल्लक फराक भऽ गेलासँ प्रतापमल्लक आक्रमण-क्षमता घटि गेल। फलस्वरूप भक्तपुर पर सँ प्रतापक दबाब कम भऽ गेल। एहि अवसरक उपयोग कऽ जगत्प्रकाश अपन सैन्यशक्तिकेँ संघटित कयल। राज्यक शासनकेँ व्यवस्थित कयल। ललितपुरक संग भेल सन्धिक लाभ उठाय कान्तिपुरक संग पुनः युद्धक आयोजन कयल। एहि क्रममे बेराबेरी प्रतापमल्लद्वारा जीतल अपन भूभागकेँ अधिकृत कऽ प्रतापमल्लोक राज्यक कतोक भाग छीनि अपना अधिकारमे कऽ लेल। 1672 मे जगत्प्रकाशक काठमाण्डूक संग अन्तिम युद्ध भेल। धनजनक हानि भेल। एक दिस यौवनक उत्कर्षमे स्थित जगत्प्रकाश ओ दोसर दिस वृद्धत्व-परिधिमे पयर देने प्रतापमल्ल छलाह। प्रतापमल्ल केवल आत्मरक्षा करबामे समर्थ भऽ सकलाह। ई युद्ध यद्यपि जय-पराजयक निर्णयक बिना समाप्त भऽ गेल तथापि एही संग प्रतापमल्लक युद्धोन्मादक आगाँ पूर्णविराम लागि गेल। नेपाल उपत्यकामे शान्ति स्थापित भऽ गेल। जगत्प्रकाश राज्यक अभ्युन्नति ओ सारस्वत साधना दिस अग्रसर भेलाह। परन्तु एहि सुख-शान्तिक भोग जगत्प्रकाश बेसी दिन धरि नहि कऽ सकलाह। अकस्मात् 1673 ई० मे काल-कवलित भऽ गेलाह। प्रतापमल्लो एक वर्ष बाद मृत्युमुखमे पतित भेलाह।

जगत्प्रकाशमल्लक कृति ओ भाषा

जगत्प्रकाशमल्ल कवि ओ नाटककार छलाह। निरन्तर सर्जनशीलता हिनक सहज मनोवृत्ति छलनि। अशान्त ओ संघर्षशील जीवनमे जतबा अल्प अवधि हिनका साहित्य-रचनाक हेतु भेटलनि तकरा दृष्टिमे राखि हिनक कृति सभक संख्या पर विचार करी तँ अवश्ये चकित भऽ जाय पड़त आ सहजे कविक प्रतिभा, अध्यवसाय तथा सारस्वत-साधनाक प्रति प्रशंसाभाव उत्पन्न होयत। जगत्प्रकाशक रचित नाटक ओ गीत सब उपलब्ध छनि। ओ एही दुहू विधामे अपन प्रचुर रचना द्वारा मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध कयलनि। ई सर्वथा स्वाभाविको छल, कारण प्राचीन मैथिली साहित्य एही दुहू विधाक प्रवहमान धारा छल। ई अवश्य, जे, जे कवि गीतकार होइत छलाह तनिका लेल नाट्यरचना आवश्यक नहि छल परन्तु जे कवि नाट्यरचना करैत छलाह तनिका हेतु गीत-रचना-पाटव अनिवार्य अर्हता रहैत छल। संगहि गीत-रचना सहज कवि-कर्म नहि छल। गीत-रचयिताक हेतु संगीत-शास्त्रक सांगोपांग ज्ञान सेहो अनिवार्य मानल जाइत छल। जगत्प्रकाश नाट्य-रचनामे पटु छलाह। ओहिमे प्रसंगानुसार समावेश करबाक हेतु गीत-रचनामे पटु छलाह तथा गीत सबकेँ संगीत शास्त्रानुसार राग-तालबद्ध करबाक सम्यक् ज्ञान छलनि।

नाट्यकृति

जगत्प्रकाशमल्लक रचनात्मक कृतिमे नाटकेक बाहुल्य अछि। अतः सर्वप्रथम जगत्प्रकाशक नाटकहिक परिचय उपस्थित करब अपेक्षित। जगत्प्रकाश, आ जगत्प्रकाशे किएक, अन्यो प्राचीन नेपालीय साहित्यकारक रचनाक महत्त्वपूर्ण अंश एखनहुँ अप्रकाशिते अछि आ नेपालक पूर्वक दरबार लाइब्रेरी, पश्चात् वीरलाइब्रेरी आ सम्प्रति राष्ट्रिय अभिलेखालय नामसँ अभिहित पुस्तकालयमे अथवा अन्यान्य सार्वजनिक एवं वैयक्तिक पुस्तकालय सबमे पाण्डुलिपि रूपमे पड़ल अछि। तेँ जगत्प्रकाशमल्लक कतेक रचना छनि, ओ रचनामे नाटकक संख्या कतेक अछि ताहि सम्बन्धमे इदमित्थम् नहि कहल जा सकैत अछि। तथापि जतबा सूचना एकत्र करब सम्भव भऽ सकल अछि ताहि आधार पर अवश्ये किछु संख्या निश्चित कयल जा

सकैत अछि।

नेपालक प्रसिद्ध ओ वरिष्ठ इतिहासकार दिल्लीरमण रेग्मी जगत्प्रकाशमल्लक नाटकक संख्या नौ दर्जनसँ किछु अधिके होयबाक उल्लेख कयने छथि।[1] अर्थात् 108 सँ अधिक नाटक होयबाक चाही। कोन आधार पर रेग्मी महोदय ई संख्या सूचित कयलनि से अज्ञात अछि। परन्तु हमरा जनैत ई एक असंभाव्य संख्या थिक तेँ विश्वसनीय नहि मानल जा सकैत अछि। ओ प्रायः भ्रान्तिवश जगत्प्रकाशक नाटकक एहि वृहत् संख्याक उल्लेख कयलनि अछि।

विभिन्न इतिहास ग्रन्थ, परिचय-प्रसंग इत्यादिमे जगत्प्रकाशमल्लक नाटकक नामोल्लेख कयल जाइत रहल अछि जकर संख्या कतहु पाँच, कतहु छओ ओ कतहु सात अछि। स्वभावतः नाटकक नाम-परिगणनामे सेहो वैभिन्य देखल जाइत अछि। एहि सभक सम्बन्धमे सम्यक् विचार अपेक्षित अछि।

पूर्ववर्त्ती विवरणमे ई सिद्धान्त स्थिर कयल गेल अछि जे जगत्प्रकाशमल्ल अपन अन्तरंग मित्र चन्द्रशेखरक प्राणवियोग भेला पर एकात्मकता-बोध तथा अपन मित्रकेँ अमर रखबाक लेल अपन कवि-कर्ममे मित्रक नामक पूर्व पद अपना नाममे जोड़ि (जगत् चन्द्र) जगच्चन्द्र नामान्तर धारण कयलनि। अतः जगत्प्रकाशक नाट्यकृतिमे ओहू नाटक सबकेँ परिगणित करब आवश्यक, जाहिमे जगच्चन्द्रक नाम सम्बद्ध कयल अछि। एहि दृष्टिएँ जगत्प्रकाशक नाटककेँ चारि वर्गमे राखल जा सकैत अछि।

सर्वप्रथम ओ नाटक सब उल्लेखनीय जाहिमे सर्वत्र जगत्प्रकाशमल्लक भणिता-युक्त गीतक समावेश अछि तथा नाटकक प्रस्तावना वा नाटकान्तमे जगत्प्रकाश-मल्लकेँ नाट्यकारक रूपमे उद्घोषित कयल गेल अछि।

1. प्रभावतीहरण—एकर रचना नेपाल संवत् 776 (1656 ई०)मे भेल छल। ई जगत्प्रकाशक पहिल नाटक थिकनि। एकर राजवर्णना गीतमे वंशमणिक भणिता अछि। एहिमे जगत्प्रकाशमल्लक पत्नी चन्द्रावती ओ पद्मावतीक उल्लेख कयल गेल अछि। नाटककार अपनाकेँ जगज्ज्योतिर्म्मल्लक दोसर अवतार तथा नरेशमल्लक हृदयानन्दन कहने छथि। एहि नाटकमे तीन अंक अछि।

2. मलयगन्धिनी नाटक वा वीरेश्वर प्रादुर्भाव नाटक—ई नाटक दुहू नामसँ जानल जाइछ। एहि नाटकक रचना प्रायः 1663 ई० सँ 1665 ई०क मध्य पाटनक राजा श्रीनिवासमल्लक देवीयात्रा-महोत्सवक अवसर पर भेल छल। एकर प्रस्तावनामे श्रीनिवासमल्लक प्रभूत प्रशंसा देखल जाइछ तेँ एकर ऐतिहासिक महत्त्व अछि। विशेष इतिहासकार एहि प्रशंसाकेँ शरणापन्न उपकृत व्यक्तिक उद्गार मानैत छथि। ई सत्य जे काठमांडूक राजा प्रतापमल्लक आक्रमण-अत्या-

1. मेडाइवल नेपाल, पार्ट-2, पृ० 850

चारसँ सन्त्रस्त-दुर्दशाग्रस्त जगत्प्रकाशमल्लकेँ श्रीनिवासमल्लसँ सम्मान ओ सहयोग प्राप्त भेल छलनि। भक्तपुर ओ पाटनक संयुक्त सैन्य अभियानसँ प्रतापमल्लकेँ परास्त कऽ भक्तपुरकेँ मुक्त कराओल गेल छल। अतः **मलयगन्धिनी** नाटकक प्रस्तावनामे प्रदत्त श्रीनिवास-प्रशस्ति राजनीतिक संधि-सहयोगक प्रतिबिम्ब मानल जा सकैछ। किन्तु संगहि दुहु राजाक साहित्य, संगीत ओ कलाक क्षेत्रमे समान मनोवृत्ति ओ सहृदयता रहबाक कारणेँ पारस्परिक सम्मान, मैत्री, साहित्यिक सौहार्द्दक प्रतीक रूपमे ग्रहण करब संगत होयत।

एहि नाटकक गीतक भणिताक चरण सबमे चन्द्रशेखरसिंहक स्मरण कयल गेल अछि। तीन अंकक एहि नाटकक उपलब्ध पाण्डुलिपि अन्तसँ खंडित अछि परन्तु नाट्यवस्तु पूर्ण छैक। केवल भरतवाक्य सहित नाट्यान्तक औपचारिक अंश अनुपलब्ध अछि।

3. पारिजात हरण—एहि नाटकक रचना-तिथि अनुपलब्ध अछि। किन्तु एकरहु अभिनय श्रीनिवासक परमेश्वरी यात्राक अवसर पर भेल छल। अतः रचनाकाल मलयगन्धिनी नाटकक रचना कालक सन्निधिमे होयबाक चाही। एहु नाटकमे नाटककार अपन पिता नरेशमल्ल ओ मित्र चन्द्रशेखरसिंहक उल्लेख करैत छथि। ई नाटक तीन अंकमे सम्पन्न भेल अछि। एकर अभिनय मथुराक प्रसिद्ध नाट्याचार्य वाणीरसालरायक शिष्य ललित चरितक नाट्यमंडली द्वारा कयल गेल छल। यैह कारण अछि जे एहि नाटकक भाषा मुख्य रूपमे व्रजभाषा राखल गेल तथा मैथिलीक स्थान गौण रहलैक।

4. नलचरित वा नलीय नाटक—एहि नाटकक रचना नेपाल संवत् 790 (1670 ई०)मे श्रीनिवासमल्लक देवी-यात्रोत्सवक अवसर पर अभिनयक हेतु भेल छल। प्रस्तावनाक सूत्रधार वाक्यमे एहि नाटककेँ **नल चरित** कहल गेल, अछि परन्तु अन्तक पुष्पिका वाक्यमे **नलीय नाटक** कहल गेल अछि, तेँ उभय नामसँ ई नाटक जानल जाइछ। एहु नाटकमे नाटककार अपन मित्र चन्द्रशेखरकेँ बेर-बेर स्मरण कयलनि अछि। जगत्प्रकाशक ई सबसँ वृहत् एवं नाटकीय प्रभाव ओ रसवत्ताक दृष्टिएँ सर्वश्रेष्ठ नाटक मानल जाइत छनि। किन्तु एहिमे अंक-विभाजनक कोनो निर्देश नहि भेटैत अछि। संभव अछि जे प्रतिलिपिकारसँ भ्रमवशात् अंक-निर्देश छूटि गेल हो।

दोसर वर्गमे ओ नाटक सब अबैत अछि जाहिमे नान्दीगीत वा राजवर्णना गीतक भणितामे, जगत्चन्द्रक भणिता भेटैत अछि। नाट्यवस्तुमे जगत्प्रकाश ओ जगत्चन्द्र दुहुक भणिताक गीत सब प्रयुक्त अछि। नाटकान्तमे जगत्प्रकाश रचित नाटक कहल गेल अछि। एहि वर्गक निम्नलिखित चारिगोट नाटक प्राप्त अछि :

5. उषाहरण नाटक—एकर रचनाकाल अज्ञात अछि परन्तु प्रस्तावनामे सूचित कयल गेल अछि जे परमेश्वरी महोत्सवक अवसर पर जगत्प्रकाशमल्लक ज्येष्ठ राजकुमार जितामित्रमल्लक आदेशसँ एकर अभिनय भेल छल। अतः राजवर्णनामे हिनकहि प्रशस्ति कहैत जितामित्र ओ हुनक अनुज उग्रमल्ल दुहुक मंगल कामना कयल गेल अछि। नाटकक पुष्पिका वाक्यमे जगत्प्रकाश, जितामित्र ओ उग्रमल्ल तीनूक एकत्रैव सप्तांग राज्यवृद्धिक कामना अछि। नान्दीगीत, राजवर्णना गीत, देववर्णना गीतमे जगत्चन्द्रक भणिता अछि जाहिमे 'नृप' ओ 'कविगण मुकुट' विशेषण सेहो अछि। एहि ठाम एकटा गीतक भणितामे सूचित कयल गेल अछि जे(जगत्)प्रकाश संसारमे जगत्चन्द्र भऽ कऽ गुणक विचार कयल। ई नाटक चारि अंकमे विभाजित अछि तेँ किछु विद्वान एकरा ईहामृग नामक रूपक-प्रभेद मानैत छथि।

6. मदन चरित्र—ई नाटक **मदन सुन्दरी** वा **मदन सुन्दरी हरण** नामसँ सेहो जानल जाइत अछि। परन्तु कथा वस्तुक अनुसार एकर नाम मदन चरित्रहि उपयुक्त मानल जयबाक चाही। जगत्प्रकाशक कनिष्ठ पुत्र उग्रमल्लक उपनयनक अवसर पर जितामित्रक आदेशसँ एकर अभिनय भेल छल। उग्रमल्लक उपनयन नेपाल संवत् 780 (1670 ई०) आषाढ़ शुक्ल पंचमीकेँ भेल छल। अतः एहि नाटकक रचना 1670 ई०मे वा ओहिसँ पूर्व भेल होयत।

नाटक तीन अंकमे विभाजित अछि। गद्य-संवादक अभाव अछि। बेसी गीत जगत्चन्द्रक भणितामे अछि। किछु गीत जगत्प्रकाशक भणितामे अछि जाहिमे चन्द्रशेखरक उल्लेख अछि। दुइ गोट गीतमे जगत्प्रकाशक प्रियतमा अन्नपूर्णाक नाम उल्लिखित अछि। एकटा गीतक भणितासँ जगत्चन्द्रक ओ जगत्प्रकाशक अभिन्नताक संकेत भेटैत अछि—

> जगतचन्द्र कहि अबहि विदित सोर पिरितिहि बस सब देहि।
> अन्नपूरणापति जगतप्रकाशनृप भल कय उधारह मोहि॥

7. माधव-मालति नाटक—एकर रचना ओ अभिनय जगत्प्रकाशकपुत्र जितामित्रमल्लक उपनयनक अवसर पर भेल छल। एकर पाण्डुलिपिक अन्वेषण हालहिमे भेल अछि तेँ एकर समग्रतामे अध्ययन संभव नहि भऽ सकल अछि। एहि नाटकमे जगत्प्रकाश ओ जगत्चन्द्र नामसँ भणिता सब अछि। एहुठाम चन्द्रशेखरक उल्लेख अछि। नाटकक नाम ओ पात्रादिक नाम सबसँ अनुमान होइछ जे एकर कथावस्तु भवभूतिक प्रसिद्ध नाटक **मालती माधवक** कथानक पर आधृत अछि। एहि नाटकक भाषा मैथिली अछि।

8. मूलदेवशशिदेवोपाख्यान नाटक—तीन अंकमे रचित ई नाटक पूर्णतः नेवारी भाषामे अछि, क्वचित्-कदाचित् मैथिलीक छाँह अछि। एकरहु गीत सबमे जगत्प्रकाश ओ जगत्चन्द्र भणित गीत सबक समावेश अछि। रचनाकाल अज्ञात अछि।

तेसर वर्गमे ओ नाटक अबैत अछि जाहिमे सबगीत जगत्चन्द्रहिक भणितामे अछि। एहि वर्गमे एकगोट नाटक अछि।

9. महाभारत नाटक—एहि नाटकक राजवर्णनामे जितमित्रमल्लक प्रशंसा कयल गेल अछि। नान्दीगीतक अन्तिम चरणमे जितामित्र ओ उग्रमल्ल दुहू भाइकें चिरंजीवी होयबाक तथा राजवर्णनाक अन्तिम चरणमे जितामित्रकें दीर्घायु भऽ राजभोगक आशीर्वाद चंडीसँ माङ्गल गेल अछि। अन्यत्रहु जितामित्रक प्रति एहने भाव व्यक्त भेल अछि। राजवर्णना गीतक भणिताक चरण विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि—

जगतचन्द्रहि वरणि नरपति भगतनगरक राय।

एकर आशय, भगतनगरक राय जगत्चन्द्र वर्णन कयल तथा जगत्चन्द्र भगतनगरक रायक वर्णन कयल; ई दुहू भऽ सकैछ। नाटकक अन्तमे जितामित्रहुक एकगोट गीत अछि। सबसँ अन्तमे जगत्प्रकाशक अन्य नाटक जकां एहुमे 'अथिरकलेबर जानु' गीत गाओल जयबाक निर्देश अछि। एकर प्रतिलिपि जगत्प्रकाशक मृत्युक तीन वर्ष पश्चात् ने० सं० 796 (1676 ई०) ई०क उपलब्ध अछि जकर प्रतिलिपिकार गंगाधर दैवज्ञ छल। एहि ठाम स्मरण राखक थिक जे जगत्प्रकाश अपन जीवनेकालमे ज्येष्ठकुमार जितामित्रकें राजत्वमण्डित कऽ देने छलाह तथा हुनका पिताक समक्षहि राजत्वक समस्त प्रक्रिया प्राप्त छलनि। लगैत अछि जे महाभारत जगत्प्रकाशक अन्तिम रचना थिकनि जाहिमे ओ अपन पूर्व अभिधानक परित्याग कय पूर्ण रूपसँ जगत्चन्द्र अभिधान ग्रहण कऽ लेलनि। किन्तु एहि नाटककें सम्पन्न नहि कऽ सकलाह आ जितामित्र नाटकान्तमे अपन गीतक समावेश कऽ अभिनयक आयोजन करौलनि।

चारिम वर्गमे ओ नाटक सब अबैत अछि जकर पूर्ण रूप एखन धरि नहि भेटि सकल अछि, परन्तु जकर उल्लेख कयल जाइत रहल अछि अथवा जकर अंश सब उपलब्ध होइत अछि। एहन नाटक सबमे निम्नलिखित तीन गोट नाम उल्लेखनीय अछि।

10. रामायण नाटक

11. वृन्दाचरित विषयक नाटक

12. कृष्णचरित अथवा कंसवध विषयक नाटक

एहन सूचना विद्वान्लोकनि द्वारा देल जाइत रहल अछि जे जगत्प्रकाश रचित एक गोट रामायण नाटक सेहो अछि जकर राजवर्णनामे कृष्णदासक भणिता अछि किन्तु नाटकमे सर्वत्र जगत्प्रकाशक भणिताक गीत सब अछि। जगत्प्रकाशक गीत-संग्रह सबमे किछु गीत सब एहन अछि जकर प्रसंग रामायणक अछि।

एहिसँ अतिरिक्त जगत्प्रकाश-रचित उपर्युक्त दुइगोट नाटक और होयबाक

प्रमाण भेटैत अछि। नाटकक मूल रूपतँ कतहु एखन धरि दृष्टिगोचर नहि भेल अछि परन्तु जगत्प्रकाशक गीत-संग्रह सबमे बहुतो एहन गीत सब अछि जे नाट्य-प्रसंग गर्भित अछि। नाटकीय घटनाक वर्णन ओहिमे अछि। नाटकक पात्र-प्रवेश-सूचक गीत अछि। पात्र विशेषक नामोल्लेखपूर्वक उक्ति-प्रयुक्ति शैलीक गीत सब अछि जाहिसँ घटना विशेषक सूचना भेटैत अछि। एकर अर्थसंगति तखने संभव, यदि एकरा सबकें मूल कथानकक परिप्रेक्ष्यमे देखल जाय।

अप्रकाशित गीत-संग्रह 'गीतावली'मे तथा 'फूलपात' पत्रिका द्वारा प्रकाशित जगत्प्रकाशक 'नानार्थ देवदेवी गीत-संग्रह' (एकर नामक सम्बन्धमे आगाँ विचार कयल जायत)मे एहन बहुतो गीत सब अछि जकर सार्थकता नाट्यप्रसंगहिमे भऽ सकैत अछि किन्तु जे उपलब्ध कोनहु नाटकमे देखल नहि जाइछ।

एहि संग्रहमे कमसँ कम दुइ गोट गीतमे वृन्दाक नामक उल्लेख अछि। एकटा गीतमे वृन्दाक उक्ति दूतीसँ अछि तथा दोसर गीतमे वृन्दाक विरह-वर्णन अछि।

पौराणिक उपाख्यानक अनुसार वृन्दा छलि जालन्धर नामक असुरक पत्नी जे विष्णुक परम भक्त छलि। नेपालक नाट्यवस्तुक रूपमे जालन्धरोपाख्यानक उपयोग होइत देखल जाइत अछि। जगत्प्रकाशक पौत्र भूपतीन्द्र मल्ल सेहो एहि उपाख्यान पर नाट्य रचना कयने छलाह। अतः ई निष्कर्ष बहार भऽ सकैत अछि जे जगत्प्रकाश सेहो जालन्धरोपाख्यान पर आधृत वृन्दा विषयक नाटकक रचना कयने छलाह जकर अंगभूत उपर्युद्धृत दुहू गीत थिक। एहि नाटकक नाम जालन्धरोपाख्यान नाटक अनुमित भऽ सकैत अछि।

जगत्प्रकाशक दोसर अनुपलब्ध नाटक संभवतः कृष्णचरित अथवा कंसवध विषयक छल। इहो धारणा सहेतुक अछि। उपर्युक्त गीत संग्रहमे एहन बहुतो गीत अछि जे स्पष्टतः कृष्णक जन्मसँ लऽ कऽ कंसवध धरिक विविध लीला-प्रसंगसँ सम्बन्ध रखैत अछि। एहि संग्रहमे प्रवेशगीत सब सेहो संकलित अछि। प्रवेशगीत मैथिली नाटकक अनिवार्य अंग छल। कोनो पात्र वा पात्र सभक समूह प्रथम बेर मंच पर प्रवेश करैत छल तँ प्रेक्षककें ओकर परिचय देबाक हेतु नाट्यसाधनक रूपमे प्रवेशगीतक प्रयोग कयल जाइत छल। नेपालीय नाटकक कथावस्तु अत्यन्त विस्तृत ओ बहुआयामी होइत छल। पात्रक संख्या बहुत बेसी रहैत छल। अतः स्वभावतः प्रवेशगीतहुक संख्या बड़ बेसी रहैत छल। एहिठाम चर्चित प्रवेशगीत सब सेहो जगत्प्रकाशक कोनो ने कोनो नाटकहिमे प्रयुक्त भेल अछि। एहि सबमे उग्रसेन, कंस, देवकी, यशोदा, नन्द, कालिया नाग, आदिक प्रवेश-वर्णन अछि। एकटा सोहर गीतमे कृष्णक जन्मक वर्णन कयल गेल अछि तँ अनेक गीतमे कृष्णक बाल-लीला वर्णित अछि। युद्धवर्णन शीर्षक गीतमे कृष्ण-बलभद्रक केशी, शंखचूड़ आदि राक्षससभक संग वार्त्तालाप ओ युद्धक वर्णन अछि। दण्डक शीर्षकक अन्तर्गत

संवादात्मक गीत सब अछि जाहिमे दुइ-दुइटा पात्रक उक्ति-प्रत्युक्ति देल अछि, यथा—

कृष्ण-वत्सासुर, बलभद्र-शंखचूड़, कृष्ण-केशी, कृष्ण-कुवलय, कृष्ण-चाणूर-मुष्टिक, कंस-वसुदेव, कंस-नारद, नन्द-गर्ग, कृष्ण-ग्वालिनी, कृष्ण-कालिया इत्यादि।

एहि प्रकारक गीत सबमे सँ किछु उदाहरण देलासँ बात स्पष्ट होयत। तेँ आगाँ किछु उद्धरण देल जाइत अछि—

देवक्युक्ति—

एहि एकहि बेरि राखह भाई।
पुरुख तोहू सओ कहि नहि जाई॥
नहि थिक पुरुष एहि थिकि नारि।
होएत अजगर अति तुअ सेहे मारि॥
पद धरि अनुनय भूपति मोरा।
नाथ कि करए तिरीजाति भोरा॥
नरपति परकाश मल्लक बानी।
अभिलाख सबहिक पुरथु भवानी॥

देवकीक कन्याक वध करबाक हेतु उद्यत कंसक प्रति देवकीक अनुरोधक वर्णन एहि गीतमे अछि।

कृष्णोक्ति—

सुनह पुरुख कालि एहो कि चलह तोरिते॥ध्रु०॥
देखि अपराध मारए बुझए तँओ कएल तरान।
एतहि जनु रह जलधिहि चल तेहिते रहए परान॥

काल्युक्ति—

विनति सुनह ईशर मोर मन दय किछु॥ध्रु०॥
तोहर सुवचन मानि हमे आबे जायब वनधि पास।
इहाओ देल अलप जीव एहे अछए गरुड़ तरास॥

कृष्णोक्ति—

न कर संका किछु नहि होएत, कालि काँपए की काज।
तोहर शिरसि चिन्हि देल पदे, करह गमन साज॥

ई संवाद प्रसिद्ध कालिय-दमनक प्रसंगक अछि। पराजित कालियकेँ कृष्ण निर्भीक जलधिमे निवास करबाक आदेश दैत छथिन।

ऊपर विवेचित गीत सभक स्वतन्त्र रूपेँ कोनो सार्थकता नहि अछि। अवश्ये पूर्वापर घटना-प्रसंगक गम्भीर अपेक्षा रहैत अछि। गीतक मार्मिकता तावतधरि उजागर नहि भऽ पाओत जावत धरि ओकरा मूल कथानकक सन्दर्भमे नहि देखल जायत।

कृष्णबलभद्रोक्ति कहि कऽ एकटा गीत अछि—

हमरा दुहु परम अभागल,
कत कलेश पावल॥ध्रु०॥
तात मातक कहुखन सेवा करए न पारल,
हमरा निमिते कत कत दुख देला।
अपराध खेमह पिता आबे,
सानन्द करए के भेला॥

एहि गीतमे जे करुणा ओ मार्मिकता अछि, पिता-मातासँ चिरवियोगक पश्चात् प्रथम मिलनक भावातिरेक ओ आह्लाद अछि तकर आस्वादन तावत धरि नीक जकाँ सम्भव नहि, जावत एकर प्रसंग नहि ज्ञात हो, जे कंसवधक पश्चात् वसुदेव-देवकीक प्रति हुनक पुत्र द्वय कृष्ण ओ बलभद्रक कथन थिक।

जगत्प्रकाशमल्लक जे नाटक समुदाय ज्ञात भेल अछि ताहिमे तीन गोट नाटक कृष्णकथासँ सम्बन्ध रखैत अछि आ से थिक पारिजातहरण, प्रभावतीहरण ओ उषाहरण। एहिमे उपर्युक्त गीतक हेतु कोनो स्थान नहि अछि। एहना स्थितिमे ई मानब आवश्यक जे जगत्प्रकाशमल्ल कृष्णचरित विषयक कथावस्तुकेँ आधार बनाय प्रायः एही नामसँ नाटकक रचना कयने छलाह जाहिमे वसुदेव-देवकीक परिणयसँ लऽ कऽ कंसवध धरिक कृष्णक जीवनलीलाक कथा वर्णित छल। उपलब्ध गीतक वृहत् संख्या ओ विविध प्रसंगकेँ देखैत अनुमान होइत अछि जे ई एकगोट वृहत् नाटक छल होयत जकर मूल पाण्डुलिपि सम्प्रति अनुपलब्ध अछि।

गीतावलीक एकगोट पैंसार गीतसँ जगत्प्रकाशक कृष्णचरित विषयक ओ तन्नामक नाटकक सम्पुष्टि होइत अछि। गीतमे सूत्रधारक कथन अछि—

जगत प्रकाश मल्ल नरेसे।
कएल नाटक परम सुवेसे॥ध्रु०॥
कृष्ण चरित कंस दैतक नासे।
करह चारु कए एकर प्रकासे॥
एहि निरित मकरन्द हमे जान।
गुणि गण अलि भए कर एहे पाने॥

काठमाण्डूक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे एकगोट कृष्णचरित नामक नाटकक विखण्डित पत्र सब अछि(पुस्तकसूची-1/1696। माइक्रोफिल्मसंकेत-ए 346/32)

जे अत्यन्त दुष्पाठ्य अछि । ओकर जे अंश पढ़ब संभव भऽ सकल अछि ताहिमे ठाम-ठाम गीतक भणितामे जगत्प्रकाशक नाम अछि । ओकर कतिपय गीत अभिन्न रूपमे गीतावलीमे सेहो देखल जाइत अछि ।

अतः ई मानबामे कोनो तारतम्य नहि रहि जाइछ जे जगत्प्रकाश विरचित **कृष्णचरित** नामक वृहत् ओ उत्कृष्ट कोटिक नाटक सेहो छल जकर बहुसंख्यक गीत सब हुनक विभिन्न गीतसंग्रहमे उपलब्ध अछि परन्तु ओकर सम्पूर्ण रूप एखनहु अनुसन्धेय अछि ।

सब मिलाय जगत्प्रकाशक बारहगोट नाटक सिद्ध होइत छनि, यद्यपि एहि संख्याकेँ अन्तिम निष्कर्ष मानब समीचीन नहि होयत । एकरा भविष्येक अनुसन्धान पर छोड़ि देब उपयुक्त होयत ।

जगत्प्रकाशमल्लक नाटक समूहमे प्रभावतीहरण मात्र प्रकाशित अछि । शेष जे उपलब्ध अछि से हस्तलेख रूपमे राष्ट्रिय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे संरक्षित अछि । अतः हुनक नाट्य साहित्यक समालोचनाक हेतु अप्रकाशित स्रोत पर निर्भर रहबाक विवशता अछि ।

गीत-संग्रह

जगत्प्रकाशमल्ल जेँ नाटककार छलाह तेँ गीत-रचना हुनका लेल अनिवार्य छलनि । कारण, नाटकमे गीतक प्रयोग व्यापक रूपेँ होइत छल । बिना गीतक नाटकक कल्पने सम्भव नहि छल ।

जगत्प्रकाशक नाटकक अतिरिक्त गीतहुक अनेकानेक संग्रह सब उपलब्ध अछि । नेपालीय कविलोकनिक गीत-संग्रह सभक अनेकानेक प्रतिलिपि सब नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । एहन देखल गेल अछि जे एकहि संग्रहक विभिन्न प्रतिलिपिमे विभिन्न नाम भेटैत अछि । दोसर दिस, एकहि नामसँ भिन्न-भिन्न गीत-संग्रहक पोथी सब सेहो भेटैत अछि । ई स्थिति जगत्प्रकाशहुक गीतक पोथी सबमे चरितार्थ होइत अछि ।

नेपालक गीतक पोथी सब दुइ प्रकारक भेटैत अछि जकरा **एकल गीत संग्रह** ओ **बहुल गीतसंग्रह** कहि सकैत छी । बहुल गीत-संग्रह ओ पोथी थिक जाहिमे अनेक कविक गीत सब संकलित छनि । एहि प्रकारक संग्रहमे जगत्प्रकाशक गीत सब सेहो संकलित अछि । किछु संग्रहमे जगज्ज्योतिर्म्मल्लक गीतक संग जगत्प्रकाशक गीत संकलित अछि । किछु संग्रह एहन अछि जाहिमे जगत्प्रकाश ओ भूपतीन्द्रमल्लक गीत छनि । आ किछु संग्रह एहन अछि जाहिमे जगज्ज्योतिर्म्मल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल ओ भूपतीन्द्रमल्ल तीनू कविक गीत संकलित छनि । किछु एहनो संग्रह सब भेटैत अछि जाहिमे आनहु अनभिज्ञात अनेक कविक गीत सब अछि ।

एकल गीत-संग्रहमे कोनो एकहि कविक गीतक संग्रह कयल गेल अछि । जगत्प्रकाशमल्लक गीतक एहन कयगोट संग्रह सब विभिन्न नामसँ भेटैत अछि ।

1. **गीतावली**—जगत्प्रकाशमल्लक गीतक ई एकटा वृहत् संग्रह थिक । एहि गीत-संग्रहक नामक प्रसंग मतान्तर देखल जाइत अछि । जगत्प्रकाशक रचना-परिचयक क्रममे विद्वान् लोकनि एकर भिन्न-भिन्न नाम दैत छथि, यथा—नानार्थदेवदेवीगीत संग्रह, नानादेवदेवी गीत संग्रह, देवीगीत संग्रह इत्यादि । एहि संग्रहक पुष्पिकामे ग्रन्थकार एकरा 'गीतावली' कहने छथि । अतः यैह नाम समीचीन मानल जयबाक चाही ।

एकर जे हस्तलेख उपलब्ध अछि, जकर परीक्षण करबाक अवसर एहि लेखककेँ भेटल छनि, ताहिमे अनेको महत्त्वपूर्ण सूचना सब सम्पुटित अछि । ग्रन्थक अन्तमे सूचित कयल गेल अछि जे कवि अठारहम वर्षक वयसमे लोकप्रिय राग सबमे नाना रस ओ भावसँ युक्त ललित पद सभसँ एहि पुस्तकक निर्माण कऽ द्विजलोकनिकेँ प्रदान कयलनि । एकर अर्थ ई भेल जे 1657 ई० (ने० सं०777) मे एकर प्रथम प्रारूप तैयार भेल छल ।

ग्रन्थान्तमे पुष्पिकाश्लोकमे कहल गेल अछि जे नेपाल संवत् 780(1660ई०) क श्रावणमासमे गीतावली नामक पुस्तक सकल रूपमे पूर्ण कयल ।

पुनः तेसर पुष्पिकामे कहल गेल अछि जे ने०सं०781(1661ई०)मे श्रावणी-पूर्णिमाकेँ जगत्प्रकाशमल्ल द्वारा जीवराम नामक ब्राह्मणकेँ गीतावली पुस्तक प्रदान कयल गेल ।

तीनू पुष्पिका नीचाँ देल जा रहल अछि—

नेपालीय मते गते वियदिभक्षोणीधरै रङ्किके
श्रावण्यां धनभेऽति गुण्ड सहिते वारे प्रशस्ते भृगौ ।
श्रीमानेष जगत्प्रकाशनृपतिर्गन्धर्व्व विद्यागुरुः
सुप्रीत्यैशुणिनां चकार सकलं गीतावली पुस्तकं ।

अष्टादशाब्द वयसि प्रथितानुरागो
लोकेषु निर्भर यशोभर गीयमानः ।
नाना रसैः सुललितैश्च पदैरुपेतं
निर्म्माय पुस्तकमिदं स ददौ द्विजेभ्यः ॥

सं० 781 श्रावण शुक्ल पूर्णमास्यां श्रीश्रीजय
ज(ग)त्प्रकाश मल्लेन विप्रश्रीजीवरामाय
गीतावली पुस्तकं दत्तं ।

एहिसँ ई निष्कर्ष बहराइत अछि जे गीतावली कमसँ कम तीन खेपमे सम्पन्न भेल तथा प्रत्येक खेप एहिमे नवीन गीत सभक समावेश होइत गेल । चारि वर्षक समय एहि ग्रन्थक निर्माणमे लागल छल ।

ग्रन्थक पुष्पिकामे ग्रन्थकार अपना हेतु गन्धर्वविद्यागुरु विशेषणक प्रयोग करैत छथि। एकर दुइगोट तात्पर्य भऽ सकैछ, प्रथम—कवि संगीतशास्त्रमे पूर्ण निष्णात भऽ गेल छलाह, दोसर—संगीत शास्त्रक शिक्षामे अभिरुचि रखैत छलाह। संगीतक शिक्षा देबाक योग्यता संगीत शास्त्रक पूर्णज्ञान रहले पर संभव। अतः ई मानल जा सकैछ जे कवि गीतावलीक सम्पन्न होयबाकाल धरि संगीतज्ञ रूपमे संगीतक शिक्षा देबामे सेहो अभिरुचि देखाबऽ लागल छलाह। आगाँ संगीत-शिक्षाक हेतुए 'पद्य समुच्चय'क सेहो रचना कयने छलाह। स्थिति जे हो, मुदा एहि पुष्पिकासँ कविक अपन संगीत शास्त्रक ज्ञान ओ तदनुसार गीत-रचना-सामर्थ्यक प्रति आत्म-विश्वासक परिचय अवश्य भेटैत अछि।

गीतावलीक जाहि प्रतिक उपयोग एहिठाम कयल गेल अछि तकर आरम्भक ओ अन्त दिससँ किछु पत्रक गड़बड़ी अछि। प्रायः जगत्प्रकाशेक आन गीत संग्रहक पत्र एहिमे घुसिया गेल अछि तथापि ग्रन्थक विषय-व्यवस्थामे कोनो व्यवधान नहि भेल अछि। ग्रन्थमे विषयानुसार बीसगोट विषय-विभाग अछि—

1. नान्दीगीत
2. पुरुषोक्तिगीत
3. स्त्रियोक्ति गीत
4. पुरुष विरह गीत
5. स्त्री विरह गीत
6. दूती कलावती संवाद
7. दूती-नागर संवाद
8. करुण
9. भयानक
10. वीभत्स
11. कोबर
12. सोहर
13. प्रवेशगीत
14. नगरवर्णना
15. शरदादि वर्णना वा नाना वर्णन
16. युद्ध गीत
17. दण्डक गीत
18. निरसार गीत
19. पैसार गीत
20. देवभाव गीत।

देवभाव प्रकरणमे एकगोट नेवारीक गीत तथा किछु पद्य मध्यदेशभाषामे सेहो अछि।

2. नानार्थ गीत संग्रह—ई जगत्प्रकाशमल्लक एकमात्र प्रकाशित गीत संग्रह थिक जे फूलपात (सं० सुन्दरझा शास्त्री, काठमाण्डू, सितम्बर 1972) नामक मैथिली पत्रिकामे विशेषांक रूपमे प्रकाशित भेल छल। ओहिमे एकरा 'नानार्थ देवदेवीगीत संग्रह' कहल गेल अछि। परन्तु ई नाम गीतावलीक हेतु सेहो प्रयुक्त होइत देखल गेल अछि। ग्रन्थमे नामक कोनो आधार नहि अछि। ग्रन्थक सतरह विभाग अछि। प्रत्येक विभागक अन्तमे 'इति श्रीदेवीचरण कमल मधुकर महाराज जयजगत्प्रकाशमल्लकृत' कहि विषय-विभागक नामक उल्लेखपूर्वक समाप्ति-सूचना देल गेल अछि, यथा—नानार्थे पुरुषोक्ति गीतं समाप्तं, नानार्थे पुरुष विरह गीतं समाप्तं, इत्यादि। देवदेवी शब्दक कतहु चर्चा नहि अछि। तेँ एहि संग्रहकेँ एतऽ 'नानार्थ गीत संग्रह' नाम देल गेल अछि। वास्तवमे, ई संग्रह संभवतः गीतावलीक अपूर्ण प्रतिलिपि थिक। आरम्भसँ लऽ कऽ सतरहम विभाग 'दण्डक गीत' धरि जतऽ ग्रन्थ समाप्त होइछ, गीतावलीएक क्रममे गीतसब अछि। समान गीत सभ समान क्रममे अछि। केवल आरम्भक कतिपय नान्दीगीत ओ पुरुषोक्ति विभागक गीतमे एतऽ किछु गीत अधिक अछि (गीतसंख्या-6 सँ 20 धरि)। स्त्रियोक्ति गीतमे सेहो किछु अधिक गीत देखल जाइछ (गीत संख्या-42-46)।

दोसर दिस गीतावलीक दूतीनागर संवाद विभागमे एकगोट अधिक गीत अछि। शेषमे तीनगोट अभिनव विभाग निस्सार गीत, पैसारगीत ओ देवभाव गीत गीतावलीमे अधिक अछि। तेँ फूलपातक एहि गीत संग्रहकेँ गीतावलीसँ सर्वथा अभिन्नो नहि मानल जा सकैछ।

3. गीत पंचक—ई वियोगगीतक रूपमे रचित शोककाव्यक विशिष्ट कोटिक संग्रह थिक। कवि एकर रचना अपन अभिन्न मित्र ओ प्रियबन्धु चन्द्रशेखरसिंहक चिरवियोग भेला पर हुनक स्मृतिमे अपन काव्यांजलि अर्पित करबाक लेल कयने छलाह। ग्रन्थक आरम्भमे कवि कहैत छथि—

> अथ प्रियसखी वियोगे तस्यवियोग व्याकुलेन तं प्रीत्यर्थं
> श्रीश्री जयजगत्प्रकाशोहं तस्य स्तुतिं करोमि।

पंचम याम वर्णनाक अन्तमे कहैत छथि—

> इत्थं महीन्द्र नृपचन्द्र जगत्प्रकाशोमल्लो निवेदयति भानुकुलावतंसः।
> श्रीचन्द्रशेखर सुधांशु गुणानुवादं प्रीत्यातयोर्नहिपरः परमात्मभूतः।।

अपन प्रियबन्धुक वियोगक समयक उल्लेख आरम्भक एकगोट गीतमे देने छथि—

जेठ जिवन राखि बिसलेखे भेल मोरि मिथुन गिरिति सुकवारे।
नेपाळक संमते नरदिठि वसु हय से दिन दुर गेल हारे ॥

अर्थात् नेपाल संवत् हय (7) वसु (8) नरदिठि (2)-782 (1662 ई०) मे जेठमासमे ई दारुण वियोग घटित भेल छल। अतः एहि ग्रन्थक रचना 1662 ई०क पश्चात् भेल से सिद्ध अछि। ग्रन्थक आरम्भमे नान्दीस्तुति अछि जाहिमे एक संस्कृत पद्य, एक शिववन्दना विषयक मैथिलीगीत एवं एकगोट गणेश-स्तुतिक पद्य अछि। ई अन्तिम स्तुति श्लोक वास्तवमे भवभूतिक मालती-माधवक नान्दी श्लोक थिक जकरा कवि उद्धृत कयलनि अछि।

ग्रन्थ आठ भागमे विभक्त अछि ओ प्रत्येक भागकेँ यामवर्ण्णना कहल गेल अछि। प्रत्येक याम वर्णनाक अन्तमे पुष्पिका-श्लोक ओ पुष्पिका वाक्य देल गेल अछि—

चन्द्रशेखर सिंहस्य गुणंज्ञात्वा प्रकाश्यते।
गीतश्लोकादिभाषाभिर्लिख्यते गीत पंचकं ॥

इति श्रीगीतपंचके चन्द्रशेखर वियोगे श्रीश्रीजयजगत्प्रकाशकृते (प्रथम, द्वितीय, तृतीय इत्यादि क्रमसंख्योल्लेखपूर्वक) यामवर्ण्णना समाप्ता।

प्रत्येक याम-वर्णनामे पाँचटा कऽ गीत अछि ओ प्रत्येक गीतक पश्चात् संस्कृत श्लोक अछि। पंचम याम वर्णनामे एक गोट बारहमासा अछि जाहिमे प्रत्येक मासक वर्णन विषयक गीत-खंडक पश्चात् संस्कृतमे सेहो श्लोक देल गेल अछि। जकर संख्या तेरह अछि। अतः नान्दीगीत सहित एकतालिस गोट मैथिली गीत तथा नान्दी ओ पुष्पिका श्लोक सहित पचपन गोट संस्कृत श्लोक गीतपंचकमे समाविष्ट अछि।

एहिमे एक गोट बंगलाक तथा एक गोट मध्यदेश भाषाक गीत सेहो विद्यमान अछि।

4. पद्यसमुच्चय—कवि एहि ग्रन्थक निर्माण राग शिक्षाक हेतु कयने छलाह। राग-शिक्षिक्षु लोकनि रागबद्ध गीतक नित्य अभ्यास सुगमतासँ कऽ सकथि, सैह एकर उद्देश्य छल। एहि ग्रन्थक रचना कालमे कविमे साहित्यिक परिपक्वता आबि गेल छलनि तेँ अपना हेतु 'साहित्य विद्याविद्' विशेषणक प्रयोग कयलनि अछि। एहि सब तथ्यक सूचना एहि ग्रन्थक समापन श्लोकमे देल गेल अछि—

नेपालेश जगत्प्रकाश नृपतेः साहित्यविद्या विदो।
नित्यं पद्यसमुच्चयः सुकृतिभिः सानन्दमभ्यस्यताम् ॥

5. नानार्थ गीत—एहि नामक गीत संग्रहक एकटा प्रति नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे (1/395) सुरक्षित अछि। एकर प्रतिलिपि जगत्प्रकाशक

प्रधानाङ्ग (प्रधान अमात्य) पद्मसिंह भारो कयने छलाह। इहो एकटा वृहत् संग्रह थिक।

6. नानारङ्गगीत संग्रह/नाना रागगीतम्—एकर संकलन काल नेपाल संवत् 790 श्रावण वदि 9(1670ई०) थिक ई संग्रह दुइ नामसँ जानल जाइत अछि। रेग्मी महोदय एकरे गीत-पंचक सेहो मानैत छथि। परन्तु से भ्रम मानल जयबाक चाही। एहि भ्रमक कारण थिक एकर ग्रथनक पंचक शैली।

ग्रन्थक आरम्भमे संस्कृतमे नान्दीश्लोकक पश्चात् मैथिलीमे नान्दी गीत देल अछि। आगाँ ग्रन्थमे चारि विभाग कयल गेल अछि। प्रत्येक विभागमे पाँच-पाँच गोट गीत राखल गेल अछि जकरा पंचक कहल गेल अछि। प्रत्येक पंचकक अन्तमे 'इति श्री देवी चरण कमल मधुकर महाराज श्रीश्रीजय जगत्प्रकाशमल्ल विरचित' कहि पंचकक नामोल्लेख करैत समाप्ति-सूचना देल गेल अछि। पंचकक नाम निम्न रूपक अछि—

1. स्त्रियाः विरह पंचकं गीतं
2. पुरुषस्य अनुनयपंचकं गीतं
3. दूती कलावती संवाद नाम गीत पंचकं
4. पुरुषोक्ति गीत पंचकं।

अन्तिम पुष्पिका देखिए कऽ कतोक विद्वान एही ग्रन्थकेँ गीतपंचक अथवा पुरुषोक्ति गीत पंचक कहने छथि मुदा अभिलेखालय सूचीमे गीतपंचक नामसँ दोसरहि ग्रन्थ उल्लिखित अछि जकर चर्चा ऊपरे भेल अछि।

7. दशावतार गीत—पण्डित सुन्दरझा शास्त्री फूलपातमे भक्तपुरक चित्र-संग्रहालयमे (सुरक्षित) जगत् प्रकाशमल्ल रचित दशावतार वर्णनक शिलालेखक उल्लेख करैत छथि। ओकर जे किछु पंक्ति उद्धृत कयल गेल अछि से मैथिलीमे अछि। दोसर दिस रेग्मी महोदय भातगाँव दरबारक बाह्य परिसरमे स्थित एकगोट मन्दिरमे जगत्प्रकाशमल्ल द्वारा संस्कृतमे रचित दशावतार गीत उत्कीर्ण कयल एक गोट शिलालेखक सूचना दैत छथि।[1] शास्त्री ओ रग्मी दुहू जन दुइ शिलालेखक सम्बन्धमे कहैत छथि अथवा एकहि शिलालेखक, तकर सत्यापन एहि पंक्तिक लेखक द्वारा सम्भव नहि भऽ सकल अछि।

नेपालक कविलोकनिमे दशावतार वर्णन प्रिय विषय रहल अछि तथा प्रायः प्रत्येक प्रमुख कविक दशावतार वर्णन विषयक गीत उपलब्ध अछि। जगत्प्रकाश-मल्लक पितामह जगज्ज्योतिर्म्मल्लक **दशावतारगीतम्** (नृत्यम्) तँ प्रकाशितो भेल अछि।[2] भूपतीन्द्रमल्लक दशावतारनृत्यम् (1/792) तथा श्रीनिवासमल्लक

1. मेडाइवल नेपाल, पार्ट-2, पृ० 220
2. मैथिली प्रकाश, कलकत्ता, 1972

दशावतार (4/1497)क हस्तलेख राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि। अत: जगत्प्रकाशो द्वारा एहि विषय पर गीत रचना करब स्वाभाविक अछि। अनुमान होइत अछि जे शास्त्री ओ रेग्मी दुहू एकहि गोट शिलालेखक निर्देश कयने छथि। रेग्मी ओहि शिलालेखक मूल स्थान सूचित कयल तथा शास्त्री ओकर साम्प्रतिक स्थिति सूचित कयल अछि। संगहि इहो अनुमान अछि जे जगत्प्रकाशक दशावतार गीत संस्कृत ओ मैथिली दुहू भाषामे मिश्रित रूपमे रहबाक कारणे शास्त्री प्रदत्त मैथिली उद्धरण तथा रेग्मीक विचारेँ एकर भाषा संस्कृत—दुहू सत्य रूपमे मान्य।

8. शिलालेखक मैथिली गीत—काठमाण्डू उपत्यकामे दर्जनो शिलालेख सभ विद्यमान अछि जाहिमे मल्लराजा लोकनि स्वरचित मैथिली गीत सब अंकित करबौने छथि। एहिमे प्रमुख छथि जगत्प्रकाशमल्ल, प्रतापमल्ल, जितामित्रमल्ल ओ प्रताप मल्ल[1]। शिलालेखमे मैथिली गीत अंकित करयबाक प्राचीनतम उदाहरण जगत्प्रकाशमल्लहिक देखल जाइत अछि। जगत्प्रकाशमल्लक गीत-अंकित चारि गोट शिलालेख सम्प्रति उपलब्ध अछि। एहिमे एक गोट शिलालेखक गीत अत्यन्त भखड़ल रहबाक कारणे दुष्पाठ्य अछि ओ ओकर रागसंकेत एवं किछु भग्नपंक्तिक उद्धार मात्र सम्भव। शेष तीन गोट शिलालेखक मैथिली गीतक पाठोद्धार ओ प्रकाशन सम्भव भऽ सकल अछि। शिलालेखसँ जतबा गीतक उद्धार भऽ सकल अछि तकर संख्या चारि अछि।

जगत्प्रकाशमल्लक गीतक संख्या विपुल अछि परन्तु दुर्भाग्यवश ओकर समग्र-रूपक प्रकाशन सम्भव नहि भऽ सकल अछि। एकटा गीत संग्रह मात्र 'फूलपात' पत्रिकाक विशेषांकक रूपमे प्रकाशित भेल अछि। एहिसँ अतिरिक्त हिनक शिलालेखक गीत ओ अन्यान्य संग्रहक गोटा-गोटी गीत सभ यत्र-तत्र उद्धरण रूपमे प्रकाशित भेल अछि। स्वभावत: जगत्प्रकाशमल्लक गीतकारक रूपमे समुचित मूल्यांकन नहि कयल जा सकल अछि। हुनक कवित्व वैशिष्ट्यक उद्घाटन नहि भऽ सकल अछि।

भाषा-प्रयोग

जगत्प्रकाश बहुभाषाविद् छलाह, तकर प्रमाण हुनक कृति सबमे अछि। हुनक जतबा रचना उपलब्ध अछि तकर अवलोकनसँ सामान्यत: ज्ञात होइत अछि जे ओ कमसँ कम चारि भाषाक ज्ञान अवश्य रखैत छलाह। हुनक कृतिमे पारम्परिक

1. द्रष्टव्य, नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत—डा० रामदेवझा, मैथिली साहित्य परिषद्, विराटनगर, नेपाल, 1972

भाषा संस्कृत, स्थानीय नेपालभाषा वा नेवारी, मध्यदेशीय भाषा व्रज-अवधी तथा मिथिलाक साहित्यिक भाषा मैथिलीक प्रयोग भेल अछि।

संस्कृत भाषामे रचित जगत्प्रकाशक कोनो स्वतन्त्र कृतिक अस्तित्वक संकेत एखन धरि नहि भेटल अछि। रेग्मीमहोदय हिनक संस्कृतमे रचित दशावतार गीतक चर्चा कयने छथि। किन्तु ओ पूर्णत: संस्कृतेमे अछि से निश्चय पूर्वक कहब तावत धरि संभव नहि जावत धरि ओ पूर्णरूपमे उपलब्ध ओ अधीत नहि भऽ जाय। गीतपंचक नामक संग्रहमे प्रत्येक मैथिली गीतक अनुवर्त्ती एकटा कऽ संस्कृत श्लोक सेहो देल गेल अछि। एकरा अतिरिक्त एही संग्रहक एकटा **बारहमासा** गीतमे प्रत्येक मासक वर्णन मैथिली पद्य ओ संस्कृत श्लोकमे कयल गेल अछि। सब मिलाय गीतपंचकमे पचपन गोट संस्कृत श्लोक अछि। एकरा सबकेँ यदि स्वतन्त्र रूपमे संकलित कऽ देल जाय तँ ई करुण विप्रलम्भ वा करुण रसक विलक्षण काव्य-कृति सिद्ध होयत। किन्तु एहिमे कतोक स्थल पर संस्कृतक अन्य प्रसिद्ध कविक कतिपय प्रसिद्ध श्लोक सेहो समाविष्ट देखल जाइछ। एहना स्थितिमे एहि संग्रहक संस्कृत भागक मौलिकता शंकास्पद भऽ जाइछ।

जगत्प्रकाशक गीत संग्रहक आरम्भमे मंगलाचरणक रूपमे संस्कृतमे स्तुति पद्य देल गेल अछि जकरा कतहु-कतहु नान्दीश्लोक कहल गेल अछि। गीतपंचक ओ 'नानारंगगीत संग्रह'क नान्दी श्लोक अभिन्न अछि किन्तु ई श्लोक वास्तवमे भवभूतिक मालती-माधव नाटकक नान्दी-श्लोक थिक। लगैत अछि जेना कवि अपन प्रयोजनक अनुकूल अन्यहु कविक पद्यकेँ निस्संकोच ग्रहण कऽ लेल अछि।

जगत्प्रकाशमल्लक नाटक सबमे नान्दी पद्य, पुष्पांजलि पद्य तथा भरतवाक्य संस्कृतमे रहैत अछि। नान्दी ओ पुष्पांजलिमे सर्वत्र शिवक स्तुति कयल गेल अछि जाहिमे परम्परित भाव-सम्पत्ति अछि। चमत्कृत करऽबला मौलिकताक सेहो क्वचित् दर्शन होइछ। यत्र-तत्र भाषा-स्खलन सेहो भेटैत अछि।

नाट्यवस्तुमे यत्र-तत्र प्रसंगत: संस्कृत भाषाक प्रयोग भेल अछि। पात्रक आत्मपरिचय, आकाशवाणी, वरदान इत्यादिमे संस्कृतक अनिवार्य प्रयोग भेल अछि। संवादमे संस्कृत भाषाक विरल प्रयोग देखल जाइछ। किन्तु मलयगन्धिनी नाटकमे अवश्ये संस्कृत संवादक प्रयोग अछि। मलयगन्धिनीक ई संवाद अत्यन्त रोचक अछि।

नाट्यवस्तुमे संस्कृत संवादक कतिपय अंश एहिठाम प्रस्तुत कयल जाइत अछि जाहिसँ जगत्प्रकाशक संस्कृत भाषाक स्वरूपक आकलन कयल जा सकैछ।

नाट्य संवादमे पात्र-परिचय नेपालीय नाटकक महत्त्वपूर्ण अंग थिक। कोनो दृश्यमे पात्र-समूह जखन प्रथम बेर मंच पर उपस्थित होइत अछि तँ प्रत्येक पात्र अपन-अपन परिचय स्वयं दैत अछि। जगत्प्रकाशमल्लक नाटकमे पात्रक ई आत्म-परिचय सर्वत्र संस्कृतहिमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि ठाम दू-एकटा निदर्शन

देल जाइछ जाहिसँ एहि आत्मपरिचयक सरल प्रकृतिक अनुभव कयल जा सकय।

प्रभावती हरण नाटकक प्रथम अंकक प्रथम दृश्यमे कृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, गद, सारण, प्रद्युम्न एवं शाम्ब मंच पर उपस्थित होइत छथि। वयस, सम्बन्ध, पद, प्रतिष्ठा इत्यादिक अनुक्रमसँ सब अपन-अपन परिचय दैत छथि—

कृष्ण : जातोऽहं वसुदेव सूनुरमर प्रीत्यैं धरित्री तले
दृप्यद्दानव कोटि संगर कला पाण्डित्य वैतण्डिकः।
सोऽहं सम्प्रविशामि रङ्गसदनं माङ्गल्यकारी सता-
मुत्साहं जनयन्नपूर्वरचनां चित्रैश्चरित्रैरपि॥

रुक्मिणी : रुक्माङ्गी रुक्मिणी रुक्मभगिनी भाग्यशालिनी।
रङ्गमण्डपमाविश्य हरामि हृदयं हरेः॥

सत्यभामा : अभग्न सत्या भुविसत्यभामा रामावलीनामुपरिस्थिताहम्।
संप्राप्य भर्त्तारमुपेन्द्रमिन्द्रदर्पापहं रङ्गगृहं विशामि॥

गद : गदो गदाधरस्याहमनुजो दनुजान्तक :।
संविशामि मुदा रङ्गमनङ्ग सुभगाकृतिः॥

सारण : जगत्त्रितय नाथस्य कृष्णस्याहमिहानुगः।
प्रविशामि दिशामीशानधरीकृत्य सारणः॥

प्रद्युम्न : दर्पकोऽहं शम्बरस्य दर्पहा रतिवल्लभः।
विशामि रङ्गभवनं देवकी सूनुनन्दनः॥

शाम्ब : यदुवंशावतारस्य विष्णोर्हृदयनन्दनः।
निविशेऽहं मुदा रङ्गे शाम्बो जाम्बवतीसुतः॥

संवादक दृष्टिएँ मलयगन्धिनी नाटकमे किछु विशिष्टता देखल जाइत अछि। एहि नाटकमे कतोक ठाम न्यायशास्त्रक शैलीमे दार्शनिक विचारधाराक प्रतिपादन कयल गेल अछि। नारद ओ पार्वत मुनिक वार्त्तालापमे शंका-समाधानक गद्य शैलीक प्रयोग देखल जाइत अछि जाहिमे टीका ओ भाष्यक सम्मिश्रण अछि।

पार्वत शंका उपस्थित करैत छथि—

हे नारद ऋषे ! एकः पुरारिः आद्यः पुरुषएव विश्वात्मको
भवति स पुरारिः सृष्टि-स्थिति-संहृतिकलाभिः क्रियाभिः
अनन्तरूपः नाना रूपो भवति। यथा एकस्य पुरुषस्य
नाना क्रियाभिः नानात्वं भवति एक एवावतिष्ठते।
एवं चेत् तर्हि पृथग् जनगणैः आहितः समाहितो यो
वादजल्पः तैः सुकृतिनोपि पण्डितापि अस्य पुरभिदः
शम्भोः पृथग् विधत्वे नानात्वे कथं संशेरते।

एकर समाधान नारद ऋषि एहि रूपेँ प्रस्तुत करैत छथि—

हे पार्वत ! शृणु, ज्ञान सुखात्मकस्य ईश्वरस्य
सृष्ट्यादि कार्यं शरीर व्यतिरेकेण न सम्भवति।
अतः कारणात् पृथिव्यादि भूतानि सृष्ट्वा चैतन्य
स्वरूपेण तत्र प्रतिबिम्बते। तेन शरीर भेदेन भेदः
न तु वास्तवतः आत्मकृतो न भेदः। तस्यात्मः
तस्य आकीट ब्रह्म पर्यन्तं एकत्वात्।

कीर्तनियाँ नाटकक शैलीक एक गोट विशेषता ई छल जे संस्कृत श्लोक कहलाक बाद ओही भावकेँ मैथिली गीतमे व्यक्त कयल जाइत छल अथवा जे भाव पहिने मैथिली गीतमे वर्णित रहैत छल तकरहि पुनः संस्कृत श्लोकमे कहल जाइत छल। जगत्प्रकाशक नाटकमे एहि शैलीक अनुसरण सर्वत्र तँ नहि मुदा मलयगन्धिनीमे अवश्य देखल जाइत अछि। एहि ठाम मैथिली गीतक भाव संस्कृत श्लोकमे दोहराओल गेल अछि आ पुनरपि ओहि श्लोकक संस्कृत गद्यमे टीका सेहो कयल गेल अछि। मलयगन्धिनी नाटकक नायक अमित्रजित तथा नायिका मलयगन्धिनीक शृंगार-चेष्टा विषयक निम्नलिखित संवाद देखल जा सकैत अछि जाहिमे मैथिली गीतक अनुवाद संस्कृत पद्यमे भेल अछि—

अमित्रजित—

योग्यंवयस्तव मनोज्ञमिदंमदीयं
सन्मान संहरति दृष्टितयैव सद्यः।
तन्मे मृगाक्षि रभसेन शुचिस्मितेन
क्रीणीष्व मां विषहृतं शराभितप्तम्॥
हे प्रिये ! तव इदं सरसं वयः मम समुचितं मानसं दृष्टितः
दर्शनेनैव हरति। तत् हेतोः हे मृगाक्षि ! रभसेन रभस
पूर्व्वकं शुचि स्मितेन मनोज्ञस्मितेन मां क्रीणीष्व स्वाधीनं कुरु।

मलयगन्धिनी—

रामास्मि नाथ भवतो कुतूलायमाना
क्रीडा सरस्सुमधुपस्य सरोजिनी च।
तत्किंप्रिय प्रणय पेशलया गिरा मां
नानन्दयस्यमृतगर्भं गिरां विलोक्य॥

हे नाथ! भवतः रामा अहं अस्मि। अहं कथं भूता
मुकुलायमाना मुकुलवत् अप्रगल्भ क्रीड़ा सरस्सु
क्रीडासरो विषयेषु मधुपस्य भ्रमरस्य सरोजिनी
कमलिनी इव। हे नाथ, तत् हेतोः मां अमृतगर्भ
गिरा विलोक्य दृष्ट्वा किं न आनन्दयसि। गिरा
कथं भूतया प्रणयपेशलया प्रणयेन चतुरया।

संस्कृतक एहन प्रयोग अवश्ये संस्कृतज्ञ प्रेक्षकक सन्तोषार्थ कयल गेल छल जकर संख्या ओहि कालक राजसभामे उपेक्षणीय नहि छल।

जगत्प्रकाशक नाट्यकृतिमे नेपालभाषा वा नेवारी भाषाक सेहो प्रयोग भेल अछि। नाटकमे जतेक मंच निर्देश अछि ताहि सभमे अधिकांश नेवारिएमे देल गेल अछि। ई निर्देशसभ सामान्यतः चारि-पाँच शब्दसँ अधिकक नहि अछि। ताहूमे किछु शब्दक तँ बारंबार आवृत्ति देखल जाइत अछि। वाचिक अभिनयक हेतु गद्य-पद्य संवादमे क्वचितो नेवारी-प्रयोग नहि भेल अछि।

नेवारी जगत्प्रकाश मल्लक संगहि ओहि कालक शिष्ट समाजक मातृभाषा ओ दैनन्दिन प्रयोगक भाषा छल। नाटकक वाचिक अभिनयमे ओकर प्रयोग उपयुक्त होइत, तथापि अधिकाधिक नाटकमे मैथिलीक प्रयोगक सामाजिक कारणक गम्भीर अनुसन्धान सम्प्रति अपेक्षित। ई बात नहि जे नाटकक वाचिक अभिनयमे नेवारीक प्रयोग सर्वथा नहि भेल अछि। नेपालमे रचित नाटक सबमे अनेक एहनो नाटक अछि जाहिमे मैथिली मिश्रित नेवारी अथवा शुद्ध नेवारी भाषाक प्रयोग संवादक माध्यमक रूपमे भेल अछि। जगत्प्रकाशक एकगोट नाटक **मूलदेव शशिदेवोपाख्यान** एही कोटिमे अबैत अछि। तीन अंकक एहि नाटकमे जगत्प्रकाश ओ जगच्चन्द्र दुहूक भणिताक गीत अछि। बीच-बीचमे मैथिलीक पुट विद्यमान रहितो मुख्य प्रवाह नेवारीए भाषाक अछि। नेवारी वास्तवमे आर्य-भाषासँ भिन्न तिब्बती-बर्मी परिवारक शाखा थिक तेँ आर्यभाषा-भाषीक हेतु सहज बोधगम्य नहि। संगहि प्राचीन नेवारीक अर्थ बूझब सम्प्रति नेवारीभाषी विद्वानहुक लेल दुरूह बुझल जाइत अछि। अतः उपरिचर्चित नेवारी नाटकक साहित्यिक मूल्यांकन सम्भव नहि।

जगत्प्रकाशमल्लक पारिजातहरण नाटकमे ब्रजभाषाक प्रयोग भेल अछि, यद्यपि ठाम-ठाम अवधीक छाप सेहो अछि। अनेक स्थल एहनो अछि जाहि ठाम मैथिली भाषाक रंग स्पष्ट प्रतिभासित होइत अछि। दोसर दिस उषाहरण नाटक यद्यपि पूर्णतः परिनिष्ठित मैथिली गद्य-पद्यमय अछि तथापि कोनो-कोनो गीतमे ब्रज-अवधीक सेहो प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि।

आश्चर्यक विषय ई अछि जे जगत्प्रकाशक कोनहु रचनामे बंगला अथवा

ब्रजबुलिक कतहु कोनो स्पर्श नहि अछि। हिनक परवर्त्ती कालमे तँ अवश्ये, जे पूर्वकालमे भक्तपुरमे तथा समकालमे ललितपुरमे रचित कतोक नाटकमे बंगला ओ ब्रजबुलिक प्रयोग देखल जाइत अछि। जगत्प्रकाशमल्लक सम्मानमे श्रीनिवास मल्ल द्वारा आयोजित मदालसा हरण नाच जे पाछाँ 'ललित कुवलयाश्व नाटक' नामसँ प्रख्यात भेल, ताहूमे बंगला ओ ब्रजबुलि प्रयुक्त भेल अछि। सम्भव अछि जे बंगला ओ ब्रजबुलिक प्रति जगत्प्रकाशक निरपेक्षताक कारण रहल होयत ओकर सम्यक् ज्ञान प्राप्त करबाक अवसर ओ साधनक अभाव। प्रायः हिनक शासन कालमे भक्तपुर राजसभामे क्यौ बंगभाषा विज्ञ विद्यमान नहि छल। तथापि एकटा बंगलाभाषाक गीत जगत्प्रकाशक भणितासँ गीतपंचकमे अवश्य उपलब्ध अछि, यथा—

अमी न सहिबो प्राण तुमार बियोगे।
अनेक पाइलुँ सुख तुमा संयोगे॥
अमी न छाडिलो प्रेम छड़ाइलो देवे।
बिनति सुनिया देब पिया संग रे(लि)बे॥
हिया ते तोरिया दैवे लय गेलो प्राणे।
ई दुख लागिलुँ मोरि परमेलो बाणे॥
सदन कइलो बन जन कइलुँ घरे।
घुँटिया फिलिया संगे पाइलो वरे॥
कहिलो प्रकाश नृप तुमारे आसा।
चाँदशेखर संगे पाइबा बासा॥

उपर्युक्त विवेचनसँ एतबा स्पष्ट होइत अछि जे जगत्प्रकाश बहुभाषाविज्ञ छलाह। संस्कृत, नेवारी ओ ब्रजभाषाक ज्ञान छलनि। किन्तु हुनक साहित्य साधनाक अन्यतम माध्यम छलनि मिथिला भाषा। पारिजात हरण ओ मूलदेवशशिदेवोपाख्यान नाटकके छोड़ि, शेष नाटक मैथिली गद्य ओ गीतमे निबद्ध छनि। हुनक गीतक जतबा संग्रह सब आविष्कृत भऽ सकल अछि ताहू सभमे मैथिलीए भाषाक गीत सब संकलित अछि। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे जगत्प्रकाशमल्ल मैथिली भाषा ओ साहित्यक विशिष्ट ज्ञानसँ सम्पन्न छलाह। मैथिली भाषामे हुनक गति निर्बाध छलनि। नाटकमे प्रयुक्त मैथिली गद्यसँ सहजहि अनुमान होइत अछि जे जगत्प्रकाश मैथिलीक अभिव्यंजनाशक्ति ओ व्याकरणिक स्वरूपसँ पूर्ण परिचित छलाह। तेँ आत्मविश्वासक संग मैथिलीमे काव्य ओ नाटकक रचना कयलनि।

जगत्प्रकाशक नाटक ओ गीतमे जाहि मैथिली भाषाक रूप भेटैत अछि से सरल ओ स्वाभाविक भाषा अछि। सर्वत्र प्रसादगुणसँ सम्पन्न अछि। परन्तु स्पष्ट

बूझि पड़ैत अछि जे ई भाषा हुनक सीखल भाषा छनि। तेँ मातृभाषा रहने जे मार्मिकताक अपेक्षा कयल जा सकैछ तकर अभाव अछि। क्वचिते कतहु लोकोक्ति ओ उपलक्षणक प्रयोग भेल अछि। भाषागत लक्षणात्मक ओ व्यंग्यात्मक वैशिष्ट्य जे जगज्ज्योतिर्म्मल्लक भाषामे देखल जाइत अछि से जगत्प्रकाशक भाषामे नहि भेटैत अछि।

नाटकमे गद्यक प्रयोग, दू-एक केँ छोड़ि सब नाटकमे प्रचुर रूपमे भेल अछि किन्तु से सब छोट-छोट संवाद मात्र अछि। सामान्यतः एक वा दू लघुवाक्यमे अभिवादन, स्वागत, प्रश्न, उत्तर, जिज्ञासा, सहमति, चिन्ता, आश्चर्य इत्यादिक भाव व्यक्त कऽ देल गेल अछि। जाहि ठाम प्रेम, मात्सर्य, उत्साह, क्रोध इत्यादि मानसिक आवेगक अभिव्यक्तिक अवसर उपस्थित होइछ, ओहुनो स्थल पर नाटककार संक्षेपहिमे काज चला लैत छथि, यद्यपि एहन स्थलपर वाक्यरचना अपेक्षाकृत दीर्घ भऽ जाइत अछि। एहन स्थलक गद्यक चारुता प्रेक्षककेँ अवश्ये सन्तुष्ट करैत अछि।

प्रभावतीहरणक गर्भनाटक रामचन्द्र उत्पत्तिमे लोमपादक उक्ति अछि—

हे मंत्री देश दुर्भिक्ष भेल। प्रजाक पीड़ा भेल। दैवज्ञ सबे कहैछ जओ ऋष्यशृंग आबथि तओ वृष्टि होअ, सुभिक्ष होअ। ऋष्यशृंग आनयक उपाय करु।'

एही नाटकमे वज्रनाभक संग युद्धक परिस्थिति उपस्थित भेला पर प्रद्युम्न ओ प्रभावतीक वार्तालापक अंश द्रष्टव्य अछि—

प्रद्युम्न—हे प्रिये। त्रास जनु करिए। हमे एक क्षणे सबहि मारब किन्तु सम्बन्धि भेल, ते मारयितें संकोच होइछ।

प्रभावती—हे नाथ ! अपन जीवनरक्षा करु। ई अमोघ अस्त्र हमारा बापके ब्रह्मा देल। ई लियो। अपन प्राणरक्षा करु।

अवश्ये जगत्प्रकाशक ई गद्यसंवाद सब नाटकक गीतात्मक एकरसतामे परिवर्तन कऽ रोचकताक सृष्टि करैत नाट्यप्रयोजनकेँ कुशलतापूर्वक सम्पादित करैत अछि।

जगत्प्रकाश संस्कृतक सामान्य ओ सरल शब्द तथा तद्भव शब्दक सर्वत्र प्रयोग करैत छथि। कतोक ठाम अवहट्ठोक शब्दक समावेश कऽ दैत छथि। मुदा लगैत अछि जेना जगत्प्रकाशक मैथिली भाषाक शब्दकोष ओतेक विस्तृत नहि छल। ई तथ्य हुनक गीतक भाषासँ स्पष्ट होइछ जाहिमे समाने शब्दावलीक पुनरावृत्ति होइत रहैत अछि। प्रायः यैह कारण अहि जे अनेक ठाम जगत्प्रकाश सस्कृतक ओहन शब्दक प्रयोग सेहो करैत छथि जे मैथिलीमे दुरूहे अथवा कठिन मानल जायत। एहन कतोक शब्द जकर प्रयोग जगत्प्रकाशक रचनामे भेल अछि, एतऽ देखल जा सकैत अछि—

एनि (एणी) - हरिणी । कुशेशय - कमल। ख - आकाश । छायापथ-

आकाश, वायुमण्डल । नाक-स्वर्ग । नागपोतककर-हाथीक बच्चाक सूँढ़। परभृत-कोइली। भुवन-जल। भुवनद-मेघ। यामिनिमुख-साँझ। रविहित-कमल । राध-वैशाख। वनद-मेघ । वनधि-समुद्र । शिखिवाहन-कार्त्तिकेय। शिलीमुख-मधुमाँछी, बाण, मूर्ख। शिवरिपुवधु-रति। शुक्र-ज्येष्ठमास। सुखि-(षि)र-वंशी। संबररिपु-कामदेव। सारस-कमल, चन्द्रमा। सुरपथ-आकाश। शौरि-कृष्ण। इत्यादि।

अवश्ये अनेक ठाम ई प्रयोग किछु काव्यगत चमत्कार उत्पन्न कऽ दैछ जे अन्यथा नहि होइत। नायिकाक द्वारा रोषमे प्रियतमकेँ वा पुरुषक हेतु शिलीमुख कहब सोद्देश्य भऽ जाइत अछि, यथा—

'प्रिय ! तोहे शिलीमुख जाति
नहि कर किछु परिपाति॥'
'पुरुख शिलीमुख सहज चंचल मति
दिने दिने कत दुख देला।'

एहिठाम मधुमाँछीक चंचलमति, वाणक दुखदायकता तथा मूर्खक अपटुता श्लेष द्वारा व्यंजित होइत अछि। एहन स्थल तँ क्षम्य अछि किन्तु मेघक हेतु वनद, भुवनद; समुद्रक हेतु वनधि; वैशाख हेतु राध; ज्येष्ठक हेतु शुक्र सन प्रयोगकेँ प्रशंसनीय नहि कहल जा सकैत अछि।

जगत्काशमल्लक नाटक

जगत्प्रकाशमल्लक नाट्यकृति सबक समेकित रूपसँ अनुशीलन कयला उत्तर हुनक नाट्य विधानक अनेकश: सामान्य विशेषता सब परिलक्षित होइत अछि। ओहिमे संस्कृत नाट्यशास्त्रक कतिपय लक्षण सब अवश्य भेटैत अछि परन्तु ताहिसँ अधिक नवीनता ओ भिन्नता दृष्टिगोचर होइत अछि।

प्रस्तावना ओ भरतवाक्य नाट्यक अनिवार्य अंगक रूपमे संस्कृत नाट्यशास्त्र ओ नाट्यप्रयोगमे देखल जाइत अछि। जगत्प्रकाशहुक नाटक सबमे एहि परम्पराक अनुसरण करैत आरम्भमे प्रस्तावना ओ अन्तमे काव्यसंहार पूर्वक भरतवाक्यक आयोजन भेल अछि। किन्तु ओकर सतर्क अध्ययन ओ विश्लेषणसँ स्पष्ट होइत अछि जे एहि दुनू औपचारिक आयोजनमे अनेक नवीन तत्त्वक समावेश भऽ गेल अछि।

प्रस्तावना आरम्भ होइत अछि मैथिली नान्दीगीतक गायनसँ। एहि नान्दी-गीतमे शिव ओ पार्वतीक वन्दना रहैत अछि। नेपालक अन्य मैथिली नाटकमे आरम्भमे संस्कृतमे नान्दीश्लोकक पाठ होइछ। जगत्प्रकाश मैथिली नान्दीक पश्चात् संस्कृत नान्दीश्लोकक प्रयोग करैत छथि। हिनक कतिपय नाटकमे सूत्रधार प्रवेश कऽ नान्दी पाठ करैत अछि मुदा कतोक नाटकमे नान्दीक पश्चात् सूत्रधार प्रवेश करैत अछि। नान्दीक पश्चात् सूत्रधार मैथिली गीत द्वारा भगवतीक स्तुति करैत अछि जाहिमे कखनो सूत्रधारोक प्रवेश-सूचना रहैत अछि। तदुपरि पुष्पांजलिश्लोकक पाठ कयल जाइछ जाहिमे शिवक वन्दनापूर्वक मंगलकामना रहैत अछि। पुष्पांजलि-विधान नेपालीय रंगमंचक अनिवार्य कृत्य छल। एहि सम्बन्धमे मलयगन्धिनी नाटकक प्रस्तावनामे नाट्यशास्त्रसँ एकटा वचन उद्धृत कयल गेल अछि—

रङ्ग पीठस्य मध्ये तु स्वयं ब्रह्मा प्रतिष्ठित:।
इत्यर्थं रङ्गमध्ये तु क्रियते पुष्पमोक्षणम्॥

एहिसँ स्पष्ट अछि जे रंगभूमिक मध्यमे पुष्पांजलि अर्पित कयल जाइत छल परन्तु पुष्पांजलिश्लोकमे ब्रह्माक नहि अपितु शिवक वन्दना होइत छल। वास्तवमे

आरम्भसँ लऽ पुष्पांजलि धरिक कृत्यकेँ नान्दीएक प्रवर्द्धित रूप मानल जा सकैत अछि। ई कृत्य सम्पन्न भेला पर सूत्रधार नटीक आह्वान करैत अछि। नटीक अयला पर सूत्रधार नाट्यक अवसर ओ नाट्यक आदेश देनिहार राजाक अथवा नाटक-रचयिता वा जकरा अनुरंजनार्थ अभिनय कयल जाइछ ओहि राजाक नामोल्लेख करैत नाट्याभिनय करबाक प्रस्ताव करैत अछि। नटी द्वारा राजाक सम्बन्धमे जिज्ञासा कयला उत्तर सूत्रधार ओहि राजाक प्रशस्तिक गीत गबैत अछि। एहि गीतकेँ 'राजवर्ण्णना' गीत कहल जाइत अछि। एकरा उत्तरमे नटी ओहि नगर वा देशक वर्णन करैत अछि जतऽ अभिनयक आयोजन भेल रहैत अछि। यैह थिक 'नगरवर्ण्णना' वा 'देशवर्ण्णना' गीत। ई दुहु गीत नेपालीय मैथिली नाटकक प्रस्तावनाक अनिवार्य अंग थिक। एहिसँ अनेक ऐतिहासिक तथ्यक परिज्ञान होइत अछि।

एहिठाम राजवर्ण्णना ओ नगरवर्ण्णनाक एक-एकगोट उदाहरण प्रस्तुत कयल जाइछ जाहिसँ ओकर विषयवस्तुक सामान्य परिचय भेटि सकैत अछि। मलय-गन्धिनी नाटकक राजवर्ण्णना पूर्वक प्रकरणमे उद्धृत भेल अछि जाहिमे श्रीनिवास-मल्लक प्रशंसा अछि। मदन-चरित्रक अभिनय जितामित्रक आदेशसँ भेल छल तेँ ओहिमे जितामित्रहिक प्रशंसा कयल गेल अछि—

नृपति जितामित्र नव राय आवे,
एकरा बले अरि कातर फल पावे॥
मदन लक्ष कोटि तुअ रूप ध्यान,
खंजन वर सल लोल दिठि बान॥
नूतन शरीर नूतन तुअ रसिके;
मदन मलिन भेल देखि रूप निके॥
जगतचन्द थिक आबे एक गुनी,
अभय देअथु सवे मिलिकहु मुनी॥

एहिना माधव-मालति नाटकक नगरवर्ण्णना वा देशवर्ण्णना गीत सेहो द्रष्टव्य अछि—

भगति नगरि बुध जनहि बहुत,
चारि वरन रह तथुहु सुपुत॥
पुरवनिता जत अति अभिराम,
पुरुष रसिक गुन सब भेल काम॥
बेद मंगल चण्डि पढ़य पुरान,
बहु विध जन गुन बुझए निधान॥

मण्डप देवालय कूप तराग,
वागिहि वाटिका पय लेल राग ।।
जगत्प्रकाश भन तोहे देवि माता,
चन्द्रशेखर लग देअवथु माता ।।

प्रस्तावनाक अन्तमे सूत्रधार ओ नटी नाट्यवस्तुक अनुकूल अपन-अपन भूमिका ग्रहण करबाक निश्चय करैत प्रस्थान करैत अछि। साधारणत: सूत्रधार नायकक ओ नटी नायिकाक भूमिका ग्रहण करैत अछि। परन्तु कोनो-कोनो नाटकमे एहिसँ भिन्न भूमिका ग्रहण करबाक निश्चय करैत देखल जाइत अछि।

प्रभावतीहरणमे नटीक प्रस्ताव होइत अछि—'इहाजे प्रद्युम्न हमे प्रभावती काछय चलु'''इहाजे कृष्णक संग प्रवेश करू, हमे वज्रनाभ संग प्रवेश करब।' नलीय नाटकमे सूत्रधारक प्रस्ताव होइत अछि—'हमे नल राजाक नेपथ्य करब, इहाजे दमयन्तीक नेपथ्य करू गय।' किन्तु मलयगन्धिनी नाटकमे नायिकाक माता-पिताक भूमिकामे सूत्रधार ओ नटी तथा नायिका मलयगन्धिनीक भूमिकामे अपन बेटीकेँ प्रस्तुत करबाक सूचना दैत सूत्रधार नटीकेँ कहैत छैक—'हे प्रिये हमे वसुभूति राजाक कछनी करय गए, इहाजे मदनाक कछनी करू गए—मलयगन्धिनीक कछनी अपने बेटी कछाउ गए।'

एहि प्रकारक निश्चयक संग सूत्रधार ओ नटी मंचपरसँ निष्क्रमण करैत अछि आ प्रस्तावना समाप्त होइत छैक। प्रस्तावना-समाप्तिक अव्यवहित पश्चात् नाट्यवस्तुक अभिनय प्रारम्भ भऽ जाइत अछि।

नाट्यान्तमे, नाट्यशास्त्रमे विहित निर्वहण सन्धिक अन्तिम तीन अंग पूर्ववाक्य, काव्यसंहार ओ प्रशस्तिक निर्वाह जगत्प्रकाशक नाटकमे देखल जाइत अछि। प्रशस्ति थिक भरतवाक्य जाहिमे राज्य, राजा, प्रजा इत्यादिक मंगल-कामना रहैत अछि। जगत्प्रकाशक नाटकमे संस्कृत श्लोकमे एहि विधिक सम्पादन देखल जाइत अछि। जगत्प्रकाशसँ पूर्व जगज्ज्योतिर्म्मल्लक नाटकमे नाट्य-समापनक अत्यन्त जटिल विधान देखल जाइत अछि। ओहिमे नाट्यान्तमे नाट्यमाहात्म्य, शिवस्तुति, नाट्याभिनयक प्रयोजनभूत कारण विषयक कारण-कथनगीत, पशुपति-स्तुति, कुराग प्रायश्चित्त-गीत, कहरा-गीत, शान्तिरस-गीत, आरती-गीत, देवी विज्ञप्ति-गीत तथा भरतवाक्य इत्यादिक विस्तृत विधानक पालन कयल गेल अछि। जगत्प्रकाशक नाटकमे एकर संक्षेपीकरण भऽ गेल अछि। निर्वहण सन्धिक अन्तिम तीनू अंगक कोनो ने कोनो रूपमे निर्वाह करैत एहि संसारकेँ असार ओ अनित्य मानि ईश्वर ओ ईश्वरीक भक्ति करबाक आकांक्षा नायक, नायिका अथवा अन्य प्रमुख पात्र द्वारा व्यक्त कयल जाइछ तथा एतद्विषयक मैथिली गीतक गायन

कयल जाइत अछि। नलीय नाटकक अन्तमे काव्यसंहारक सूचना दैत नल कहैत छथि—

हे विदर्भाधिव, हे लोके। हम पियाअ दुहू व्यक्ति
वनवास राज्यभ्रष्ट ते सबहि बहुत क्लेश पाओल।
ईश्वरीक प्रसादे पुनु राज्य प्राप्ति भेल, ते
असार ई संसार, ते निमित्ते ईश्वरीक चरणारविन्द
परायण भयकहु जन्म नीत करब।

मंच पर उपस्थित सब पात्र एकर समर्थन करैत अछि तथा शिव-पार्वतीक स्तुति-गीत गावि भरतवाक्यक पाठ करैत अछि।

गीत निम्नप्रकारक अछि—

चन्द्रशेखर शिव त्रिभुवन नाथ।
तन्हि पद लग रहु हमे दुहु साथ ।।
एहि लाइ सुमरब देव इसान।
परसन होअथु सदा शिव जान ।।
भूत गण संग तुअ वास मसान।
वाम दिस पारवति धरय सुवान ।।
जगतप्रकाश चांदशेखर सुभाव।
धरम करम दिने तोहहि पाव ।।

प्रभावती हरण नाटकमे पहिने काव्यसंहारक किछु अंश कहि संसार-असारताक भाव सूचित करैत शिवक वन्दना-गीत अछि—

मन हमरा एहि भेला ।।
हमे सब जानल संसार असार, सार एक शिव नाम।
महेशक शिरे गंगाजल धार, एहि सेवि नहि होए वाम ।।
शिवपद सेव एके न कर विचार, हम सेवय एहि ठाम।
प्रकाश नृपति कह तोहे अधार, पूरह मनक काम ।।

ईश्वर-भक्तिक महत्ता स्वीकार कऽ पुन: काव्य-संहार ओ पूर्ववाक्य कहल गेल अछि, तखन भरतवाक्य पढ़ल गेल अछि। तदुत्तर पंचम रागमे झूमरि गीत गाओल गेल अछि जाहिमे भगवतीक विनती कयल गेल अछि—

कृपा करह जगत जननि माता।
तोहो भवानि सब लोकक धाता ।।

खीन सेवक हमे देखि कर करुणा।
कि कहव माता तोहर गुना॥
जगतप्रकाश नृपति कर विनती।
जनम जनम होउ तोर पद मती॥

प्रभावती हरण नाटकक अतिरिक्त जगत्प्रकाशक अन्य सब नाटकक चरमान्तमे अनिवार्य रूपसँ संसार-अनित्यताक भाव व्यक्त करैत एकटा गीतक विधान अछि जे पंचम रागमे निबद्ध झूमरि गीत थिक, जकर गान सब पात्र मीलि कऽ करैत अछि। गीत दार्शनिक भाव-सम्पत्तिसँ परिपूर्ण अछि। कमलदल पर स्थित जल-विन्दु सदृश ई शरीर अस्थिर अछि। सांसारिक समस्त वैभव, मित्र, परिजन सब क्षणभंगुर अछि। ईश्वर शरीरक सृष्टि कयलनि जाहिमे राजा थिक मन एवं अन्य अवयव ओकर दास थिक। एहि चंचल मनक कारणे अधर्म, अपयश, त्रास भेटैत छैक—

अथिर कलेवर जानु हे
कमल पातक जल तुले॥ध्रु०॥
भवन कनक जन रजत आदि जत
थिर नहि रह सब जने।
सुतमित सब धन सुख दुख शरीर
अथिर जानल मने॥
सिरजल शरीर ईसर सबकाँ
मन नृप अवयव दासे।
मनहि पावए पुने अधरम अपजस
मन बसे पावए तरासे॥
जगत् प्रकाश आस कएल तोहर
चाँदशेखर दुहु भाय।
जगत् जननि पद हेठहि राखह
दुहु जनक दुहु काय॥

जगत्प्रकाशक अन्यान्य सब नाटकक अन्तमे एहि गीतक गायन कयल गेल अछि अथवा एकर गायनक संकेत देल गेल अछि। एहिठाम एकटा रोचक तथ्य सूचित करब आवश्यक लगैत अछि जे परवर्त्तीकालक नाटककार जितामित्रमल्लक **कालिय-मथनोपाख्यान** ओ **मदालसाहरण** नाटकमे तथा भूपतीन्द्र मल्लक **भाषा नाटक**मे सबसँ अन्तमे एही गीतक गायन करबाक निर्देश भेटैत अछि।

जगत्प्रकाशमल्लक नाटक सबमे अंक-विभागक प्रक्रिया नाट्यशास्त्रीय अंक-विधानसँ सर्वथा भिन्न अछि। समस्त नाट्यवस्तु छोट-छोट दृश्यमे विभक्त अछि

जकरा, नेवारीमे लु कहल जाइछ। जगज्ज्योतिर्मल्ल एकरा **'सम्बन्ध'** नाम देने छथि। एक काल तथा एक स्थानक घटनाकेँ एक लु मे राखल गेल अछि। क्वचित् एक लु मे स्थानक परिवर्तनो देखल जाइत अछि।

एकहि नाटकक अभिनय एकसँ अधिक दिनमे सम्पन्न होइत छल। एक दिनमे जतबा नाट्यवस्तु अभिनीत होइत छल तकरा एक अंकमे राखल जाइत छल। अतः एहि अंक सबकेँ अंक नहि कहि दिवसांक कहब बेसी उपयुक्त अछि।

आरम्भिक अंकक अन्तमे निर्देश रहैत अछि 'इति प्रथमाङ्कः'। एहि सँ आगाँ, अंकक आदि ओ अन्तमे क्रमशः 'अथ द्वितीय दिवसे...इति द्वितीयाङ्कः', 'अथ तृतीय दिवसे...इति तृतीयाङ्कः' निर्दिष्ट रहैत अछि। अन्तिम अंकक अंक-समाप्तिक सूचना रहितो अछि आ नहियो रहैत अछि।

लु(दृश्य) ओ अंकमे कोनो सामंजस्य नहि रहैत अछि। कोनो लु(दृश्य)क समाप्तिक पश्चात् अंक-समाप्ति हो से आवश्यक नहि। उदाहरणार्थ प्रभावती हरणक लु एवं अंक योजनाकेँ देखल जा सकैत अछि। सातम लु मे कृष्ण, रुक्मिणी सत्यभामा प्रवेश करैत छथि। दुइटा संवाद होइत अछि—

कृष्ण—हे प्रिये खनेक विश्राम करू।

रुक्मिणी-सत्यभामा—नाथ ! अवश्य।

एकरा बाद प्रथम अंकक समाप्ति सूचित कयल जाइछ। सातम लु केर शेष भाग ओ अग्रिम कथा द्वितीय दिवसमे अभिनीत होइत अछि। एहिना बारहम लु केर मध्यमे द्वितीय अंक समाप्त भऽ जाइछ। तथा ओहीठामसँ तृतीय दिवसक अभिनय आरम्भ होइत अछि।

नाटक सब बहुदिवसीय होइत छल। एक दिनमे नाट्यवस्तुक जतबा अंशक अभिनय होइत छल तकरा एक अंक मानल जाइत छल। एहि क्रममे कोनहु दृश्यक मध्यहुमे अंक-समाप्ति भेलापर तथा दृश्यक मध्यहिसँ अग्रिम अंकक अभिनय अग्रिम दिन कथावस्तुक ओहि विन्दुसँ आरम्भ भेलासँ, जतऽ पूर्व दिन समाप्त भेल छल, अभिनेयतामे कोनो अभिघात वा व्यवधानक अनुभव नेपालीय प्रेक्षककेँ नहि होइत छलैक। एहि प्रकारक नाट्य प्रक्रियासँ नेपालीय प्रेक्षक पूर्ण परिचित ओ अभ्यस्त छल।

एहि प्रकारक अंक-विभाजन नाटककार द्वारा कयल जाइत छल वा नाट्याभिनय कयनिहारक अपन सुविधानुसार कयल जाइत छल तकर निश्चय करब संभव नहि भऽ सकल अछि। परन्तु जगत्प्रकाशक जे नाटक सब उपलब्ध अछि ताहिमे दुइ नाटककेँ छोड़ि शेष सब तीन अंकमे विभाजित देखल जाइत अछि। परन्तु **उषाहरण नाटक** चारि अंकमे विभाजित अछि। दोसर दिस **नलीयनाटक**मे अंकविभाजनक कोनो संकेत नहि अछि। एकटा वृहत् नाटक होइतो अंकक विभाजन नहि रहब आश्चर्यजनक लगैत अछि। संभव अछि जे प्रतिलिपिकारक प्रमादवशात् अंक-निर्देश

छूटि गेल हो। नलीय नाटक जगत्प्रकाशक अन्य नाटकक अपेक्षा बहुत पैघ अछि तेँ एक दिनमे ओकर अभिनय सम्पन्न होयब संभव नहि। अतः ओहिमे तीन वा तीनसँ अधिक अंक अवश्य रहल होयत।

प्रवेशगीत ओ पात्र-परिचय नेपाली मैथिली रंगमंचक विशिष्ट उपादान थिक। नाटकमे जखन कोनो एकपात्र वा पात्र-समूह प्रथमतः रंगभूमिमे प्रवेश करैत अछि तँ प्रवेशसँ पूर्व ओकर सूचना गीत द्वारा देल जाइत अछि जाहिमे पात्रक रूप, परिधान, चरित्र, गुण ओ अन्य परिचय-सूचक परिगणन रहैत अछि। वैह थिक प्रवेशगीत। ई गीत कतहु प्रवेश कयनिहार प्रमुख पात्रक उक्तिक रूपमे रहैछ अथवा पात्र-निरपेक्ष कथन रूपमे। दुहू प्रकारक प्रवेश गीतक एक-एक गोट उदाहरण देखल जा सकैत अछि।

नलीय नाटकमे विदर्भ नरेश भीम सपरिवार प्रवेश करैत छथि। एकर सूचना भीमक उक्ति रूपमे प्रदत्त प्रवेश-गीतमे देल गेल अछि—

नरपति भीम भन जगत बखाने।
कलावति रानि तोहे चतुर सुजाने।।
मन्त्र निपुन मन्त्रि अति बुद्धिमाने।
कोटवार सखि दुहु वानिहु पखाने।।
कुमरि दमयन्ति सुन्दर रूपे।
त्रिभुवन नहि सम तोहर सरूपे।।

प्रभावतीहरणमे कृष्णादिक प्रवेशक सूचना जाहि गीत द्वारा देल गेल अछि से पात्र-निरपेक्ष-उक्तिक रूपमे प्रयुक्त प्रवेशगीतक उदाहरण थिक—

पीत बसन वर चारि करे।
शंख चक्र गदा पदुम धरे।।
सुतदार सहित कयल परवेश।
देल अभय दूर कयल कलेश।।

प्रवेशगीत मध्यकालीन मैथिली नाटकक महत्त्वपूर्ण विशेषता छल। एकर प्रयोग मिथिलाक कीर्तनियाँ नाटकमे अनिवार्य रूपमे होइत रहल अछि। असममे अंकीया नाट रूपमे मैथिलीक जे नाट्य परम्परा विकसित भेल, ओहुमे एहि प्रवेश-गीतक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। परन्तु प्रवेश कयनिहार कोनो प्रमुख पात्रक उक्ति-हुक रूपमे प्रवेश-गीतक योजना जगत्प्रकाश सहित नेपालक अन्यहु नाटकमे सर्वत्र देखल जाइत अछि। प्रवेश-गीत सम्बन्धी ई विशेषता प्रायः जगत्प्रकाशेक देन थिक।

मंचपर जखन कोनो पात्र वा पात्र-समूह प्रवेश कऽ जाइत अछि तखन आरम्भ

होइत अछि पात्र-परिचय। प्रत्येक पात्र बरीयता क्रमसँ अपन-अपन परिचय एक-एक गोट संस्कृत श्लोकमे दैत जाइत अछि। एहि आत्मपरिचय-श्लोकमे पात्र अपन गुण, वैशिष्ट्य तथा मंचपर उपस्थित अन्य पात्रसँ अपन सम्बन्धक सूचना दैत अछि। एहिसँ प्रेक्षक पात्र विशेषक परिचय प्राप्त कऽ लैत अछि जाहिसँ आगाँ अन्य दृश्यमे ओकर उपस्थित भेला पर चिन्हबामे भ्रम नहि होइत छैक। पूर्ववर्त्ती अध्यायमे पात्र-परिचय विषयक उद्धरण देले गेल अछि जाहिसँ एकर प्रकृतिक अभिज्ञान भऽ जा सकैछ, तेँ एतऽ कोनो उद्धरण देब अनावश्यक।

जगत्प्रकाशक नाटकमे कथावस्तुक अनुरोधेँ बेर-बेर पात्र सब प्रवेश ओ निष्क्रमण करैत रहैत अछि। एकरा **'पैसार'** ओ **'निस्सार'** कहल जाइत अछि। एकरहुमे किछु नियमन देखल जाइछ। कखनो काल पात्रक पैसार ओ निस्सारक संकेत राग द्वारा देल जाइत अछि ओ कखनो गीत द्वारा। एहि गीतकेँ क्रमशः **'पैसार गीत'** ओ **'निस्सार गीत'** कहल जाइछ। पैसार गीतमे पात्र अपन उद्देश्यक वा प्रयोजनक उल्लेख करैत मंच पर प्रवेश करैत अछि। तहिना मंचपर सँ प्रस्थान करबा काल अपन प्रस्थानक उद्देश्य ओ अग्रिम कार्य करबाक उल्लेख करैत निस्सार गीत गबैत निष्क्रमण करैत अछि। ई दुहु कोटिक गीत प्रवेश कयनिहार वा निष्क्रमण कयनिहार पात्रक उक्तिक रूपमे रहैत अछि।

जगत्प्रकाशक नाटकमे नाट्यशास्त्रमे विहित सूच्य कथावस्तुक साधन विष्कम्भक, प्रवेशक, अंकावतार, पताका, प्रकरी इत्यादिक कथमपि प्रयोग नहि भेल अछि। एकरा स्थानमे एकटा विशिष्ट कोटिक नाट्य साधन **कोणभाषाक** प्रयोग भेल अछि। कोणभाषाक दुइ गोट स्थिति होइत अछि—प्रथम कोणे तथा द्वितीय कोणे। कोण भाषामे भूत ओ भावी घटनाक सूचना देल जाइत अछि। परन्तु ई कम स्थल पर देखल जाइत अछि। विशेषतः एकर प्रयोग दृश्य-परिवर्तन, स्थान-परिवर्तन ओ काल-परिवर्तनक सूचना हेतु कयल जाइत अछि। कोनो दृश्यमे कोनो पात्र जखन प्रवेश अथवा निष्क्रमण करैत अछि तखन कोणभाषाक आश्रय लैत अछि। एकगोट पात्र रहने स्वगत भाषण रूपमे तथा अधिक पात्र रहने उत्तर-प्रत्युत्तर रूपमे रहैत अछि। पात्र-निष्क्रमणक सूचनाक पश्चात् प्रथम कोणमे जाय एक पात्र गन्तव्य स्थान पर जयबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि अथवा जयबाक प्रस्ताव करैत अछि, अन्य पात्र ओकर समर्थन करैत शीघ्र चलबाक अनुरोध करैत अछि। पुनः दोसर कोणमे जाय अन्य पात्र गन्तव्य स्थानपर पहुँचबाक सूचना दैत शीघ्र चलबाक प्रस्ताव दैछ, तखन प्रथम पात्र ओकर समर्थन करैत क्षणेक विश्राम करबाक अथवा ओहि ठामक दृश्य देखबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि अथवा अन्यहि कोनो प्रसंगानुकूल विषय कहि एकर समर्थन करैत अछि। एहि तरहेँ स्थान-परिवर्तन अथवा दृश्य-परिवर्तन सूचित भऽ जाइछ। एहिमे प्रथम कोणक संवाद पूर्वस्थानसँ निष्क्रमण सूचित करैत अछि तथा द्वितीय कोणमे जाय कहल

गेल संवाद गन्तव्य स्थान पर पहुँचि जयबाक सूचक होइत अछि।

नाट्यवस्तु

जगत्प्रकाश अपन नाटकक हेतु नाट्यवस्तुक चयन पुराण सबसँ करैत छथि। विशेष रूपसँ प्रसिद्ध घटनाक प्रति नाटककारक आकर्षण स्वाभाविक अछि। एहन घटनाक इतिवृत्तसँ प्रेक्षक सामान्य रूपसँ परिचित रहैत अछि तेँ रस ग्रहण करबामे सौविध्य होइत छैक। कृष्णचरित, प्रभावतीहरण, उषाहरण, पारिजातहरण, नल-दमयन्ती कथा अत्यन्त प्रसिद्ध रहल अछि। एकर सभक प्रत्यक्षीकरणसँ मध्यकालक प्रेक्षकगण निर्बाध आनन्दक अनुभूति प्राप्त कऽ सकैत छल। किन्तु कतोक नाटकक कथावस्तु सर्वथा अप्रसिद्ध अछि। मलयगन्धिनीक कथा, मदन-चरित्र, मूलदेव शशिदेवक उपाख्यान कोन पुराणसँ ग्रहण कयल गेल अछि से कहब कठिन अछि। इहो संभव अछि जे लोक प्रसिद्ध कथाकेँ नाटककार अपन कल्पनासँ संवलित कऽ ओकरा पौराणिक आवरण चढ़ा देने होथि। माधव-मालति नाटकक कथावस्तु तँ स्पष्टे भवभूतिक मालती माधव नाटकसँ लेल गेल अछि।

जगत्प्रकाशक नाटकक कथावस्तु सामान्यतः एहन रहैत अछि जाहिसँ काव्यानन्द ओ मनोरंजनक संगहि धार्मिक मनोवृत्तिकेँ सन्तुष्टि भऽ सकय। एहि हेतु यदि नाटककारकेँ आयासपूर्वक धार्मिक प्रसंग जोड़बाक प्रयोजन बुझि पड़लनि तँ ओहिमे तारतम्य नहि देखौलनि।

हुनक नाटकक कथावस्तुक स्वरूप ओ प्रकृतिसँ परिचित होयबाक दृष्टिएँ, एतऽ हुनक किछु प्रसिद्ध नाटकक संक्षिप्त कथावस्तु देल जा रहल अछि।

प्रभावती हरण

कृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, गद, सारण, प्रद्युम्न ओ शाम्ब प्रवेश करैत छथि तथा क्रमशः अपन अपन परिचय संस्कृत श्लोक द्वारा दैत छथि। पश्चात् कृष्णक कहला पर सब गोटे उपवन देखबाक हेतु चलि दैत छथि। कृष्णक आज्ञासँ गद, सारण, प्रद्युम्न ओ शाम्ब राज्यक चिन्तामे चलि दैत छथि आ कृष्ण, रुक्मिणी ओ सत्यभामा उपवनक सौन्दर्यसँ अभिभूत भेल शृंगारिक वार्त्तामे निमग्न भऽ जाइत छथि।

अनन्तर इन्द्र, जयन्त, हंस, हंसी प्रवेश करैत छथि तथा क्रमशः अपन अपन परिचय दैत छथि। इन्द्र हंस तथा शुचिमुखी ओ मृदुमुखी हंसीकेँ आदेश दैत छथिन जे ई तीनू गोटे वज्रपुर जाय वज्रनाभकेँ मारबाक हेतु प्रभावती ओ प्रद्युम्नक मिलन कराबथि। हंस-हंसी इन्द्रक कार्यसँ वज्रपुर चलि दैत छथि।

तत्पश्चात् वज्रनाभ, रानी प्रेमवती, अनुज सुनाभ, मंत्री सुनीति, पुत्री प्रभावती, भतीजी चन्द्रावती, सेवक मत्त, ओ सैरन्ध्रीक संग प्रवेश करैत अछि।

सभ गोटे क्रमशः अपन अपन परिचय दैत अछि। दैत्यराज सभाभवन दिस आ प्रभावती अपन महल दिस प्रस्थान करैत छथि। एही समय हंस आ हंसी दिव्य सरोवर पर पहुँचैत अछि। ओतहि वज्रनाभ सेहो पहुँचि हंस-हंसीकेँ अयबाक कारणक जिज्ञासा करैत अछि। हंसी वज्रनाभकेँ कहैत अछि जे हमरालोकनि अहाँक नगर देखबाक हेतु आयल छी। पछाति वज्रनाभ अन्तःपुर दिस विदा भऽ जाइत अछि आ हंस-हंसी सरोवरे पर रुकि जाइत अछि।

श्रीकृष्ण, रुक्मिणी ओ सत्यभामाक संग प्रवेश करैत छथि। श्रीकृष्ण जिज्ञासा करैत छथि जे प्रातःकाल भेलहु उत्तर प्रद्युम्न, गद, शाम्ब, आदि नहि अयलाह अछि। एही समय प्रद्युम्न, गद, शाम्ब ओ सारण अबैत छथि। औपचारिक प्रणिपातक बाद सभ गोटे सभास्थान दिस चलि पड़ैत छथि।

एम्हर हंस आ हंसी वज्रपुरमे सरोवरक सौन्दर्य-दर्शनमे लागल अछि। तावत प्रभावती अपन सखीक संग सरोवर पर अबैत छथि। कुतूहलवशात् प्रभावती हंस-हंसीसँ परिचय करैत छथि। हंसी प्रभावतीक युवावस्था पर खेद प्रकट करैत कहैत अछि जे पतिक अभावमे ई निरर्थक बनल अछि। प्रभावती कहैत छथि जे हम तँ अन्तःपुरमे अवरुद्ध छी तेँ अहीं जँ कोनो उपाय करी तँ पतिक प्राप्ति भऽ सकैछ। एहि पर हंसी कहैत छैक जे अहाँ सन राजकुमारीक हेतु सुयोग्य वर एकमात्र श्रीकृष्णपुत्र प्रद्युम्नेटा भऽ सकैत छथि। प्रभावती प्रारम्भमे पिताक वैरी श्रीकृष्णक पुत्रसँ विवाह करबामे ततमत करैत छथि मुदा पछाति मानि जाइत छथि आ पूर्वरागक कामदशासँ ग्रस्त भऽ उठैत छथि। प्रभावती हंसीकेँ शीघ्रातिशीघ्र मिलनक युक्ति करबाक आग्रह करैत छथि। एहि पर हंसी हुनका कहैत अछि जे ओ अपना पितासँ कहथि जे तीनटा हंसी अनेक कौतुक वार्त्ता जनैत अछि तनिकासँ अपने भेंट करी। प्रभावती पिताक महल दिस आ हंस-हंसी अन्य सरोवर दिस प्रस्थान कऽ जाइत अछि।

प्रभावती अपन पिता वज्रनाभकेँ अनेक देशक वार्त्ता जननिहार हंस-हंसीक भेंट करबाक आग्रह करैत छथि। वज्रनाभ हंस-हंसीकेँ बजबैत अछि आ कोनो अपूर्व कथा कहबाक आग्रह करैत अछि। हंसी कहैत अछि जे त्रिभुवनमे एखन भद्र समान दोसर नट नहि अछि। वज्रनाभ भद्रनटसँ भेंट चाहैछ। तखन हंस-हंसी ओकरा बजयबाक हेतु चलि दैत अछि। कृष्णक समीप पहुँचि हंस हुनकासँ निवेदन करैत अछि जे—हे कृष्ण! दानवराज वज्रनाभ देवतालोकनिकेँ बड़ कष्ट दैत छथि। तेँ अहाँ अपन पुत्र वज्रपुर पठाय वज्रनाभकेँ मारि देवतालोकनिक कार्यसाधन करू। इन्द्र अपनेसँ एहि हेतु विनती कयल अछि।' ई सुनि कृष्ण प्रद्युम्नकेँ पठयबाक हेतु तैयार भऽ जाइत छथि। कृष्णक आज्ञासँ प्रद्युम्न, गद, शाम्ब आदि नट रूपमे वज्रपुर चलि पड़ैत छथि। कृष्ण आ सारण सेहो संग्राम देखबाक हेतु वज्रपुर विदा होइत छथि।

वज्रनाभ आ प्रेमवती प्रवेश कऽ परस्पर प्रेमालाप करैत देखि पड़ैत छथि। एकर बाद सुनाभ, मंत्री, मत्त आदि वज्रनाभक निकट पहुँचैत अछि। हंस भद्रनट रूप प्रद्युम्नकेँ वज्रनाभक सभामे अनैत अछि। वज्रनाभक आज्ञासँ भद्रनट बनल प्रद्युम्न, शुभनट बनल गद ओ चारुनट बनल शाम्बक संग श्रीरामोत्पत्ति प्रसंगक ऋष्यश्रृंग ऋषिक आगमन-प्रसंगक नाट्य प्रस्तुत करैत छथि। वज्रनाभ नाट्य देखि प्रसन्न होइछ आ पुनश्च दोसर घड़ी नाट्य प्रस्तुत करबाक आज्ञा दऽ पिताक दर्शनार्थ प्रस्थान कऽ जाइछ। प्रभावती सखीक संग अन्तःपुर चल जाइत छथि आ हंसी प्रद्युम्नकेँ प्रभावती लग युक्तिपूर्वक पहुँचबाक मन्त्रणा दऽ स्वयं प्रभावती लग चलि जाइछ। एम्हर मालिनि द्वारा पुष्पमाला लऽ प्रभावती लग जयबाक काल प्रद्युम्न पुष्पक उपर भ्रमर रूपमे बैसि अन्तःपुर पहुँचैत छथि। प्रभावती शुचिमुखी हंसीक समक्ष विरहातुरा भेलि प्रद्युम्नसँ मिलनक आकांक्षा व्यक्त करैत छथि। प्रद्युम्न तखन प्रत्यक्ष होइत छथि। प्रभावती लजा जाइत छथि आ हंसीक आज्ञासँ प्रद्युम्नकेँ वरमाला पहिरा दैत छथि। दुनू प्रेमी-प्रेमिकाक मिलन कराय हंसी इन्द्रकेँ समाद कहबाक हेतु जाइत अछि। प्रभावती अपन सखीकेँ ई मिलन-वार्त्ता नुकय-बाक आग्रह करैत छथि मुदा ओ प्रभावतीक माताकेँ ई समाद कहि दैत अछि। एम्हर प्रभावती ओ प्रद्युम्नकेँ श्रृंगारवार्त्ता होइछ। मिलनक पश्चात् प्रद्युम्न अपन वासस्थान जाइत छथि। एही समय चन्द्रावती आ गुणवती प्रभावतीसँ भेंट करबाक निमित्त अबैत छथि। प्रभावती दुनूकेँ अभीष्ट पति पयबाक आशीर्वाद दैत छथि।

गुणवती आ चन्द्रावती प्रभावतीक चेष्टासँ ई अनुमान करैत छथि जे हिनका अवश्ये कोनो पुरुषसँ संगति भेलनि अछि। दुनू प्रभावतीसँ अपना हेतु अभीष्ट स्वामी कऽ देबाक आग्रह करैत छथि। प्रभावती प्रद्युम्नक सहायतासँ दुनूक विवाह क्रमशः शाम्ब आ गदसँ करबैत छथि। प्रद्युम्नक संग प्रभावती पुष्पवाटिका जाइत छथि। एम्हर गद ओ चन्द्रावतीक परस्पर मिलन होइत अछि।

अनन्तर कश्यप मुनि अपन शिष्यद्वय सुबोध आ प्रबोधक संग प्रवेश करैत छथि। तावत् वज्रनाभ ओ सुनाभ सेहो अपन पिता कश्यप मुनिक आश्रममे अबैत छथि। वज्रनाभ मुनिसँ राजसूय यज्ञ करबाक अपन इच्छा व्यक्त करैत छथि। मुदा कश्यप मुनि मना करैत छथिन आ घर घुरबाक आज्ञा दैत छथिन। वज्रनाभ ओ सुनाभ घर घुरि जाइत छथि।

एकर बाद ब्राह्मण आ ब्राह्मणी कश्यपक आश्रममे आबि पुत्र-प्राप्तिक इच्छा व्यक्त करैत छथि। कश्यप हुनक इच्छा पूर्ण होयबाक वर प्रदान करैत छथि। कश्यप ऋषि अपन दुनू शिष्यक संग तपश्चर्यामे लागि जाइत छथि। अनन्तर शाम्ब आ गुणवती श्रृंगारमण्डपमे जाय परस्परानुरक्तिक लाभ उठबैत छथि। एम्हर प्रद्युम्न आ प्रभावती प्रवेश करैत छथि। प्रद्युम्न शाम्बसँ भेंट करऽ जाइत छथि आ गद ओ चन्द्रावती प्रद्युम्नसँ भेंट करबाक हेतु अबैत छथि। पछाति सखी द्वारा रानीकेँ पता लगैछ जे प्रभावतीक अन्तःपुरमे कोनो पुरुषक प्रवेश भेल अछि। वज्रनाभ ओ सुनाभक अयला पर रानी ई वार्त्ता वज्रनाभकेँ दैत छथि। वज्रनाभ ओहि दुस्साहसी पुरुषकेँ मारबाक हेतु प्रस्थान करैत अछि। ओकरा संग सुनाभ, मत्त आदि सेहो जाइत अछि। ई बात जखन प्रद्युम्नकेँ पता लगैत अछि तँ ओहो युद्धक हेतु सज्जित होइत छथि।

वज्रनाभ पुत्रीक अन्तःपुर आबि प्रद्युम्नकेँ देखैत अछि आ परिचय पुछैत अछि। प्रभावती डेरा जाइत छथि मुदा प्रद्युम्न हुनका सांत्वना दैत कहैत छथिन जे ओ शीघ्रे सबकेँ मारि देताह। प्रभावती प्रद्युम्नकेँ ब्रह्माक देल अमोघ अस्त्र प्रदान करैत छथि। सुनाभक संग गद ओ शाम्बक तथा प्रद्युम्नक संग वज्रनाभक ललका-ललकी होइत अछि। एही समय श्रीकृष्ण सेहो सारण आदि परिजनक संग जूमि जाइत छथि। श्रीकृष्ण प्रद्युम्नकेँ सारङ्ग धनुष दैत छथि। युद्ध होइत अछि आ वज्रनाभ मारल जाइत अछि। युद्धस्थल पर वीभत्स दृश्य उपस्थित भऽ जाइछ। भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी मुदित भऽ नाचऽ लगैछ। आँत, करेज इत्यादिक काँच मांस खाय लगैछ। डाकिनी सभ लिधुर पिबऽ लगैछ। गिद्ध समूह उतरि कऽ हाथ-पैर नोचि-नोचि खाय लगैछ।

दैत्यरानी प्रेमवती कोलाहल सुनैत छथि। सखी युद्धक सूचना दैछ। ओ पतिक मृत्यु जानि पतिवियोगक शोकसँ सन्तप्त भऽ विलाप करऽ लगैत छथि आ विलाप करैत मूर्च्छित भऽ जाइत छथि।

श्रीकृष्ण वज्रपुरमे प्रद्युम्नक राज्याभिषेक करैत छथि। पछाति सबगोटे द्वारका प्रस्थान करैत छथि। द्वारकामे श्रीकृष्ण रुक्मिणी ओ सत्यभामाक संग प्रभावती, चन्द्रावती, गुणवती आदिक परिचय करबैत छथि। उत्सव होइत अछि। कृष्णक माध्यमे शान्ति रसक गीत होइत अछि। सब पात्र द्वारा ईश्वर ओ ईश्वरीक भक्ति करबाक संकल्पक संग नाटकक समापन होइत अछि।

उषाहरण

महादेव ओ पार्वती नंदी, भृंगी एवं अन्य प्रमथगणक संग अबैत छथि। विश्व-कर्माकेँ बजाय अपन प्रिय भक्त वाणासुरक हेतु शोणितपुर नामक नगरक निर्माण करबाक आदेश दैत छथि। विश्वकर्मा ओ अनुचरक चल गेला पर पार्वतीक संग विहार करैत छथि। प्रमथगण आबि शोणितपुरक निर्माण सम्पन्न भऽ जयबाक सूचना दैत छनि।

वाणासुर अपन रानी सुगन्धिनी ओ सुवेशाक संग अबैत अछि। ओही संग मन्त्री कुंभांड ओ विभांड सेहो अबैछ। दोसर दिनसँ वाणासुरक पुत्री उषा अपन सखी चित्रलेखा ओ सुलेखाक संग अबैत छथि। उषा अपन मनोकामना पूर्तिक हेतु

पार्वतीक पूजा-आराधनाक संकल्प व्यक्त करैत छथि। वाणासुर सेहो महादेवक तपस्या कऽ वर प्राप्तिक उद्देश्यसँ प्रस्थान करैत अछि।

वाणासुरक तपस्यासँ महादेव प्रसन्न भऽ ओकरा वर मङवाक हेतु कहैत छथिन। वाणासुर अपराजेयता ओ त्रैलोक्यराज्यक वरदान मङैत अछि। महादेव तथास्तु कहि वाणासुरक हेतु निर्मित शोणितपुरमे राजधानी बनाय शासन करबाक निर्देश दैत छथिन। वाणासुर वरदान पाबि उत्सवक आयोजन करैछ। शुक्राचार्य ओकर अभिषेक करैत छथिन।

वाणासुर त्रैलोक्यराज्य पाबि कामिनी-विलासमे मग्न भऽ जाइछ। पूर्ण सन्तुष्ट भेला पर अपन शक्तिक स्मरण होइत छैक। अपन शक्तिसँ मदमत्त भऽ मंत्रीकेँ बजाय कहैत छैक जे संग्रामक अभावमे हमर समस्त बल बेकार बूझि पड़ैत अछि। आब महादेवसँ पुछल जाय जे युद्धक लालसा कोना पूर्ण होयत। मन्त्री सहित कैलास पर्वत पर जाय महादेवसँ अभिमानसँ कहैत छनि जे विश्वमे कोनो बलशाली आब नहि रहल जकरासँ युद्ध करी। तेँ ई सहस्रबाहु ओ त्रिलोकक अखंड राज्य भारवत् बूझि पड़ैत अछि। हमर युद्धक आकांक्षा कोना पूर्ण होयत? महादेव वाणासुरक मनक अभिमान बूझि मयूरध्वज प्रदान करैत कहैत छथिन जे एकरा अपन दुर्गक सिंहद्वारपर गाड़ि देब। जहिया ई टूटि कऽ खसि पड़त तहिया बलशाली योद्धासँ युद्धक मनोरथ पूर्ण होयत।

कृष्ण अपन परिवारक समस्त सदस्यक संग अबैत छथि। अपन-अपन परिचय दऽ सब अपन-अपन काजमे चल जाइछ। कृष्ण रुक्मिणी ओ सत्यभामाक संग एकांत निकुंजमे विहार करैत छथि।

वाणासुरक कन्या उषा गौरी सरोवरक शोभा देखऽ जाइत छथि। ओहि ठाम गौरीशंकरकेँ विहार करैत देखि भक्तिपूर्वक प्रणाम करैत छथि। किन्तु उषाक मनमे ओहने विहार करबाक कामना जागि जाइत छनि। गौरी उषाक मनोरथ जानि, वर मङबाक हेतु कहैत छथिन परन्तु उषा लज्जावनत भऽ किछु नहि मङैत छथिन। गौरी सन्तुष्ट भऽ वर दैत छथिन जे वैशाख शुक्ल द्वादशीक रातिमे स्वप्नमे जे पुरुष आबि समागमसँ कौमार्यभंग करत सैह अहाँक पति होयत। उषा प्रसन्नमन अपन भवन अबैत छथि।

एक दिन सखी सब अकस्मात् उषाकेँ विकलतापूर्वक कनैत देखैत छनि। जिज्ञासा कयला पर उषा स्वप्नमे आयल पुरुष ओ ओकरा द्वारा कयल रतिव्यापारक कथा कहैत छथिन। कौमार्यभंग भेलासँ लोकापवाद होयबाक भयसँ आक्रान्त भऽ जाइत छथि। संगहि ओहि स्वप्न-पुरुषक विरहमे व्याकुल भऽ जाइत छथि।

चित्रलेखा उषाकेँ गौरी द्वारा देल वरदानक स्मरण करा दैत छथिन। उषाक विकलता देखि चित्रलेखा समस्त दिव्य ओ अदिव्य विशिष्ट पुरुषक चित्र बना देखबैत छथिन। ओहिमे एकटा चित्र देखि उषा लजा जाइत छथि। हुनक मुखमंडल

अरुणिम भऽ जाइत छनि। ओ माथ झुका लैत छथि। चित्रलेखा बुझि जाइत छथि जे वैह उषाक स्वप्न-पुरुष थिकथिन। ओ उषाकेँ बुझबैत छथिन जे ई पुरुष द्वारकाक श्रीकृष्णक पौत्र अनिरुद्ध छथि आ हिनका आनब अत्यन्त दुष्कर कार्य अछि। तथापि अपन सखीक उपकार हेतु अनिरुद्धकेँ अनबाक हेतु विदा होइत छथि। बाटमे नारदसँ भेंट होइत छनि। नारदकेँ अपन उद्देश्य कहैत छथिन। नारद चित्रलेखाकेँ तामसी विद्या सिखा दैत छथिन जाहिसँ अदृश्य भेल जा सकैत अछि।

द्वारकामे अनिरुद्ध अपन पत्नी सभक संग मनोविनोदमे मग्न छथि। तखने अदृश्य रूपमे आबि चित्रलेखा अनिरुद्धकेँ उषाक स्वप्न-दर्शनक कथा कहैत उषाक सौन्दर्य ओ विरहदशाक वर्णन करैत छथि। ओ अनिरुद्धसँ प्रार्थना करैत छथि जे चलि कऽ उषाक प्राण-रक्षा करू। अनिरुद्ध सेहो उषाक प्रेम ओ सौन्दर्यक कथा सुनि व्याकुल भऽ जाइत छथि तथा तुरन्त उषा लग पहुँचयबाक प्रार्थना चित्रलेखासँ करैत छथि। चित्रलेखा तामसी विद्याक बलेँ अनिरुद्धकेँ लऽ कऽ आकाशमार्गसँ उड़ि जाइत छथि। अकस्मात् अनिरुद्धक अलोपित भऽ गेलासँ अनिरुद्धक पत्नी लोकनि किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ विलाप करऽ लगैत छथि। चारू कात हल्ला भऽ जाइछ। कृष्ण, बलराम, युयुधान एवं अन्य यादवलोकनि अबैत छथि। सबकेँ एहि घटनापर आश्चर्य होइत छनि। कृष्ण अनिरुद्धक अन्वेषणक आदेश दैत छथि।

चित्रलेखा आकाशमार्गसँ अनिरुद्धकेँ लेने उषाक शयनागारमे उपस्थित होइत छथि। गन्धर्व विवाहक ओरिआन करबाक निर्देश सुलेखाकेँ दैत छथिन। पुष्पमाला परस्पर पहिराय उषा-अनिरुद्धक गन्धर्व विवाह होइत छनि। चित्रलेखा ओ सुलेखा लाथ लगाय निकसि जाइत छथि। उषा-अनिरुद्धक मिलन होइछ।

दुहु प्रेमी-प्रेमिका रतिव्यापारमे बेसुध छथि तखने चित्रलेखा समाचार दैत छथिन जे वाणासुरकेँ उषाक कोनो अज्ञात पुरुषक समागमक समाचार भेटि गेलैक अछि। तेँ ओ अनिरुद्धक बध करबाक लेल ससैन्य एमहर आबि रहल अछि। उषा भयातुर भऽ काँपऽ लगैत छथि। परन्तु अनिरुद्ध निर्भय रहि उषाकेँ आश्वस्त करैत छथिन। वाणासुरक मन्त्री कुंभांड ओ विभांड अनिरुद्धसँ युद्ध करैत अछि परन्तु अनिरुद्धक द्वारा कठोर परिघ-प्रहारसँ संज्ञाशून्य भऽ खसि पड़ैछ। वाणासुर स्वयं विभिन्न अस्त्रशस्त्रसँ प्रहार करैछ परन्तु अनिरुद्ध विचलित नहि होइत छथि। तखन ओ मायायुद्ध करऽ लगैछ आ नागपाशमे अनिरुद्धकेँ बान्हि दैछ। वाणासुर अनिरुद्ध-बध करबाक आदेश दैछ। परन्तु मन्त्री लोकनि बुझबैछ जे पहिने ई पता लगा ली जे ई वीरपुरुष थिक के? मन्त्रीक कहला पर वाणासुर बधक विचार छोड़ि हुनका कारागारमे धऽ दैछ। उषा ई संवाद सुनि प्राणत्याग करबाक लेल उद्यत होइत छथि परन्तु चित्रलेखा यदुवंशीलोकनिक बल ओ पराक्रमक परिचय दैत शान्त करैत छथिन। एहि समस्त घटनाकेँ नारद देखैत छथि।

द्वारकामे अनिरुद्धक कोनो समाचार नहि भेटलासँ चिन्ता व्याप्त भऽ जाइछ।

तखने नारद आबि अनिरुद्धक सकल समाचार कहैत छथिन । कृष्ण क्रुद्ध भऽ जाइत छथि । ओ गरुड़कें स्मरण करैत छथि । ससैन्य शोणितपुरक हेतु प्रस्थान करैत छथि ।

शोणितपुरमे वाणासुरक अग्निदुर्गमे चारू कातसँ ज्वाला उठैत रहैछ तें श्रीकृष्णक सेनाक प्रवेश असंभव भऽ जाइछ । गरुड़ गंगाजल-वर्षासँ अग्निज्वालाकें शान्त करैत छथि । सेना दुर्गमे प्रवेश करैछ । भयंकर युद्धमे वाणासुरक सेना सब निहत भऽ जाइछ । मन्त्री मूर्च्छित भऽ जाइछ । वाणासुर पराजयसँ भयत्रस्त भऽ महादेवक स्मरण करैछ । महादेव अपन भक्तक सहायतार्थ आबि युद्ध करऽ लगैत छथि ओ रुद्रज्वरक प्रयोग करैत छथि । एहिसँ कृष्णक समस्त सेना आक्रान्त भऽ जाइछ, केवल कृष्णे अप्रभावित रहैत छथि । कृष्ण विष्णुज्वरक प्रयोग करैत छथि जाहिसँ रुद्रज्वर निष्प्रभावी भऽ जाइछ । कृष्ण जृम्भकास्त्रक प्रयोग करैत छथि । एहि भयानक युद्धक परिणामसँ चिन्तित भऽ ब्रह्मा आबि कृष्ण ओ महादेवक स्तुति कऽ दुहूक अभेदत्वक वर्णन करैत छथि । दुहूकें युद्ध स्थगित करबाक प्रार्थना करैत छथि । वाणासुर तथापि कृष्णसँ युद्धक हेतु अग्रसर होइत अछि । महादेव वाणासुरकें बुझबैत ओकर भक्तिसँ सन्तुष्ट भऽ अपन गणमे उच्च स्थान दैत छथित । महादेव अपन गण सहित कैलास जाइत छथि ।

कृष्ण अनिरुद्धक संग उषाकें लऽ कऽ द्वारका पहुँचैत छथि जतऽ आनन्दोत्सव मनाओल जाइत अछि । कृष्ण एहि संसारकें असार ओ क्षणभंगुर कहैत परमेश्वरी-वन्दनाकें सार पदार्थ घोषित करैत छथि ।

पारिजातहरण

कृष्ण ओ रुक्मिणी रसपूर्ण वार्त्तालाप करैत रहैत छथि, तखने प्रद्युम्न इत्यादि आबि प्रणाम करैत छथिन । एही अवसर पर नारद आबि पारिजात पुष्प रुक्मिणीकें दैत कहैत छथिन जे ई पुष्प अहाँक लगमे अत्यधिक शोभा प्राप्त करत एवं अहाँक मनोरथ पूर्ण करत । अहाँ कृष्णक सबसँ प्रिय छियनि तें अन्य सपत्नीकें एहिसँ ईर्ष्या होयतनि । नारद ई सोचैत चल जाइत छथि जे आब रुक्मिणी ओ सत्यभामामे विग्रह अवश्यंभावी ।

सत्यभामाकें पारिजात-पुष्पक समाचार सखीसँ प्राप्त होइत छनि । ओ रोषपूर्वक मान कऽ लैत छथि । कृष्णक लाख मनौलो पर प्रसन्न नहि होइत छथि । कृष्ण स्वर्गक नन्दनवनसँ पारिजातक वृक्ष अनबाक वचन दैत छथिन । नारदकें बजाय इन्द्रक ओतऽ पठबैत छथिन जे किछु समयक लेल पारिजात वृक्ष देथि । सत्यभामाकें कृष्णक वचन पर प्रतीति होइत छनि तथा हुनक मान-मोचन होइछ ।

नारद इन्द्रकें कृष्णक संवाद कहैत छथिन जे इन्द्र जँ स्वेच्छासँ पारिजात वृक्ष नहि देताह तँ बलात् आनऽ पड़त । इन्द्र पारिजात वृक्ष देब अस्वीकार कऽ दैत छथिन । नारद आपस चल अबैत छथि । इन्द्र पारिजात वृक्षक सुरक्षा व्यवस्था कऽ देवगुरु बृहस्पति, कश्यप ओ अदितिक निकट जाय हुनकासँ एहि युद्धकें रोकबयबाक प्रार्थना करैत छथि ।

एम्हर नारदसँ इन्द्रक उत्तर सुनि कृष्ण बलभद्र, प्रद्युम्न ओ सात्यकि कें लऽ कऽ पारिजात वृक्ष आनऽ चलि दैत छथि । अमरावतीमे जाय कृष्ण पारिजात वृक्षकें जड़िसँ उखाड़ि गरुड़क पीठपर राखि लैत छथि । इन्द्रकें एकर सूचना भेटैत छनि । ओ आबि कृष्णकें कहैत छथिन जे पत्नीक मान रखबाक लेल अग्रजकें अपमानित करब धर्म नहि थिक । कृष्ण एकर प्रतिवाद करैत छथिन जे अमरावतीमे हमरहु हिस्सा अछि तें ई अधर्म नहि थिक । प्रद्युम्न ओ इन्द्रपुत्र जयन्तमे सेहो उत्तर-प्रत्युत्तर होइछ । प्रत्यक्ष युद्धक स्थितिक निवारण बृहस्पति, कश्यप ओ अदितिक द्वारा आबि कऽ बुझओला पर होइत अछि । अदिति अपनहि हाथें कृष्णकें पारिजात वृक्ष प्रदान करैत छथिन । कृष्ण पारिजात लऽ द्वारका अबैत छथि ।

पारिजात वृक्ष पाबि सत्यभामा अतीव प्रसन्न होइत छथि तथा उल्लासपूर्वक ओकर सविधि पूजा करैत छथि । नारद एहि यज्ञक दक्षिणाक रूपमे सत्यभामाकें अपन कोनो प्रियवस्तु दान करबाक हेतु कहैत छथिन । सत्यभामा लजा जाइत छथि तथा पति ओ पारिजात दुहूकें दक्षिणा रूपमे प्रदान कऽ दैत छथि । नारद दक्षिणामे प्राप्त उभय वस्तु पुनः सत्यभामाकें दऽ दैत छथिन तथा कृष्णसँ सायुज्य मुक्तिक याचना करैत छथि ।

नलचरित वा नलीय नाटक

राजा भीम अपन परिवार ओ पार्षदक संग प्रवेश करैत छथि । शासन व्यवस्थाक समीक्षा कऽ सबकें अपन-अपन कर्तव्यक निदेश दऽ विदा कऽ दैत छथि तखन अपन पत्नीक संग प्रेमालाप करैत छथि । दोसर दिन भीमक राजसभा लागल रहैत छनि जाहिमे हुनक कन्या दमयन्ती सेहो उपस्थित रहैत छथिन । तखनहि अनूप ओ सरूप नामक दुइ गोट भाट उपस्थित होइत अछि । ओ पहिने राजा भीमक प्रशंसा करैत अछि तखन अपन स्वामी राजा नलक रूप, गुण, शील, स्वभावक विस्तारपूर्वक वर्णन करैत अछि । राजा भीम दुहू भाटकें पुरस्कृत कऽ विदा करैत छथि तथा दमयन्तीक स्वयंवरक आयोजनक निश्चय करैत छथि ।

दुनू भाट नलक राजसभामे अबैत अछि । एहिठाम राजा भीमक कन्या दमयन्तीक अनिद्य सौन्दर्यक वर्णन करैत अछि । नल दुहूकें पुरस्कार दऽ विदा करैत छथि । दमयन्तीक प्रति नलक हृदयमे पूर्वराग उत्पन्न भऽ जाइत छनि । ओ व्याकुल भऽ सान्त्वनाक हेतु उपवनमे चल जाइत छथि । उपवनक सरोवरमे एक स्वर्णिम राजहंसकें जलक्रीड़ा करैत देखि ओकरा पकड़ि लैत छथि । ओ हंस नलकें

बड़ नीक लगैत छनि परन्तु हंसकें एहिसँ कष्ट होइत छैक। ओ कातर स्वरमे नलकें प्रार्थना करैत छनि मुक्त कऽ देबाक लेल। नलकें दया उत्पन्न होइत छनि आ ओ हंसकें मुक्त कऽ दैत छथिन। हंस कृतज्ञता-ज्ञापित करबाक हेतु नलकें कोनो इष्ट काज-सम्पादनक आदेश देबाक हेतु आग्रह करैत छनि। नलकें दमयन्ती-प्राप्तिसँ पैघ आन कोनो इष्ट नहि छलनि। हंस नलक इष्ट-सिद्धिक वचन दऽ कऽ उड़ि जाइछ।

हंस ओतऽसँ राजा भीमक उपवनक सरोवरमे अबैत अछि। ओही कालमे दमयन्ती अपन सखीसभक संग विचरण हेतु अबैत छथि। स्वर्णहंसकें पकड़बाक उत्कट इच्छा होइत छनि। मुदा सखी लोकनि ओहि दिस ध्यान नहि दैत छथिन। ओ स्वयं सरोवरतट धरि आबि जाइत छथि। हंसकें अपन विचार प्रकट करबाक उपयुक्त अवसर भेटि जाइत छैक। ओ दमयन्तीसँ वार्त्ताक क्रम जोड़बाक लेल एकटा कथाक कल्पना करैत कहैत छनि जे ब्रह्माक मुखसँ सुनल एकटा कथा अहाँ कही तँ सुना दी। दमयन्ती कथा सुनबाक हेतु उत्सुकता देखबैत छथि। तखन हंस कहैत छनि जे एक बेर हम ब्रह्मासँ जिज्ञासा कयलियनि जे अत्यन्त सौन्दर्यवान् नलराजाक हेतु समतूल कन्या के थिकथिन? तखन ओ कहलनि जे—नलक हेतु समतूल कन्या समग्र संसारमे एकमात्र दमयन्तीए छथिन। एहि मध्य ओ नलक रूप, गुण, ऐश्वर्य आदिक वर्णन कऽ दमयन्तीकें प्रभावित करैत रहैत छनि। दमयन्ती नल दिस आकृष्ट होइत जाइत छथि। हुनका हृदयमे नलक प्रति पूर्वराग उत्पन्न भऽ जाइत छनि। ओ नलकें पतिक रूपमे पयबाक हेतु व्याकुल भऽ जाइत छथि। ओ हंसकें अपन विवशता कहैत छथिन जे लज्जाशीला राजकुलकन्या होयबाक कारणें अपना मुहें की कहब? हमर यौवन निष्फल भऽ गेल। अहीं कोनो उपाय करू।

हंस दमयन्तीक मनोवृत्ति जानि हुनक नलक प्रति निष्ठाक परीक्षा हेतु कहैत छथिन जे-स्वयंवरमे अहाँ ककरो आनका वरण कऽ लिऐक तखन हमर बड़ उपहास होयत। दमयन्ती हंसक शंका-निवारणार्थ कहैत छथिन—हे राजहंस, जञो शर्वरीकाँ चन्द्र छाड़ि आन वरक शंका करिअ, पार्वती काँ महादेव छाड़ि आन पुरुषक शंका करिअ, तञो (हमराहु) नल छाड़ि अन्य पुरुषक शंका करब।'

हंस दमयन्तीक दृढ़ निश्चय जानि सन्तुष्ट होइत अछि आ नलक संग मिलनक वचन दऽ नलक ओतऽ अबैत अछि। नलकें समस्त वृत्तान्त सुनाय हुनका दमयन्ती-स्वयंवरमे जयबाक निर्देश दऽ चल जाइछ। नल स्वयंवरक हेतु प्रस्थान करैत छथि।

ओमहर कलह-प्रिय नारदकें दमयन्ती-स्वयंवरक कारणें कलह करयबाक अवसर नहि भेटैत छनि। निष्क्रियता दूर करबाक लेल अमरावती जाय देव ओ दिक्पाल लोकनिक समक्ष दमयन्तीक अनुपम सौन्दर्यक वर्णन कऽ हुनक स्वयंवरक

आयोजनक सूचना दैत छथिन। हुनका लोकनिक मोनमे दमयन्तीकें प्राप्त करबाक आकांक्षा बलवती भऽ जाइत छनि आ ओहो लोकनि स्वयंवरमे सम्मिलित होयबाक लेल विदा भऽ जाइत छथि।

मार्गमे इन्द्र, यम, कुबेर ओ वरुणकें नलसँ भेंट होइत छनि। ओ लोकनि राजा नलकें दमयन्तीक ओतऽ दूत बना कऽ पठबैत छथिन एहि सन्देशक संग जे दमयन्ती हमरा चारूमे सँ ककरो वरण करथि। ओ लोकनि नलकें दमयन्ती लग पहुँचबाक हेतु अलक्षित होयबाक विद्या सिखा दैत छथिन।

राजा नल उपवनमे विहार करैत काल दमयन्तीक निकट पहुँचैत छथि तथा देवता लोकनिक सन्देश सुनबैत छथिन। दमयन्ती उत्तर दैत छथिन जे—देवता हमारा हेतु समुचित वर नहि, ओ प्रणम्य छथि। हमर वर नरे, आन नहि भऽ सकैत छथि। (एहि ठाम नर शब्दमे र ल केर अभेदसँ नल सेहो विवक्षित अछि।) दमयन्ती अपन दृढ़ निश्चय सुना देलथिन जे हम नलहिकें वरण करब अन्यथा प्राण-त्याग कऽ देब। नलक विशेष बुझौला पर दमयन्ती क्षुब्ध ओ दुखी भऽ कानऽ लगैत छथि। तखन अनवधानमे नल अपन परिचय प्रकट कऽ दैत छथि। दमयन्ती आश्चर्यमिश्रित आनन्दसँ भरि जाइत छथि। नल पलटि कऽ देवता लोकनिक लग आबि सब समाचार यथावत् सुना दैत छथिन। देवता लोकनि अपनाकें अपमानित बुझि दमयन्तीकें मतिभ्रममे देबाक हेतु नलहिक रूपमे स्वयंवरमे जयबाक निश्चय करैत छथि।

स्वयंवरमे विभिन्न देशक राजा उपस्थित होइत छथि। नल जाहि ठाम बैसल रहैत छथि ताही ठाम चारू देवता नलक रूप धारण कऽ बैसि जाइत छथि। दमयन्ती वरमाला लेने यज्ञ-मण्डपमे अबैत छथि। सखी विचक्षणा एक-एक कऽ राजा सभक परिचय दैत जाइत छथिन। नलक लग आबि एकहि स्वरूपक पाँच व्यक्तिकें देखि दमयन्ती थकमका जाइत छथि। तखन ओ सरस्वतीक प्रार्थना करैत छथि। सरस्वती दमयन्तीकें छायाक आधार पर यथार्थ नलकें चिन्हबाक बुद्धि स्फुरित कऽ दैत छथिन। दमयन्ती नलक गरामे वरमाला पहिरा दैत छथि। देवता लोकनि अपनसन मुँह लेने चल जाइत छथि। मुदा अन्यान्य राजा सब युद्ध करऽ लगैत छथि जकरा नल राजा भीमक सहयोगसँ पराजित कऽ दैत छथि। नल-दमयन्तीक यथाविधि विवाह होइत छनि। दुहू वर-कनिञा कोबर जाइत छथि।

स्वयंवरसँ घुमतीकाल इन्द्रादि देवताकें स्वयंवरहिमे भाग लेबाक हेतु चल अबैत द्वापर ओ कलिसँ भेंट होइत छनि। इन्द्रादि द्वारा ई सूचना भेटला पर जे दमयन्ती नलक वरण कऽ लेलनि, द्वापर ओ कलि क्षुब्ध भऽ जाइत छथि तथा प्रतिशोध लेबाक हेतु दुहू नल-दमयन्तीक छिद्र तकबाक हेतु विदा भऽ जाइत छथि।

नल ओ दमयन्ती अपन राजधानी अबैत छथि। द्वापर ओ कलि हुनका पाछाँ

लागल रहैत छनि। नल-दमयन्ती दाम्पत्य-सुखमे डूबि जाइत छथि। किछु समयक पश्चात् एक बालकक जन्म होइत छनि। बालकमे चक्रवर्त्तीत्वक सब लक्षण विद्यमान रहितो सूर्यसँ नवम भावमे शनि तथा चन्द्रसँ चारिम भाव मंगल रहने मन्दयोग देखि पड़ैछ जकर फल माता-पिताकेँ कष्ट होइछ।

एही मध्य नलराजा पाद-प्रक्षालन-व्यतिरेक सन्ध्योपासन करैत छथि। ओही अशुद्धि जन्य छिद्रसँ कलि हुनका शरीरमे प्रवेश कऽ जाइछ। नल-दमयन्तीक दुर्योग एतहिसँ प्रारम्भ भऽ जाइछ। पुष्करराज कलिक प्रेरणा ओ आश्वासन पाबि नलक संग द्यूत खेलाइत अछि। कलिक प्रभावेँ नल राज-पाटक संग अपन वस्त्राभूषण पर्यन्त हारि जाइत छथि।

दमयन्ती अपन बालककेँ अपन पिता भीमक ओतऽ पठा दैत छथिन तथा स्वयं दुनू प्राणी वनगमन करैत छथि। अत्यन्त दुर्दशाक अवस्थामे अपनाकेँ देखि नलकेँ बड़ आत्मग्लानि होइत छनि। ओ एक दिन दमयन्तीकेँ सूतलि अवस्थामे छोड़ि हुनक आधा वस्त्र खण्ड लऽ अज्ञात दिशामे चलि दैत छथि। दमयन्ती जखन उठैत छथि तँ ओहि घोर निर्जन वनमे अपनाकेँ एकसरि पाबि क्रन्दन कऽ उठैत छथि। पतिक वियोगमे विलाप करऽ लगैत छथि—

बेदन बाढ़ल अति सहि नहि होइ प्राणपहु त्यजलहु मोहि।
कथि लागि जीओब भय पति बिनु नगरि अबे नहि हमहि सोहि॥
जुवति जौवन मोरि निफल गेल धनि बिष खाय नाशब प्राणे।
बसन नडाओब भूषण नडाओब सब बिधि नडाओब जाने॥
नलक सनेहि देहि कतहु संचर अबे बिनति न मानल ओहि।
हृदयक अनुराग नलहि सओं लागल सेहे पहु त्यजलहु मोहि॥

ओही समयमे एकटा व्याधा अबैत अछि जे दमयन्तीकेँ एकसरि ओ अबला जानि अनुचित आचरण करऽ चाहैत अछि। परन्तु दमयन्तीक शापसँ भस्म भऽ जाइत अछि। हताश भऽ ओ प्राणत्याग करऽ चाहैत छथि तखने सप्तर्षि सहित नारद आबि आश्वस्त करैत छथिन जे अहाँकेँ पति पुनः अवश्य भेटताह। तावत् अहाँक रक्षा कर्यानिहार आबि रहल अछि। नारद चल जाइत छथि।

तखने कोम्हरोसँ एकटा साहुकार अपन दलक संग ओहि ठाम आबि डेरा दैत अछि। दमयन्ती ओहि डेरा लग राति-बीच गमाबऽ चाहैत छथि। परन्तु हिनका अलच्छी बूझि ओ सभ संगमे रखबाक लेल तैयार नहि होइछ। बड़ अनुनय-विनय कयला पर साहुकार एहि शर्तपर तैयार होइत अछि जे जतऽ नगर भेटत ततहि दमयन्तीकेँ छोड़ि देल जायत। दोसर दिन साहुकार दमयन्तीकेँ राजा ऋतुपर्णक नगरमे छोड़ि आगाँ बढ़ि जाइछ। राजभवनक गवाक्षसँ ऋतुपर्णक रानीक दृष्टि हुनका पर पड़ैत छनि। ओ दमयन्तीकेँ बजबाय अपन पुत्रीक सखीक रूपमे रहबाक

आग्रह करैत छथिन। उच्छिष्ट भोजन ओ परपुरुष-सम्भाषण नहि करबाक शर्तपर ओ रहि जाइत छथि।

दोसर दिस नल दमयन्तीक परित्याग कऽ वनमे बौआइत रहैत छथि। तखने ओ आर्त्तनादक संग अपन नाम सुनैत छथि। ओ आगाँ बढ़ि देखैत छथि जे दावाग्निसँ घेरल कर्क्कोटक नाग झरकि रहल अछि ओ रक्षाक हेतु नलकेँ सोर पाड़ि रहल अछि। नल कर्क्कोटक नागकेँ आगिसँ बचबैत छथिन। प्रत्युपकारक भावसँ कर्क्कोटक हुनका डँसि लैत छनि, जाहिसँ नल कुरूप भऽ जाइत छथि। कर्क्कोटक हुनका कहैत छनि जे अहाँक शरीरमे कलिक प्रवेश भेल अछि। हमर विषक ज्वालासँ ओ पड़ा जायत। कुरूप भेलासँ अहाँकेँ कोनो ठाम आश्रय भेटबामे कठिनता नहि होयत। अहाँ राजा ऋतुपर्णक ओतऽ जाउ। ओहि ठाम अहाँकेँ आश्रय भेटत आ किछु समय ओतऽ व्यतीत कऽ सकब। ओ एकटा वस्त्र खण्ड दैत कहैत छनि जे-जखन एकरा ओढ़ि लेब तखन अहाँक पूर्व स्वरूप भऽ जायत।

भीमकेँ अपन बेटी-जमायक दुर्दिनक पता लगैत छनि तँ ओ एकटा ब्राह्मणकेँ हुनका सभक अन्वेषणमे पठबैत छथिन। ब्राह्मण अन्वेषण करैत-करैत ऋतुपर्णक नगरीमे पहुँचैत अछि। उद्यानमे रानी ओ राजकुमारीक सखीक संग दमयन्तीकेँ देखि चीन्हि जाइछ। ओ दमयन्तीकेँ पितागृह चलबाक आग्रह करैछ। रानीकेँ कानमे ई बात पड़ैत छनि। ओ दमयन्तीक ललाट पर तिलबाक चिह्न देखि चीन्हि जाइत छथिन। ओ दुर्दिन बितबा धरि रहबाक आग्रह करैत छथिन। मुदा दमयन्तीक हठ देखि वस्त्राभरण दऽ विदा करैत छथिन। दमयन्ती ओ वस्त्राभरण छुबितो नहि छथि। ओ ओहिना खिन्नावस्थामे अपन नैहर चल अबैत छथि।

नल कर्क्कोटकक कथनानुसार बौआइत-टौआइत ऋतुपर्णक ओतऽ पहुँचैत छथि। ओतऽ ओ अपनाकेँ अश्वविद्याक जननिहार बाहुक नामसँ अपन परिचय दऽ आश्रय देबाक अनुरोध करैत छथि। ऋतुपर्ण हुनका अश्वशालामे नियुक्त कऽ दैत छथिन।

दमयन्ती पितृगृहमे पति-विरहमे सन्तप्त रहैत छथि। जीवन कठिन ओ दुर्वह भऽ जाइछ। माता हुनका आश्वासन दऽ राजा भीमकेँ नलक अन्वेषणक उपाय करबाक हेतु कहैत छथिन। पुनः चारू दिशामे नलक खोज करबाक हेतु ब्राह्मण पठाओल जाइत छथि। दमयन्ती ब्राह्मणलोकनिकेँ कहैत छथिन जे जाहि ठाम जाइ, ओहि ठाम एकटा प्रश्न पुछिऐक—जूआमे समस्त राज्य हारि, निर्जन वनमे अपन पत्नीकेँ आधा वस्त्रक संग छोड़ि कऽ चल जायब कोन राज-धर्म थिक ? जतऽ एहि प्रश्नक उत्तर भेटि जाय, ओतहिसँ घूमि आयब।

ब्राह्मण जतऽ जाइत छथि ततऽ यैह प्रश्न पुछैत छथि। जखन ऋतुपर्णक राजसभामे सेहो दमयन्तीक प्रश्न कहैत छथि तँ बाहुक रूपमे स्थित नल ब्राह्मणकेँ एकान्तमे बजाय कहैत छथिन जे अपन पतिक निन्दा चारू कात पसारब की पतिव्रता

स्त्रीक धर्म थिकैक? ब्राह्मण ई सूनि ओही ठामसँ घूमि जाइत छथि आ सब समाचार दमयन्तीकेँ कहैत छथिन। दमयन्तीकेँ निश्चय भऽ जाइत छनि जे हुनक प्रश्नक उत्तर देनिहार व्यक्ति हुनक पति छथिन।

आब दमयन्ती नलकेँ बजयबाक उपाय सोचऽ लगैत छथि। ओ अपन मायसँ विचार करैत छथि जे गुप्त रूपसँ दूत पठाय, ऋतुपर्णकेँ हमर स्वयंवरक आयोजनक संवाद कहि बजाओल जाइत। हमर पति अश्वविद्या जनैत छथि। यदि असले हमर पति होयताह तँ एकहि दिनमे हुनका लऽ अनताह(हमर स्वामी अश्वहृदय जानथि, ते निमित्ते ऋतुपर्णकाँ स्वयंवर छले त्वराले बजबीअनु। जञो हमर स्वामी ओतय रहताह तञो एतय एक दिवसे पहुंचताह। इ स्वयंवरक कहिनी हमरा बापक आगु जनि कहिअ। दूत ब्राह्मण मात्र के कहब।)

एहि योजनानुसार दूत ऋतुपर्णकेँ जाय कहैत छनि जे नलक अनुसन्धान नहि कतहु भेटलाक कारणे दमयन्तीक पुनः स्वयंवर काल्हि होयतनि जाहिमे अपनेकेँ सम्मिलित होयबाक आमन्त्रण अछि। राजा ऋतुपर्ण स्वयंवरमे चलबाक हेतु बाहुककेँ तैयार होयबाक आदेश दैत छथिन। नल ई समाचार सुनि क्षुब्ध भऽ जाइत छथि। ओ विचारमे पड़ि जाइत छथि जे दमयन्तीक एहन चित्त किएक भऽ गेलनि अथवा की हमरहि बजयबाक हेतु ई उपाय कयलनि अछि? अन्ततः ओ ऋतुपर्णकेँ रथपर चढ़ाय स्वयंवरमे जयबाक निश्चय करैत छथि।

यात्रापथमे एकटा बहेड़ाक गाछतर ओ लोकनि किंचित् विश्राम करैत छथि। तखनहि नलक शरीरसँ कलि निकलि जाइत छनि। नल ऋतुपर्णकेँ कहैत छथिन जे हम तँ अश्वविद्या जनैत छी, अहाँ कोन विद्या जनैत छी?

ऋतुपर्ण उत्तर दैत छथिन जे—हम अक्षविद्या जनैत छी जाहिसँ कोनहु गाछक पात ओ फलकेँ गनि सकैत छी। आ नलक कहला पर बहेड़ाक पात ओ फलकेँ गनि कऽ देखा दैत छथिन। पुनः ऋतुपर्ण नलसँ अश्वविद्या सिखबाक तथा नलकेँ अक्षविद्या सिखयबाक प्रस्ताव करैत छथि ओ नल तदनुसार अक्षविद्या सिखैत छथि। विश्रामक पश्चात् दुहू एकहि दिनमे विदर्भ पहुँचि जाइत छथि। परन्तु ओहि ठाम स्वयंवरक हलचल नहि देखि चकित रहि जाइत छथि। भीम द्वारा अकस्मात् आगमनक हेतुक जिज्ञासा कयला पर ऋतुपर्ण कुशल-मंगल जनबाक बहाना बना दैत छथि। हुनका सम्मानपूर्वक राखल जाइत छनि।

दमयन्तीकेँ विश्वास भऽ जाइत छनि जे एतेक दूरसँ एकहि दिनमे अश्वरथ हाँकि कऽ अननिहार ऋतुपर्णक सारथी बाहुक अवश्ये हुनक स्वामी थिकथिन। परन्तु हुनक विकृत रूप देखि विश्वास डगमगा जाइत छनि। ओ और परीक्षा लेबाक उद्देश्यसँ सखी सुकेशिनीकेँ भार दैत छथिन जे—ऋतुपर्णक सारथी बाहुककेँ पाक-सामग्री, जारनि, खाली धैल, चाउर, मांस आदि दऽ अबियौन मुदा आगि नहि दियौन। जे मांस-पाक करथि ताहिमे सँ किछु माङि कऽ लेने आयब।

सुकेशिनी तहिना करैत अछि। बिनु आगियहि नल पाक करैत छथि से जानि दमयन्ती विश्वास पूर्वक चीन्हैत छथि तथा हुनका बजाय अपन पूर्व रूप धारण करबाक प्रार्थना करैत छथिन। नल नागक देल वस्त्रखण्ड ओढ़ि अपन पूर्व रूप प्राप्त करैत छथि। परन्तु दमयन्तीक चरित्रक विषयमे शंका होइत छनि। वायु देवता आकाशवाणी द्वारा दमयन्तीक पातिव्रत्यक साक्षी दैत छथिन। नल दमयन्ती-केँ पुनः ग्रहण करैत छथि। ऋतुपर्ण यथार्थ कथा जानि नलसँ क्षमा-याचना कऽ अपन नगरी जाइत छथि।

चिर विरहक पश्चात् नल-दमयन्तीक मिलन होइछ। किछु दिन दाम्पत्य-सुखक भोग कऽ पुष्कर राजासँ द्यूतमे हारल राज्यकेँ द्यूत द्वारा जीति आपस लेबाक निश्चय करैत छथि। परन्तु बिना धनेँ द्यूत होअय नहि, तेँ राजा भीम प्रचुर धन दैत छथिन। नल पुष्करराजसँ द्यूत खेलयबाक हेतु विदा होइत छथि। बाटमे कलि भेटैत छनि। नल कलिकेँ कहैत छथिन जे हमरा शरीरमे प्रवेश कऽ हमरा बड़ कष्ट देलेँ तेँ आब हम तोहर नाश करबौक। कलि हुनकासँ क्षमा मङैत अछि आ नल दयार्द्र भऽ क्षमा कऽ दैत छथिन। तखन नल पुष्करराजक ओतऽ जाय हुनका जूआ खेलयबाक हेतु ललकारैत छथिन। पुष्करराज नलक संग जूआ खेलाइत छथि। मुदा एहि बेर नलकेँ ऋतुपर्णसँ सीखल अक्षविद्या रहैत छनि तथा पुष्करराजकेँ पूर्व जकाँ कलिक प्रभाव प्राप्त नहि रहैछ। ओ नलक राज्यक संगहि अपनहु राज्य ओ कोष आदि हारि जाइत छथि। सहृदय नल अपन राज्य तँ ग्रहण करैत छथि किन्तु पुष्करराजक राज्य ओ सम्पत्ति घुमा दैत छथिन। नल सपरिवार अपन नगरी अबैत छथि। आनन्दोत्सव होइत अछि। नल सभसँ क्षमा-याचना करैत ईश्वरीक भक्तिपूर्वक जीवन-यापनक निश्चय करैत छथि।

मलयगन्धिनी

विद्याधरक राजा वसुभूतिक पत्नी रानी मदना विरहेँ व्याकुल छथि। तखन वसुभूति अबैत छथि। दुहूक मिलन होइछ। ओही समयमे वसुभूतिक सुन्दरी कन्या राजकुमारी मलयगन्धिनी अपन सखी कलावती ओ रूपवतीक संग अबैत छथि आ पिता-मातासँ आज्ञा लऽ उपवनमे विहार करबाक हेतु जाइत छथि।

उपवनमे मलयगन्धिनीक विहार करैत काल पाताललोकक चम्पावती नगरीक दानव कंकालकेतु अपन भाइ मधुकेतु ओ चण्डकेतुक संग गर्जना करैत अबैत अछि आ मलयगन्धिनी ओ कलावतीकेँ अपहरण कऽ लऽ जाइत छनि। पाताललोकमे ओ मलयगन्धिनीकेँ प्रलोभन ओ यातनासँ वशमे करबाक चेष्टा करैत अछि। मलय-गन्धिनी ओकरा वशमे नहि अबैत छथिन।

बन्दिनी बनलि मलयगन्धिनी जगदम्बा भगवतीक प्रार्थना करैत छथि। भगवती प्रत्यक्ष दर्शन दैत कहैत छथिन—जे अहाँक कुलदेवी होयबाक कारण अहाँक

रक्षा करब हमर कर्त्तव्य अछि। पृथ्वीक परम वैष्णव आबि एहि दानवक संहार करताह तथा वैह अहाँक पाणिग्रहण करताह। जगदम्बाक वरदान पाबि मलयगन्धिनीकेँ धैर्य होइत छनि। ओ परम वैष्णव व्यक्तिक आगमनक प्रतीक्षा करैत रहैत छथि।

नारदमुनि तुंदिर ओ दर्दुरक नामक शिष्यक संग पाताल लोकमे स्थित हाटकेश्वर महादेवक दर्शनार्थ जाइत छथि। महादेवक दर्शनक पश्चात् कंकालकेतुक उपवन ओ भवन देखबाक हेतु सेहो जाइत छथि। राजभवनमे दुइ गोट कन्याकेँ देखि चकित होइत छथि। जिज्ञासा कयला पर मलयगन्धिनी अपन परिचय दैत समग्र घटनाक वर्णन करैत अपन दुःख ओ दुर्दशाक स्थिति कहैत छथिन। नारद हुनका भगवतीक भविष्यवाणी ओ वरदान अविलम्ब सफल सिद्ध होयबाक आश्वासन दैत छथिन।

नारद ओहि ठामसँ आबि पृथ्वीक परम वैष्णव राजा अमित्रजितक राजसभामे पहुँचैत छथि। हुनका मलयगन्धिनीक समस्त वृत्तान्त सुनबैत हुनक रक्षा करबाक विचार दैत छथिन। अमित्रजित पाताललोक धरि पहुँचबाक बाट पुछैत छथिन। नारद हुनका पाताललोकक बाट ओ पहुँचबाक उपाय बुझा दैत छथिन।

अमित्रजित पूर्णिमाक रातिमे समुद्रक किनारमे जाइत छथि। ओहि ठाम अप्सरा लोकनिकेँ नृत्य करैत देखैत छथि। अप्सरा सब नृत्यादिक पश्चात् समुद्रमे प्रवेश करैत अछि। अमित्रजित ओकरहि सभक अनुसरण करैत पाताललोक पहुँचि जाइत छथि। ओ तकैत-तकैत चम्पावतीमे कंकालकेतुक राजभवनमे पहुँचि जाइत छथि। ओहि कालमे कंकालकेतु तीनू भाइ मलयगन्धिनीकेँ वशीभूत करबाक लेल उत्तमोत्तम वस्त्र ओ आभूषण आदि अनबाक लेल बाहर गेल रहैछ। एहि अवसरक लाभ उठाय अमित्रजित मलयगन्धिनीक निकट जाय अपन परिचय दैत छथिन तथा हुनक परिचय प्राप्त कऽ अवश्यमेव हुनक उद्धार करबाक सान्त्वना दैत छथिन। आश्वस्त भेला पर मलयगन्धिनी अमित्रजितकेँ कहैत छथिन जे कंकालकेतुकेँ ब्रह्मा एकटा त्रिशूल देने छथिन जाहीसँ ओकर वध भऽ सकैत छैक। मलयगन्धिनी अमित्रजितकेँ शस्त्रागारमे नुका दैत छथिन।

कंकालकेतु अबैत अछि। ओ पहिने मलयगन्धिनीकेँ अनुकूल करबाक लेल मनबैत अछि। यातना दैत अछि। पुनः अपन वक्षःस्थलसँ त्रिशूलकेँ लगाय सूति रहैछ। मलयगन्धिनी ओरिया कऽ ओ त्रिशूल निकालि अमित्रजितकेँ दऽ दैत छथिन। अमित्रजित कंकालकेतु, मधुकेतु ओ चण्डकेतुकेँ ललकारि कऽ जगबैत छथि आ घमासान युद्धमे तीनूकेँ मारि दैत छथि।

एहि अवसर पर नारद पुनः उपस्थित होइत छथि। ओ मलयगन्धिनी ओ अमित्रजितक विवाहक आयोजन करैत छथि। ओ अप्सरा लोकनिकेँ बजबैत छथि। वैदिक विधिपूर्वक दुहूक विवाह नारद स्वयं करबैत छथि। अप्सरा लोकनि मैथिल

व्यवहारानुसार परिछनि, कोबर, उचिती इत्यादि गीत गबैत छथि। मलयगन्धिनी ओ अमित्रजितक कोबर घरमे मिलन होइछ।

कतोक समय धरि सुख-भोग कऽ दानवसभक नगरमे रहने अनेक ज्ञात-अज्ञात दोषक निवारण हेतु अमित्रजित मलयगन्धिनी ओ सखी कलावतीक संग काशी विदा होइत छथि। मणिकर्णिका घाट पर आबि गंगास्नान करैत जाइत छथि। धर्माचरणपूर्वक रहैत एकदिन देवदर्शन हेतु जाइत काल मलयगन्धिनीकेँ अनुभव होइत छनि जे हुनका कोखिमे कोनो दिव्यपुरुषक आगमन भऽ रहल छनि। ओ ई बात अपन सखीकेँ कहैत छथिन। मलयगन्धिनी सखीक संग ईश्वरीक आराधना करऽ जाइत छथि। हुनक भक्तिसँ प्रसन्न भऽ ईश्वरी प्रत्यक्ष दर्शन दैत छथिन। मलयगन्धिनी हुनकासँ तीन बातक याचना करैत छथिन—

—'हे महामाया। हमरा उदर विषये जे अछ से इहाँक प्रसादे जन्मोत्तर तत्काल षोडश वर्ष बयस्क हो। इह स्वर्ग, मर्त्य, पाताल अव्याहत गति हो। इह दश सहस्रवर्ष राज्यपालना कए चिरंजीवी हो, इह तीनि प्रार्थना इहाँ पाहि करै छिअ।'

देवी अनुरूप वरदान दैत छथिन।

समय पूर्ण भेला पर मलयगन्धिनीकेँ प्रसववेदना होइत छनि। कलावती एकर सूचना अमित्रजितकेँ दैत छथिन। तत्काले प्रसूयिका (दगरिन) ओ दैवज्ञ लोकनि बजबाओल जाइत छथि। एक तेजस्वी बालकक जन्म होइछ। दैवज्ञ बालकक जन्म-कुंडली देखैत छथि। दैवज्ञक अनुसार बालकक जन्मकालक ग्रह-स्थिति उत्तम रहितो मूल नक्षत्रक मूल भोगमे जन्म होयबाक कारण माता ओ पिता उभय जनक हेतु अनिष्टकर जकर निवारण यैह जे छओ मास धरि दुहू अपन पुत्रक मुँह नहि देखथि। दैवज्ञ व्यवस्था दैत छथिन जे विकटा नामक भगवतीक मन्दिरमे एहि नवजात शिशुकेँ रखबा देल जाइनि। कलावती शिशुकेँ विकटा देवीक मन्दिरमे जा कऽ राखि दैत छथि। तखने आकाशवाणी होइछ जे शिशु षोडशवर्षक भऽ जायत। तहिना होइतो अछि। कलावती ई सूचना मलयगन्धिनी ओ अमित्रजितकेँ दैत छथि।

एमहर ओ बालक ओहीठाम महादेवक तपस्यामे ध्यानस्थ भऽ जाइत छथि। महादेव हुनक कठोर तपस्यासँ प्रसन्न भऽ दर्शन दैत छथिन। महादेव हुनका वरदान दैत छथिन जे हमरा गणमे अहाँक स्थान होयत। वीरक रूपमे हमर आराधना कयल तेँ हम वीरेश्वर रूपमे एहि ठाम कल्पान्त पर्यन्त स्थापित रहब। ओहि बालकक नामो वीरेश्वरे पड़लनि। वीरेश्वर प्रसन्न भऽ माता-पितासँ मिलबाक हेतु विदा होइत छथि।

ओमहर नारद वसुभूतिकेँ जा कऽ मलयगन्धिनीक समस्त समाचार सूचित करैत छथिन। वसुभूति रानी मदना, मन्त्री, कोटवार ओ अनुचर सहित वाराणसी

बिदा होइत छथि। वाराणसीमे पुत्री-जमायसँ मिलन होइत छनि। ओहीठाम वीरेश्वर सेहो अपन मातामह-मातामहीकेँ चिन्हैत छथि। बसुभूति हुनका आशीर्वाद दैत निश्चय करैत छथि जे ईश्वरी-कृपासँ हमर सब मनोरथ पूर्ण भेल तेँ राजकुमार वीरक राज्यभिषेक करब। राज्याभिषेकक विधि सम्पन्न भेला पर बसुभूति वाराणसीमे रहि ईश्वरीक भक्तिमे शेष जीवन व्यतीत करबाक संकल्प करैत छथि।

मदन-चरित्र

कामरूपक राजा धर्मपाल, रानी विलासिनी, रानीक सखी केशिनी, पुत्र मदन, सचिव विनोदविज्ञ, अनुचर सुनन्दक संग प्रवेश करैत छथि। देवी कामाख्याक मण्डपकेँ मण्डित कऽ पूजा करबाक संकल्प करैत छथि। आन व्यक्ति सब निदेशानुसार चल जाइछ। राजा-रानीमे शृंगार कथा होइत अछि।

मिथिलानगरीक स्वामी तिरहुतिक राजा ऋषध्वज अपन रानी मनोरमा, पुत्र मानभंजन, मन्त्री बुद्धिचरक संग अबैत छथि। भुजबल नामक राजाक नगरमे जाय हुनक कन्या चित्रकलाकेँ पुत्रवधूकक रूपमे प्राप्त करबाक निश्चय करैत छथि।

धर्मपाल ओ विलासिनी ई जानि अत्यन्त विह्वल भऽ जाइत छथि जे हुनक पुत्र मदन अल्पायु छथिन। ओही समयमे सिद्धिसार नामक सिद्ध अबैत छथि। धर्मपाल हुनकासँ अपन पुत्रक अल्पायुता-निवारणक बिनती करैत छथिन। सिद्धिसार कहैत छथिन—हे नृप! एकेटा उपाय अछि जे मृत्युंजयक आराधना आइयेसँ करी। हमहूँ कामरु नगरीक रानीक पुत्र(मदन)क कल्याण हेतु गंगासागर जाइत छी। मदन माता-पितासँ कहैत छथि—हे माता! हे पिता! हम चलबाक निश्चय कयल। किछु रजत ओ एकटा तुरंग मात्र हमरा दियऽ। हम वाराणसी जायब। ओतऽ बिश्वेश्वरक सेवा करब, सिद्धिगणेशसँ अभय बरक याचना करब। यदि ईश्वर जीवन रखताह तँ पलटि कऽ अहाँ लोकनिक दर्शन करब।' राजा-रानी विलाप करऽ लगैत छथि—जीवनक आधार एकमात्र पुत्र मदनक बियोग-जन्य दुख कोना सहब? सुतक विना अंधकार लगैत अछि। सुत-बिश्लेषक दुखक सोझाँ तिमिरो मलिन अछि।' राजा-रानी विह्वल हृदयसँ अशीर्वाद दैत बिदा करैत छथिन। परन्तु एहि दुःखक कारण होइत छनि जे स्वयं वाराणसी जाय शरीर-त्याग कऽ दी।

भुजबल राजा अपन पत्नी शशिमुखी, मन्त्री बुद्धिसार, रानीक गुणवती नामक सखी संग अबैत छथि। वार्त्तालाप कऽ सुखक हेतु फेर चल जाइत छथि।

भुजबलक कन्या चित्रकला अपन सखी रसमंजरी ओ हितकलाक संग अबैत छथि। ज्ञातयौवना चित्रकला चिन्तना करैत छथि जे जानि नहि ककरा संग ईश्वर

हमर संयोग लिखने छथि। हमर पिता-माता की सोचि रहल छथि? हुनका शरीरमे रोमांच भऽ जाइत छनि। स्वरभंग भऽ जाइत छनि। शरीर कँपैत छनि। चलबा काल तलमलाय लगैत छथि। ओ पिता-माताक दर्शन हेतु बिदा होइत छथि।

ओमहर ऋषध्वज चित्रकलाकेँ बधूरूपमे प्राप्त करबाक लेल देवव्रत नामक ब्राह्मणकेँ भुजबलक ओहि ठाम पठबैत छथिन तथा स्वयं सदलबल बिदा होइत छथि मानभंजनक संग चित्रकलाक विवाहक हेतु।

एमहर भुजबल अनायास प्राप्त मदन सन सुन्दर सुभग राजकुमारक संग चित्रकलाक विवाहक निश्चय करैत छथि। यज्ञमण्डपमे विधिपूर्वक चित्रकला ओ मदनक विवाह होइत छनि। कंकन-बंधन, कोबर इत्यादि विधि ओ तत्सम्बन्धी गीत सब गाओल जाइछ।

मदन ओ चित्रकलाक एकान्तमे मिलन होइछ, तखन मदन चित्रकलाकेँ अपन अल्पायुता ओ मृत्युंजय-आराधनाक संकल्पक सम्बन्धमे कहैत छथिन। चित्रकला बिकल होइत कहैत छथिन जे—अहाँ हमर पाणिग्रहण कयल। हम अहाँक अधीन छी। अहाँ अपन नामांकित औंठी दऽ दियऽ। अहाँक स्मरण कऽ कऽ विरहक समय काटब। एहन विरह विधाता ककरहु नहि देथुन।

मदन मृत्युंजयक तपस्याक हेतु वाराणसी चल जाइत छथि। चित्रकला पतिविरहमे समय बिताबऽ लगैत छथि। ओहो तपस्या करबाक निश्चय करैत छथि जे गाछक पात खा कऽ जीव। क्षणभरिक दर्शनसँ नयनसुख दऽ कऽ प्रियतम चल गेलाह। कामदेवसँ विरहित रति जकाँ हमरा धैर्य धयल नहि होइत अछि। हमहूँ तपस्यासँ पतिक सान्निध्य प्राप्त करब अथवा आनंदपूर्वक अपन शरीर समाप्त कऽ देब। एहि प्रकारेँ चित्रकला सेहो तपस्यामे लीन भऽ जाइत छथि।

गौरी-शंकर अबैत छथि। दुहु गोटे केँ दाम्पत्योचित व्यबहार होइछ। पुनः भक्तकेँ बरदान देबाक हेतु जयबाक निश्चय करैत छथि।

ऋषध्वज ससैन्य अबैत छथि। परन्तु चित्रकलाकेँ पुत्रबधू रूपमे प्राप्त करबाक इच्छाक पूर्त्ति नहि भेलासँ अत्यन्त लज्जा ओ क्षोभ होइत छनि।

चित्रकला तपस्यामे निरत छथि। गाछक पात खाय शिव-भवानीक आराधना करैत छथि। महादेव ओ पार्वती अबैत छथि। दुहुक मध्य पुनः दाम्पत्य व्यबहार होइछ। तखन प्रसन्न भऽ चित्रकलाकेँ अभिमत फल पयबाक वर प्रदान करैत छथिन। चित्रकला उल्लसित होइत छथि।

भवानी-शंकर सरस्वतीकेँ आदेश दैत छथिन जे चिरंजीवी व्यासक मुहसँ तपस्या-रत मदनकेँ जीवन-दान करावथि।

व्यास शीघ्रतापूर्वक दिनक अवसानसँ पूर्वहि वेगपूर्वक वाराणसी पहुँचैत छथि। मदन व्याससँ परिचय पुछैत छथिन। व्यास अपन परिचय दैत कहैत छथिन जे

हमरा मुखसँ एखन सरस्वती बाजि रहल छथि। ओ मदनकेँ षटचक्र, नवदल, अष्टदल इत्यादि विषयक योग-शिक्षा दऽ परमहंसक स्वरूपक ज्ञान करबैत छथिन। ओही कालमे भवानी-शंकर सेहो दर्शन दैत छथिन।

दीर्घजीवनक वरदान पाबि मदन चित्रकलाक निकट अबैत छथि। दुहुक मिलन होइत छनि। दुहु एक दोसराकेँ पाबि आनन्द विभोर भऽ जाइत छथि। दुहुकेँ मिलन देखि भुजबलकेँ परम सन्तोष होइत छनि। ओ एहि संसारकेँ असार जानि ईश्वरीक चरणमे अपनाकेँ लीन कऽ देबाक निश्चय कऽ विदा होइत छथि कि ऋषध्वज आबि कऽ पथ रोकि लैत छथिन आ युद्धक ललकारा दैत छथिन। मदन ऋषध्वजकेँ कहैत छथिन—पाणिग्रहण विधिद्वारा जे व्यक्ति चित्रकलाकेँ प्राप्त कयलक तकरहि ओ पत्नी थिक। अहाँ नीति-विहीन भऽ कऽ अनाचार कऽ रहल छी। अहाँ अवश्ये यमगृह जायब।

मदनक संग युद्धमे ऋषध्वज पराजित भऽ जाइत छथि। ओ लज्जित भऽ कऽ जीवनसँ विरक्त भऽ जाइत छथि। हरिक भक्तिपूर्वक अपन शरीरक त्याग करबाक निश्चय कऽ जाइत छथि।

मदन चित्रकलाकेँ तुरत अपन देशक हेतु प्रस्थान करबाक विचार दैत छथिन जे अविलम्ब जाय तात-मातक मुख-दर्शन करब। दुहु कामरूप पहुँचैत छथि। धर्मपाल ओ हुनक पत्नी अपन पुत्र ओ पुत्रवधूकेँ देखि अत्यन्त आह्लादित होइत छथि। ओ मदनकेँ अन्तिम उपदेश दऽ संसारसँ विरक्त भऽ जाइत छथि।

वस्तु-नेता-रस सम्बन्धी वैशिष्ट्य

जगत्प्रकाशक नाटकक नाट्यवस्तुक आधार स्रोत पुराण, महाभारत, प्राचीन काव्य ओ लोक प्रसिद्ध इतिवृत्त अछि। महाभारत नाटक तँ स्पष्टे महाभारतक संक्षिप्त नाट्य-रूपान्तर थिक जाहिमे कौरव-पाण्डवक जन्म, युद्ध, कौरव-विनाश ओ युधिष्ठिरक राज्याभिषेक धरिक कथा वर्णित अछि। नलचरितक कथावस्तु महाभारतक वनपर्वक 53-57 अध्यायमे वर्णित नलोपाख्यानक आधार पर गृहीत भेल अछि। परन्तु नाटककार लोकप्रसिद्ध सपता-बिपताक प्रसिद्ध व्रत कथासँ सेहो प्रभाव ग्रहण कयने छथि। रामायण नाटकक आधार कोन रामायण अछि जे नाटकक मूल रूप भेटलहि पर कहल जा सकैछ। मलयगन्धिनी ओ मदन-चरित्र नाटकक कथावस्तु पौराणिक थिक वा लौकिक से निश्चित करब संभव नहि भऽ सकल अछि। मलयगन्धिनीक कथा-विन्यास ताहि प्रकारक अछि जे लगैत अछि जेना ओहो पुराणहिसँ लेल गेल हो। मदन चरित्रमे धर्मपाल, सिद्धिसार सन पात्र, हठयोगक प्रतिपादन इत्यादिसँ लगैत अछि जेना ई बौद्ध-सिद्ध कालक कोनो लोक-प्रचलित प्रसद्ध कथा रहल हो जकरा नाटककार पौराणिक आवरण चढ़ा देलनि अछि। माधव-मालति नाटकक कथावस्तु भवभूतिक प्रसिद्ध नाटक मालती-माधव

पर आधृत अछि। मालती-माधवक प्रसिद्ध नान्दी श्लोककेँ जगत्प्रकाशकेँ अपन कय गोट गीत-संग्रहक मंगलश्लोकक रूपमे सेहो उद्धृत करैत देखैत छियनि।

जगत्प्रकाशक अधिक नाटकक इतिवृत्त कृष्णकथाचक्र पर आधृत छनि। कृष्ण-कथा श्रीमद्भागवत, हरिवंश, विष्णु ओ ब्रह्मवैवर्त्त पुराणादिमे विस्तृत रूपमे विवृत अछि। परन्तु जगत्प्रकाशक कृष्णकथासँ सम्बद्ध नाटक सभ श्रीमद्भागवत ओ हरिवंशहिक अनुसरण करैत अछि। कृष्णचरितक कीर्तन कयनिहार पुराण सबमे श्रीमद्भागवतक विशिष्ट स्थान अछि। जगत्प्रकाश एहि पुराणक उपयोग नीक जकाँ कयलनि अछि कृष्णचरित नाटकमे। ई नाटक यद्यपि पूर्णरूपमे उपलब्ध नहि भेल अछि। परन्तु एहि नामक एकगोट बृहत् ओ सुन्दर नाटकक रचना कयने छलाह तकर प्रमाण अछि। एहि नाटकक गीत सब बृहत् संख्यामे जगत्प्रकाशक गीत-संग्रह सबमे भेटैत अछि। एहि गीत सभक पर्यालोचनसँ स्पष्ट होइत अछि जे जगत्प्रकाशक कृष्णचरित नाटकक नाट्यवस्तु श्रीमद्भागवतहिसँ ग्रहण कयल गेल अछि, कारण एहि गीत सबमे एहन पात्र ओ घटना सभक वर्णन ओ सूचना अछि जकर मूलस्रोत श्रीमद्भागवते थिक। एहन किछु प्रसंग देखलासँ एहि धारणाक सम्पुष्टि भऽ जा सकैत अछि। जगत्प्रकाशक गीतावलीमे एकटा दण्डक गीतमे नन्द ओ गर्ग मुनिक संवाद निम्न रूपक अछि—

नन्द : मोर विनति सुनु गरग महामुनि ॥ध्रु०॥
रोहिणी सुत देख एहे, पुनु एहे हमहुक ओरे।
करिअए जात करम सब आस मोहि तोहहुक ओरे ॥

गर्ग : मोए जदुकुल पुरोहित मुनि ॥ध्रु०॥
करब सबहि हमे कहतहु ओरे।
तुव नहि थिक जदुकुलक एहे होएतहु सोरे॥

हरिवंशमे गर्ग मुनिक उल्लेख नहि अछि किन्तु श्रीमद्भागवतमे गर्गमुनिकेँ यदुवंशीक कुलपुरोहितक रूपमे वर्णन अछि। नन्द हुनका बलराम ओ कृष्णक जात कर्मादि संस्कार करबाक प्रार्थना करैत छथिन—

त्वंहि ब्रह्मविदांश्रेष्ठ: संस्कारान् कर्तुमर्हसि।
बालयोरनयोर्नृणां जन्मना ब्राह्मणो गुरु: ॥

एहि पर गर्गमुनि अपन आशंका व्यक्त करैत कहैत छथिन जे—

यदूनामहमाचार्य: ख्यातश्च भुविसर्वत:।
सुतं मया संस्कृतं ते मन्यते देवकी सुतम् ॥
कंस: पापमति: सख्यं तव(आ)चानक दुन्दुभे:।
देवक्या अष्टमोगर्भो न स्त्री भवितुमर्हति ॥

इति सञ्चिन्तयञ्छ्रुत्वा देवयशोदारिका वचः ।
अपि हन्ताऽऽ गताशङ्कस्तर्हि तन्नो नयोभवेत् ॥
(श्रीमद्भागवत, 10।8।6-9)

जगत्प्रकाशक पूर्वोद्धृत दण्डक गीतक वर्ण्यवस्तु उपर्युक्त स्थलसँ गृहीत भेल अछि से स्पष्ट अछि।

एहिना अघासुर, वत्सासुर, शंखचूड़, व्योमासुर, ब्रह्मामोह इत्यादिक संवाद, वध ओ घटनाक अभिव्यंजक गीत सब उपलब्ध अछि। परन्तु ई पात्र ओ सम्बद्ध घटना सब हरिवंशमे नहि, अपितु श्रीमद्भागवतमे वर्णित अछि।

कृष्णचरित विषयक जगत्प्रकाशक उपलब्ध गीत सबकेँ मूलकथाक अनुसार पूर्वापर क्रमसँ व्यवस्थित कयला पर देवकीपरिणयसँ कंसवध धरिक कथाक रूप-रेखा प्राप्त होइत अछि जे पूर्णतः श्रीमद्भागवताहिक कथाक्रमसँ संभव भऽ पबैत अछि, जकर विस्तार दशम स्कन्धक प्रथम अध्यायसँ चौवालिसम अध्याय धरिमे अछि। अतः अनुमान होइछ जे कृष्णचरित जगत्प्रकाशक एकगोट वृहत् नाटक रहल होयत।

कृष्ण सम्बन्धी अन्य तीन गोट नाटक पारिजातहरण, प्रभावतीहरण तथा उषाहरणक उपाख्यानमे केवल उषाहरणक कथामात्र श्रीमद्भागवतक दशम स्कंधक 62-63म संख्यक दुइ अध्यायमात्रमे अति संक्षेपमे वर्णित अछि, जखन कि उषाहरण सहित अन्य दुहू उपाख्यान हरिवंशमे विस्तारसँ वर्णित अछि। हरिवंशमे विष्णुपर्वमे 64-76म अध्यायमे पारिजात हरण, 91-97म अध्यायमे प्रभावती हरण तथा 116-128म अध्यायमे उषाहरणक कथा वर्णित अछि। उषाहरणक कथा विष्णुपुराणोमे आयल अछि मुदा किछु अन्तरक संग। अतः स्वाभाविक छल जे जगत्प्रकाश अपन तीनू नाटकक नाट्यवस्तुक आधार हरिवंशकेँ बनाबथि।

हरिवंशसँ कथानक ग्रहण करितो विस्तृत मूल कथानकक ओहन अनेक अंशकेँ छोड़ि देल गेल अछि जे नाट्यप्रयोजनक दृष्टिएँ अनुपयोगी छल अथवा बाधक सिद्ध भऽ सकैत छल। दोसर दिस मूल कथासूत्रक निर्वाह करैत स्थान-स्थान पर कतिपय परिवर्त्तन ओ नव तत्त्वक समावेश कऽ देल गेल अछि जाहिसँ नाट्यवस्तुमे सुगठन ओ रोचकता आबि गेल अछि।

हरिवंशक प्रभावतीहरणक कथामे इन्द्रक मन्त्रणासँ वज्रनाभक वधक उद्देश्यें हंस-हंसी वज्रपुर अबैत अछि। वज्रनाभक पुत्रीकेँ प्रद्युम्नक प्रति अभिमुख करैत अछि तथा वज्रनाभकेँ भद्रनटक कलाक प्रति आकृष्ट करैछ। वज्रनाभ जखन भद्र-नटक नाट्यमंडलीकेँ बजा अनबाक लेल हंस-हंसीकेँ कहैत छैक तँ ओ द्वारका जाय भद्रनटक मंडलीमे सम्मिलित होयबाक लेल प्रद्युम्न, गद ओ शाम्बकेँ कृष्णसँ मांगि अनैत अछि। भद्रनटक मंडलीमे नटरूपमे ई तीनू यादववीर छद्मवेशमे रहैत छथि।

ई मंडली पहिने वज्रपुरक शाखानगरमे रामायणक अभिनय कऽ असुरकेँ प्रसन्न करैछ। तखन वज्रपुरमे वज्रनाभ द्वारा आयोजित कालोत्सवमे गंगावतरण ओ रम्भाभिसार नाटकक प्रशंसनीय अभिनय करैत अछि। जगत्प्रकाशक नाटकमे प्रद्युम्ने भद्रनटक छद्म रूपमे रहैत छथि। ई नाट्यमंडली वज्रपुरक राज्यसभामे रामायणक रामावतार प्रसंगक सविधि अभिनय प्रदर्शित करैत अछि। नाटककार एहि अभिनयक सूचना नहि दऽ गर्भनाटकक रूपमे प्रत्यक्ष प्रदर्शनक आयोजन कयलनि अछि। नाटकक भीतर नाटकक ई आयोजन भवभूतिक उत्तर राम-चरितक गर्भनाटकक स्मरण दियबैत अछि।

हरिवंशमे प्रद्युम्न-प्रभावतीक गुप्त गान्धर्व विवाहक पश्चात् सुनाभक कन्या चन्द्रावतीक संग गदक तथा गुणवतीक संग शाम्बक सेहो विवाह होइछ। विवाहक उत्तर तीनू दम्पतीकेँ वज्रनाभक कन्यापुरमे रहैत वर्षाकाल बितैत छनि जकर विस्तृत वर्णन अछि। प्रद्युम्न अपन वंशपरिचय प्रभावतीकेँ दैत छथिन। तीनू दम्पतीकेँ एक-एक पुत्रक जन्म होइत छनि जे दिव्य वरदानक प्रभावेँ जन्मक पश्चाते यौवन ओ सर्वज्ञत्व प्राप्त कऽ लैछ। ओमहर वज्रनाभ अपन पिता कश्यपक यज्ञ-समाप्तिक पश्चात् त्रिलोक-विजयक आज्ञा मङैत छनि। कश्यप मना करैत छथिन तथापि ओ स्वर्ग विजयक हेतु प्रस्थान कऽ जाइछ। एमहर प्रहरी सब वज्रपुरमे राजभवनक ऊपर तीनू बालककेँ देखि वज्रनाभकेँ सूचित करैछ। वज्रनाभ ओ प्रद्युम्नक युद्धक प्रकरण तकरा बाद उपस्थित होइछ।

अवश्ये कालक अन्तराल नाट्यप्रभावकेँ क्षीण करऽबला अछि, संगहि घटना-संकुल प्रसंगक अभिनयमे जटिलता सेहो होइत। तीनू पुत्रक उपस्थितिमे प्रद्युम्न-प्रभावतीक प्रेम-प्रवणता निष्प्रभ भऽ जाइत। अतः नाटककार बड़ कुशलतापूर्वक एकर सभक निवारण कऽ देलनि। वर्षाकालक वर्णन, प्रद्युम्न द्वारा अपन वंश-परिचय, तीनू दम्पतीक पुत्र-जन्मक घटना, वज्रनाभक स्वर्ग विजय इत्यादिकेँ सर्वथा छोड़ि देल। वज्रनाभ सुनाभक संग कश्यपसँ राजसूय यज्ञक आदेश मङैक हेतु कश्यपक आश्रम जाइत अछि। कश्यपसँ अनुमति नहि भेटलापर आपस भवनमे अबैत अछि। एमहर भवनमे महारानी प्रेमवतीकेँ एक सखी सूचना दैछ जे कन्या-पुरमे कोनो परपुरुषक प्रवेश भेल अछि। अन्तःपुरमे अयलापर वज्रनाभकेँ सेहो ई सूचना प्राप्त होइछ आ युद्धक प्रसंग आरम्भ भऽ जाइछ।

हरिवंशक अनुसार प्रभावती पूर्वहिसँ प्रद्युम्नक प्रति प्रेमासक्त छथि तेँ स्वयं-वरमे ककरो अनका वरण नहि करैत छथि। इन्द्र-प्रेषित हंसी प्रभावतीक एहि मनोभावकेँ जानि कऽ प्रद्युम्नसँ प्रभावतीक मिलनक उद्योग करैत अछि। जगत्प्रकाशक प्रभावतीहरणमे हंसीए प्रभावतीकेँ प्रद्युम्नकेँ पतिरूपमे वरण करबाक प्रेरणा दैछ—

'देखल कृष्णसुत करह विचार।
ओकर होअह तोहे दार॥'

'हे प्रभावती ! कृष्णक पुत्र प्रद्युम्न पुरुषरत्न जे तोहर उचित स्वामी।'

एहि पर प्रभावतीक अत्यन्त स्वाभाविक उत्तर होइछ जाहिसँ हुनक चरित्रमे प्रकर्ष आबि जाइछ—

'तातक वैरि सओ ई नहि उचीत।
तोहहि विचार करू नीत॥'

'हे हंसी ! हमरा बाप सओ कृष्णक सहज वैर। तन्हिका पुत्र सओ प्रीति उचित नहि।'

अवश्ये एहि परिवर्तनसँ नाट्यवस्तु ओ प्रभावतीक चरित्रमे सौन्दर्यक सृष्टि भेल अछि।

हरिवंशक अनुसार वज्रनाभ-प्रद्युम्नक युद्ध कालमे इन्द्र सहायताक हेतु अपन पुत्र जयन्तकेँ पठबैत छथिन। गदक लेल अपन रथ ओ सारथि रूपमे मातलिपुत्र सुवर्चाकेँ तथा शाम्बक हेतु प्रवर नामक गजपाल सहित ऐरावत पठबैत छथिन। ओही कालमे कृष्ण सेहो गरुड़ पर आरूढ़ भेल इन्द्रक लग अबैत छथि। जो प्रद्युम्नक हेतु गरुड़केँ पठबैत छथिन। युद्ध कालमे कृष्ण पांचजन्य शंख बजाय प्रद्युम्नकेँ आश्वस्त करैत छथि तथा हुनक सुदर्शनचक्र प्रद्युम्नक हाथमे चल जाइछ जाहिसँ वज्रनाभक वध होइछ।

प्रभावतीहरणमे ई प्रसंग सब छाँटि देल गेल। केवल कृष्ण सारणक संग आबि अपन सारंग धनुष प्रद्युम्नकेँ प्रदान करैत छथिन।

हरिवंशमे वज्रनाभक मृत्युक पश्चात् कृष्ण ओकर राज्यक विभाजन चारि भागमे करैत छथि तथा एक-एक भाग क्रमशः जयन्त, प्रद्युम्न, गद ओ शाम्बक पुत्र लोकनिकेँ प्रदान करैत छथि। परन्तु प्रभावतीहरण नाटकक युद्धमे ने जयन्त छथि ने प्रद्युम्न लोकनिक पुत्र सब। अतः प्रद्युम्नहिक राज्याभिषेक होइछ।

हरिवंशमे वज्रनाभक रानीक उल्लेख नहि अछि, ने ओकर मृत्युक पश्चात् कोनो शोकमय परिस्थितिए वर्णित अछि। जगत्प्रकाश वज्रनाभक रानी प्रेमवतीक सृष्टि कऽ एक प्रमुख नारी पात्रक रूपमे रखैत छथि। वज्रनाभक मृत्यु पर अत्यन्त करुण विलाप करैत ओ पतिशोकमे संज्ञाहीन भऽ जाइत छथि।

हरिवंशक कथानकक संग पारिजातहरण ओ उषाहरणहुक नाट्यवस्तुक तुलना कयने स्पष्ट भऽ जाइछ जे ओहुमे जगत्प्रकाश एहि प्रकारक परिवर्तन-परिवर्द्धन कऽ नाटकमे स्वाभाविकता ओ लालित्यक सृष्टि करबाक अवसरक अनुसन्धान कयने छथि।

जगत्प्रकाश अपन नाटक सबमे अनेक अवसर पर सामाजिक परिवेश, लोकाचार, ओ व्यवहारक प्रसंग जोड़ि कऽ नाट्यवस्तुकेँ लोकरुचिक अनुकूल, लोकानुरंजक ओ हृदयग्राही बना देने छथि। नलचरित ओ मलयगन्धिनी नाटकमे प्राजापत्य विवाहक विस्तृत पद्धतिक संग वैवाहिक लोकव्यवहार ओ ओकर गीतनाद, परिछनि, कोबर, जोग, उचिती इत्यादिक अत्यन्त मनोरंजक उपयोग कयलनि अछि। विवाह ओ कोबरक प्रसंग मदन-चरित्रमे सेहो वर्णित भेल अछि यद्यपि संक्षिप्तहि। मलयगन्धिनी नाटकक कोबर गीत एतऽ प्रस्तुत अछि—

समुचित नागरि नागर, नागर ई गुण सागर॥
दुहुक होअ प्रेम अचल॥ध्रु०॥
रमनिक लोचन कमल, कमलक तुल मुख एकल॥
पिरिति करए जुव जुवति, जुवति जेहने हर-अरि रति॥
जगत्प्रकाश भूपे गावल, गावल रुचिर एह कोबर॥

एहिना पुत्रजन्महुक प्रसंगकेँ विन्यास-पूर्वक जोड़ल गेल अछि। दमयन्ती ओ मलयगन्धिनीक प्रसवक अवसर उपस्थित भेला पर प्रसूयिका (दगरिन), दैवज्ञ, ज्योतिषी इत्यादि बजाओल जाइत अछि। पुत्रक जन्मभेला पर दैवज्ञ, ज्योतिषी जन्मकुंडली बनबैत अछि। ग्रहनक्षत्रक गणना कऽ नवजात शिशुक भविष्यवाणी करैछ। संयोग एहन अछि जे दमयन्ती ओ मलयगन्धिनी दुहुक पुत्रक जन्मक ग्रह-नक्षत्र माता-पिताक हेतु अनुकूल नहि होइछ। दमयन्तीक पुत्रक सम्बन्धमे ज्योतिषी कहैछ—

'आदित्य सओ नवम भाव शनैश्चर छथि। चन्द्र सओ चारिम भाव मंगल छथि। तेँ मायबापकाँ क्लेश होअब। एतेक मन्दयोग अछ।'

मलयगन्धिनीक पुत्रक सम्बन्धमे ज्योतिषीक कथन होइछ—

'मूल नक्षत्र मूल भोग जनमल छथि तेँ इहाँकाँ इहाँक रानीकाँ परम मन्द अछ।'

कृष्णचरितमे सेहो नाटककार कृष्णजन्मक प्रसंग ओ जन्मोत्सवक आयोजना कयने छल होयताह। कारण, तत्सम्बन्धी अनेक गीत सब गीत-संग्रह सबमे अछि। ओहिमे एकटा सोहर गीत एतऽ उपस्थित कयल जाइछ—

चिर जिब तोहरा शिशु बहु काल।
कर मन आनन्द सबहु गोआल॥
जुवति सबहि मिलि मंगल गाबए॥ध्रु०॥
जनम सफल भेल दुर गेल दूख।
देखल एहन वयस सुत मूख॥

धनेश जसोदा कुलमति दार।
मोर अनुमाने देवक अवतार॥
परकास भन नन्दक नन्दन।
मुदित कएल गोकुल वासि सब जन॥

नल चरितमे अनूप ओ सरूप नामक भाटक द्वारा राजा भीम ओ नलक सभामे प्रशस्ति-वाचन, नलक द्यूत-क्रीड़ाक वर्णन, मलयगन्धिनीनाटकमे नारद आ पार्वत मुनिक शास्त्रार्थ एहने प्रसंग सब थिक।

पौराणिक कथावस्तुमे बहुशः अनिवार्य पात्र सब रहैत अछि जकरा नाटककार परिवर्तित करबामे वा छोड़ि देबामे असमर्थ रहैत अछि। जगत्प्रकाशक नाटक सभ पौराणिक कथानक पर आश्रित अछि तेँ हुनक नाटक सबमे प्रयत्नपूर्वक छोड़लो उत्तर पात्रक बाहुल्य रहैत अछि। ई पात्र सब दिव्य, दिव्यादिव्य ओ अदिव्य तीनू कोटिक अछि। देवी-देवता, गन्धर्व, किन्नर, अप्सरा, जीव-जन्तु, दानव, मानव इत्यादि प्रकारक पात्र सब जगत्प्रकाशक नाटकक पौराणिक पृष्ठभूमिक अनिवार्यता थिक। परन्तु स्वयं नाटककार अपन प्रयोजनक अनुसार अभिनव पात्र सभक उद्भावना करैत छथि जे प्रमुख ओ गौण दुहू कोटिक अछि। वज्रनाभक पत्नी प्रेमवती, वाणासुरक पत्नी सुगन्धिनी ओ सुवेशा, विदर्भनरेश भीमक पत्नी कलावती, ऋतुपर्ण राजाक पत्नी प्रभावती ओ विभावती, वज्रनाभक मन्त्री सुनीति ओ सेवक मत्त, वाणासुरक दोसर मन्त्री विभाण्ड, भीमक मन्त्री, नलक मन्त्री, इत्यादि नाटककारक स्वकीय उद्भावनाक पात्र सब छनि। एहिना राजाक कोटवार, अनुचर, रानीक सखी, राजकुमारी वा नायिकाक सखी, ऋषि-मुनि लोकनिक शिष्य सन गौण पात्र सभक सृष्टि कयने छथि जकर अपन-अपन स्थान पर महत्त्व छैक।

जगत्प्रकाशक नाटकमे, एकहि कथानकमे घटनाक अनेक परिधि होइत अछि। प्रत्येक परिधिक पात्र-परिषद् होइत अछि। पहिल बेर समस्त पात्र-परिषद् मंच पर आबि अपन-अपन परिचय दैत अछि जाहिसँ ओकर स्वरूप, स्वभाव ओ महत्त्वक परिचय भेटैत अछि। अतः जगत्प्रकाशक पात्रसृष्टिमे एकटा निश्चित योजना देखबामे अबैत अछि। इन्द्रक संग शची, जयन्त इत्यादि रहथिन तँ कृष्णक संग रुक्मिणी, सत्यभामा, प्रद्युम्न, गद, शाम्ब, सारण इत्यादि रहथिन। महादेवक संग पार्वती रहथिन; महादेवक पक्षसँ नन्दी-भृंगी इत्यादि, तँ पार्वतीक पक्षहुसँ हुनक सखीलोकनि रहबे करथिन। राजाक संग महारानी, राजकुमारी, मन्त्री, कोटवार अनुचर, महारानीक सखी, राजकुमारीक सखी सब अनिवार्य रहैत अछि। असुर अपन भाइ ओ अनुचर संग अबैत अछि। ऋषि-मुनिक संग दुइ गोट बारु (शिष्य वा सेवक) अनिवार्य रहैत अछि। एहि प्रकारक अनुपूरक पात्र नाटककारक निजी

उद्भावनाक प्रतिफल रहैत अछि।

जगत्प्रकाशक पात्र सबमे चरित्र-विषयक पौराणिक अनिवार्यताक रहितो साधारण मानव-स्वाभावक संस्पर्श रहैत अछि। नायकमे ओज ओ धैर्य, साहस ओ औदात्त्य, प्रेम ओ लालित्यक संयोग रहैत अछि तँ नायिका एवं प्रमुख नारी-पात्रीमे शील-सौन्दर्य, सौकुमार्य, सौहृद्य, प्रेम-प्रवणता ओ प्रेमी वा पतिक प्रति सर्वात्म-समर्पणक गुण सर्वत्र देखबामे अबैत अछि। प्रत्येक नाटकमे खलनायक वा दुष्टपात्र रहितहि अछि जे साहसी, शक्तिवान् ओ पराक्रमीक संगहि, उद्धत, अहंकारी, वावदूक ओ परपीडक स्वभावक रहैत अछि। ई नायक-नायिकाक मिलन, इष्टसिद्धि ओ सुख-शान्तिमे बाधा उपस्थित करैत रहैत अछि। परन्तु एहन पात्र सभक पराजय, पतन वा प्राणान्त निश्चित रूपसँ देखाओल गेल अछि।

शृंगाररसकेँ रसराज कहल जाइछ। नाटकमे सामान्यतः शृंगार वा वीररस केँ अंगीरसक रूपमे स्थान देबाक निर्देश नाट्यशास्त्रमे देल गेल अछि। जगत्प्रकाशक अभिरुचि शृंगारहि दिस अधिक देखल जाइत अछि। हुनक समस्त नाटकक अंगीरस शृंगारहि अछि। प्रसंगतः अन्यान्यो रसक समावेश भेल अछि मुदा से शृंगारहिक सम्पोषण करैत अछि। हुनक नाटकक कथावस्तुक चरम परिणति नायक ओ नायिकाक स्थायी मिलनमे होइत अछि। नायक-नायिकाक मध्य स्वप्नदर्शन, गुण-श्रवण अथवा प्रथम दर्शनसँ प्रेमोदय होइत अछि। विरह-वेदना, मिलनक आकांक्षा ओ युक्तिपूर्ण प्रयत्नसँ प्राप्त प्रथम मिलनक अवसरसँ ओ प्रेम सम्पुष्ट भऽ कऽ प्रगाढ़ भऽ जाइछ। एही मध्य अनेक संकट, बाधा ओ प्रतिरोधक परिस्थिति सब अबैत अछि जाहिसँ नायकक प्राणो संकटापन्न भऽ जाइछ। नायक एहि परिस्थितिसँ साहसपूर्वक संघर्ष करैत अछि जे युद्ध धरि पहुँचि जाइत अछि। अवश्ये एहि संघर्षमे नायिका ओकर सहायिका बनल रहैत अछि। अन्ततः नायक-नायिकाक चिरमिलन होइछ तथा पति-पत्नीक रूपमे अशेष आनन्द प्राप्त करैछ। किन्तु जगत्प्रकाशक कतोक नाटकमे एहिसँ भिन्नो परिस्थितिक चित्रण भेटैत अछि। मदन-चरित्रमे नायक-नायिकाक परिणय-पूर्व परिचय नहि रहैछ। परिणयक पश्चात् दुहुक विश्लेष भऽ जाइछ। पुनरपि मिलनक अवसर अयला पर ऋषध्वजसँ मदनकेँ युद्ध करऽ पड़ैत छैक। पारिजात हरणमे दाम्पत्य प्रेमक वर्णन भेल अछि जाहिमे मानक कारणे सत्यभामा ओ कृष्णमे विश्लेष होइत छनि। पारिजातक हेतु मानिनी सत्यभामाक मानापनोदन तखने होइत छनि जखन ओ इन्द्रकेँ युद्धमे पराजित कऽ नन्दनवनसँ पारिजात वृक्ष आनि कऽ सत्यभामाकेँ प्रदान करैत छथिन।

नल चरितमे प्रेमोदय ओ अनेक बाधाक पश्चात् परिणय द्वारा मिलन होइछ अवश्य परन्तु ई मिलन चिर-विरहमे परिणत भऽ जाइछ आ नल ओ दमयन्तीकेँ दीर्घकाल धरि दुर्भाग्यक यातना सहि पुनर्मिलन प्राप्त होइछ। विप्रलम्भ ओ

सम्भोग श्रृंगारक अभिव्यक्ति जगत्प्रकाशक अन्य नाटकक अपेक्षा नलचरितमे बेसी मर्मस्पर्शी भेल अछि। हंसीक मुखसँ नलक गुण-श्रवणसँ उत्पन्न प्रेमक कारणे दमयन्तीकें विरहवेदना होइत छैक तकर अभिव्यक्ति एहि उक्तिमे भेल अछि—

सुनह हंसि मोर बोल ॥ध्रुव०॥
युवतिक यौवन निफल भेल।
कओन आनि दुख हम कें देल॥
करह विधाता विरहक पार।
मागव तुअ लग उचित विहार।
सहजहि कुलवधु कर किछु लाज।
विचारि करह हंसि हमर जे काज॥

परिणयक पश्चात् कोबर घरमे दुहुक मिलनमे सम्भोग श्रृंगारक उन्मुक्त रूप देखबामे अबैछ। दुहू एक दोसराक सौन्दर्य पर मुग्ध छथि। परस्पर प्रशंसाक कोष खोलि दैत छथि। एहन अवसर पर दमयन्तीक उल्लास ओ समर्पणक अभिव्यंजना एहि गीत द्वारा भेल अछि—

विनति हमर सुनह नागर कहिनि एक मोर॥ध्रुव०॥
तुअ मुख सुन्दर शशिसन देखल कि कहब दशन कांति।
तोहे त्यजि हमे किछु आन न सोहाबए जैसे विधु विनु राति॥
बुझल अनेक रति पुरह मोर मति जानल पहु रसिया।
भाग्ये पावल हमे त्वहे सन वल्लभ दुख दुर गेल पिया॥
हमे नहि रूपवति अलपबुद्धि धनि हमे देखि कर करुणा।
हृदय मनोहर रसमय सागर त्वहे प्रभु अति तरुणा॥
जगत्प्रकाशभूप गावए एहि रस त्वहे दुहु उचित समान।
पुरुष रतिपति यौवनवति रति सकल कलारस जान॥

एहि पृष्ठभूमिमे दीन-हीन अवस्थामे निर्जन वनमे नल द्वारा दमयन्तीक अनवधानमे परित्याग कयल गेला पर दमयन्तीक विलाप ओ विरह-व्यथाक मार्मिक अभिव्यक्ति कोनहु सहृदय प्रेक्षककें अभिभूत कऽ देबामे समर्थ अछि—

वेदन बाढ़ल अति सहि नहि होइ प्राणपहु त्यजलहु मोहि।
कथि लागि जिउब मोजे पति विनु नगरि अबे नहि हमहि सोहि॥
जुबति जौवन मोरि निफल भेल धनि विष खाय नाशब प्राणे।
बसन नडाओब भूषण नडाओब सब निधि नाडाओब जाने॥
नलक स्नेहि देहि कतहु संचर अबे विनति न मानल ओहि।
हृदयक अनुराग नलहि सओ लागल सेहे पहु त्यजलहु मोहि॥

एहि ठाम प्रथम अवस्थाक विरह ओ परवर्त्तीकालक विरहमे जे भावात्मक पार्थक्य अछि से सहृदय संवेद्य अछि।

नायक-नायिकाक प्रेम-प्रसंगमे विप्रलम्भ ओ सम्भोग श्रृंगारक अभिव्यक्तिक प्रभूत परिस्थिति जगत्प्रकाशक नाटकमे देखल जाइछ। नायिका द्वारा नायकक सौन्दर्यवर्णन, नायक द्वारा नायिकाक सौन्दर्यक प्रकर्ष-प्रतिपादन, नायक-नायिकाक विरह-वेदना, मिलनक आतुरता, मिलनकालक भावात्मक आवेग इत्यादिक वर्णनमे नाटककार ततवा निर्बन्ध भऽ जाइत छथि जे कतोकठाम मर्यादाक अतिक्रमण जकाँ प्रतीत होमऽ लगैत अछि।

श्रृंगाररस प्रधान नाटकमे नायक-नायिकाक श्रृंगार चेष्टा ओ रति-व्यापारक वर्णन स्वभाविके अछि परन्तु लगैत अछि जेना जगत्प्रकाशक नाटकमे श्रृंगाररस किछु अधिके गाढ़ अछि। नायक-नायिकासँ इतरहु पात्र-पात्रीक हेतु प्रयत्न पूर्वक श्रृंगाररसक अभिव्यंजनाक परिस्थितिक सृष्टि कयल गेल अछि। यद्यपि ई परिस्थिति दाम्पत्यक सीमान्तर्गते रहैत अछि।

जगत्प्रकाशक नाटकमे नायक-नायिकाक अतिरिक्त प्रायः जे कोनो प्रमुख पात्र अछि, सब सपत्नीक अछि। एहि दाम्पतीसबकें जखन कखनो एकान्तक अवसर भेटैछ तँ पति-पत्नी मान, विरह, मिलन, परस्पर सौन्दर्य-प्रशंसा, रतिदानक प्रार्थना, आलिंगनादि श्रृंगारचेष्टा द्वारा अपन रतिभावकें व्यक्त करैत अछि।

उषाहरणनाटकमे गौरी सरोवरमे महादेव ओ गौरी क्रीड़ारत छथि। उषाकें ओ क्रीड़ा देखि अपनहु लालसा जागि जाइछ। ई प्रसंग नाट्यवस्तुक आवश्यक अंग अछि अवश्य परन्तु एकर संकेतहुसँ काज चलि सकैत छल। तथापि नाटककार एकर विस्तृत रूप उपस्थित कयलनि अछि। महादेवक ओहि कालक रतिभावक अतिशयताक सूचक निम्न उद्धरण द्रष्टव्य थिक—

महादेव—हे प्रिये, तोहर सौन्दर्य देखि हमर चित्त थिर नहि। तें किछु कहब से सुनु—

हंस गमनि गोरि परिसम होयत अति अपने सुकुमारि।
मोहे ओरे।
सुताओब बहुत कोमल सज्जा जे विधि न होयतहु बारि॥
तोहे हरखे हमे उरजुगे निदावह मांगब सुरति मोजे आवे।
तुअ गल मोतिमाल मनिहि विराजित बहुतहु सुफल पावे॥
अनुभव मांगब रंगरस कौतुक हंसि-हंसि देख तोहि मुखे।
जनम गमायब आध देह तोह धरि बहु दिन लेब मोजे सुखे॥

महादेवक रति-वैकल्यक जें एहन वर्णन भेल अछि तँ सामान्य मानव-दम्पतीक रतिभावक अतिरेकताक अनुमान करब सरल अछि। महादेव-गौरी, इन्द्र-शची, कृष्ण-रुक्मिणी ओ सत्यभामा, वज्रनाभ-प्रेमवती, वाणासुर-सुगंधिनी ओ सुवेशा, विदर्भ नरेश भीम-कलावती, ऋतुपर्ण-प्रभावती ओ विभावती, गन्धर्वराज वसुभूति-मदना, धर्मपाल-विलासिनी, ऋषध्वज-मनोरमा, भुजबल-शशिमुखी इत्यादि अनेक दम्पतीक रतिव्यापारक उद्दाम स्वरूपक प्रदर्शन जगत्प्रकाशक नाटक सबमे होइत अछि जकर गीतसबमे उक्तिक चमत्कार ओ भावक उत्कृष्टताक अछैतो, एहन प्रसंगक सन्निवेश मुख्यकथामे कोनो योग नहि दैत अछि, प्रत्युत अनेकठाम अप्रासंगिक, असन्वित ओ क्वचित् मर्यादाक अतिक्रमणो लगैत अछि, तथापि ओहि कालक नेपालीय प्रेक्षकक मानसिक सन्तोषक लेल जेना ई अनिवार्य साधन छल जकर नाटककार उपेक्षा नहि कऽ सकैत छलाह। एहना स्थितिमे नाटककार नायक-नायिकाक प्रेम ओ रतिव्यापारकेँ विस्तारसँ उपस्थित करैत छथि तँ तकरा अस्वाभाविक नहि कहल जा सकैछ।

जगत्प्रकाशक नाटकमे शृंगारक पश्चात् वीर रसक व्यापक रूपमे अभिव्यक्ति भेल अछि। हुनक प्रत्येक नाटकमे युद्धक परिस्थिति उपस्थित होइत अछि। युद्धमे नायकक विजय होइत छैक। नायकक युद्धोत्साह, पराक्रम-प्रदर्शन ओ विजय-प्राप्तिमे वीररसक अभिव्यंजना भेल अछि। परन्तु एही संग रौद्र ओ भयानक रस सेहो प्रसंगतः अभिव्यक्त होइत अछि। प्रभावतीहरणमे प्रद्युम्न-वज्रनाभक युद्धक अन्तमे वीभत्स रसक परिपाक निम्नलिखित वर्णनमे भेल अछि—

मुदिते नाचल भूत डाकिनि परेत पिशाचे ॥ध्रु०॥
करेजं आंत मासु खाए काचे-काचे।
ए खाएके आनन्दते नाचे॥
इ सबे पिबए लोहु डाकिनि लोके।
हाथ पाव खाए गृध थोके॥

वज्रनाभक मृत्यु भेलापर पतिशोक-सन्तप्ता प्रेमवतीक विलापमे करुण रसक मर्मस्पर्शी अभिव्यंजना भेल अछि—

शिव शिव पहुके ई गति भेल।
मोरा रतन दैव हरि लेल॥
जे हमे मांगल सब प्रभु देल॥
ऐसन प्राणनाथ अबे दुर गेल॥
एहन पति सञो भेल वियोग।
नासब तनु हमे चिन्तब योग॥

हंस-हंसीक मनुष्य जकाँ बाजब, भ्रमर रूपमे प्रद्युम्नक प्रभावतीलग पहुँचब, चित्रलेखा द्वारा उषाक स्वप्न-पुरुषक चित्रांकन, तामसी विद्याक बलेँ चित्रलेखा द्वारा द्वारका जाय ओहि ठामसँ अदृश्य रूपमे अनिरुद्धकेँ उषाक निकट लऽ आनब, द्वारकाक शृंगारमण्डपसँ अनिरुद्धक अकस्मात् अलोपित होयब, मलयगन्धिनीक पुत्रक जन्मक पश्चात् ओहि शिशुकेँ विकटा देवीक मन्दिरमे राखि देलापर ओकर तत्क्षणे सोलह वर्षक भऽ जायब सन घटनामे स्पष्टतः अद्भुत रसक अभिव्यंजना होइछ।

लगैत अछि जेना हास्यरस जगत्प्रकाशक रुचिक अनुकूल नहि छल। कारण, नाटकमे वा गीतमे हास्यरसक कतहु संकेत नहि भेटैत अछि। तथापि पारिजात-हरणमे नारद द्वारा रुक्मिणी ओ सत्यभामाक मध्य कलह-सृष्टि ओ अन्तमे सत्यभामा द्वारा अपन प्रियतम वस्तु कृष्णकेँ यज्ञक दक्षिणा रूपमे नारदकेँ प्रदान करबामे हास्यरसक क्षीण अवस्थिति देखि पड़ैत अछि। प्रभावतीहरणमे अवश्ये एकगोट स्थल हास्य रसक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि। ओ स्थल थिक वज्रनाभक समक्ष प्रद्युम्नादि द्वारा अभिनीत नाटक। ओहि नाटकमे हास्य रसक मनोहारी अभिव्यंजना भेल अछि।

राजा लोमपादक आदेशसँ चारिगोट वेश्या विभाण्डक ऋषिक पुत्र ऋक्षश्रृंगकेँ परतारि कऽ अनबाक उद्देश्यसँ विभाण्डक ऋषिक अनुपस्थितिमे हुनक आश्रम पहुँचैत अछि। एकसरमे ऋक्षश्रृंगकेँ देखि चारू जनी हुनका अपना आश्रम चलबाक अनुरोध करैत छथि। सांसारिक अनुभवसँ हीन, युवतीजातिसँ सर्वथा अपरिचित ऋक्षश्रृंग ओकरहु लोकनिकेँ तपस्वीए बूझि ओकर प्रस्ताव स्वीकार करैत जे जिज्ञासा करैत छथिन तथा चतुरा युवती जे उत्तर दैछ, तद्विषयक संवादमे हास्यरस पूर्ण रूपमे विद्यमान अछि—

ऋक्षश्रृंग : जाए देखब ओहे आसम तोर।
तुअ देह परसन शित भेल भोर॥
तोहे लोक जे कहय से हमे करब।
किए हिए राखल शिरिफल अभिनव॥

हे लोके ! हम इहाक बोल करब। हम संदेहनिवृत्ति करू। हमर बाप तपस्वी इहाय लोके तपस्वी। हमर पिताकाँ बड़ छोड़, इहाय लोककाँ किछु छोड़ नहि। हमर पिताकाँ छाति श्रीफल नहि, इहाय लोककाँ दुयि दुयि श्रीफल। ए विशेष कहेल भेल ?

वेश्या : हे ऋक्षश्रृंग ! हमरा पूर्ण तपस्या भेल तकर फल ई फड़ैछ। इहाक पिताकाँ तपस्या पूर्ण नहि भेल।

ऋक्षशृंग : हे लोके ! हमर अभाग्य। बापकाँ तपस्यापूर्ण नहि भेल।

वेश्या : हे ऋक्षशृंग ! हमर आश्रम चलु। हमहि सन पूर्णफल तपस्वी अनेक देखब।

(शब्दार्थ : आसम—आश्रम। इहाय, इहा—अहाँ। छोड़—दाढ़ी-मोछ। छाति—छाती, वक्षःस्थल। कहेन—कोना। श्रीफल-बेल।)

पिताक अयला पर ऋक्षशृंग हुनका अपन देखल अद्भुत तपस्वी सभक आगमनक समाचार कहैत ओकर सभक विवरण दैत छथिन—'हे तात ! छोड़ नहि। छाति दुइ दुइ श्रीफल। अपूर्व नयन तरंग, स्वर मधुर।'

एहिठाम व्यावहारिक जीवनक अनुभवसँ अनभिज्ञ, निश्छल, अबोध युवा तपस्वी ऋक्षशृंगक अभूतपूर्व अनुभव, शंका ओ वेश्या द्वारा प्रदत्त समाधान हुनका लेल अद्भुत ओ आश्चर्यजनक अवश्य छनि परन्तु प्रेक्षकक हृदयमे एहि प्रसंगसँ हास्य रसहिक सृष्टि ओ तज्जन्य आनन्दानुभूति होइछ।

नाटकमे शान्तरसक अभिव्यंजनाक सम्बन्धमे विवाद रहल अछि। भरतक नाट्यशास्त्रमे नाट्यरसक रूपमे शान्तरसक विवेचन नहि अछि। दशरूपकमे धनंजय कहैत छथि जे शम नामक स्थायी भावक अछैतो नाट्यमे एकर पुष्टि नहि होइत अछि—

शममपि केचित् प्राहुः पुष्टिर्नाट्येषु नैतस्य।

दोसर दिस भरतक व्याख्याता अभिनव गुप्त नाट्यमे शान्तरसक अभिनेयता स्वीकार करैत छथि। हुनका विचारेँ नाट्यशास्त्रमे शान्त रसक नाट्यरस रूपमे विवेचन अवश्य छल किन्तु शान्तरसक विरोधी लोकनि द्वारा ओ अंश निक्षिप्त कऽ देल गेल।

स्थिति जे मानल जाय परन्तु जगतप्रकाशक नाटकमे भक्ति तत्त्व ओ शान्तरसक सन्निवेश भेटैत अछि। नाट्यवस्तु सबमे अनेक स्थल पर विष्णुक अवतार कृष्ण, शिव-पार्वती, भगवती इत्यादिक प्रति भक्तिभाव प्रदर्शित भेले अछि।

जगतप्रकाशक नाटक कृष्णचरित श्रीमद्भागवत पर आधृत अछि जे पूर्वहि देखल गेल अछि। श्रीमद्भागवत वैष्णव भक्ति तत्त्वक श्रेष्ठतम ग्रन्थमे अन्यतम मानल जाइत अछि। अतः कृष्णचरितहुमे भागवत-प्रथित भक्ति तत्त्वक अवक्षेपण भेल अछि।

जगतप्रकाशक नाटकसभक अन्तमे वैराग्य ओ निर्वेदक भाव प्रदर्शित भेल अछि। नाटकक नायक वा अन्य प्रमुख पात्र काव्यसंहार करैत एहि संसारकेँ असार

मानि परमेश्वरीक भक्तिपूर्वक जीवन यापन करबाक संकल्प करैत अछि जकर समर्थन मंचस्थ अन्य पात्र सब करैत अछि। एही संग नाटकक समापन होइत अछि। प्रत्येक नाटकक अन्तमे जगतप्रकाशहिक रचित एकटा झूमरि गीत 'अथिर कलेवर जानु हे' सामूहिक रूपसँ गाओल जयबाक विधान अछि जाहिमे संसारक क्षणभंगुरता ओ अनित्यता देखबैत ओहिसँ विरत भऽ मोक्षमार्गानुसन्धानक भाव प्रतिपादित अछि। एहि तरहेँ जगतप्रकाशक नाटकक अन्त शान्तरसहिक संग होइत अछि।

जगत्प्रकाशमल्लक गीत

जगत्काशमल्लक अनेकानेक गीत-संग्रह सब भेटैत अछि जकर सभक विवरण पूर्वंहि देल गेल अछि। एहि गीत-संग्रह सबमे दुइ कोटिक गीत सब अछि—नाटकक गीत ओ मुक्त गीत। जगत्प्रकाशक नाटक सबमे गीतक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। ओहि गीत सबकेँ सेहो एहि संग्रह सबमे संकलित कऽ लेल गेल अछि। एहि नाट्यगीत सभक अर्थबोधक हेतु नाट्यप्रसंगक अपेक्षा रहैत अछि। परन्तु मुक्तगीत सब ओ अछि जाहिमे पूर्वापर घटना-प्रसंगक कोनो अपेक्षा नहि रहैछ। ओकर भाव ओ अर्थ अपनामे पूर्ण रहैत अछि।

जगत्प्रकाशक नाटक सबमे संवाद सब गद्य ओ गीतमे अछि। छोट-छोट गद्य-संवादक संग गीत सभक प्रचुर प्रयोग अछि। ई गीत सब नाटकक प्राण थिक। गीतहिसँ नाटकक घटनाक्रमक विकास सूचित होइत अछि। पात्रक कार्य, मनोभाव ओ चरित्रक अभिव्यक्ति होइत अछि। एहि नाटक सभक प्रस्तावनामे नान्दीगीत पुष्पांजलि गीत, राजवर्ण्णना गीत, नगरवर्ण्णना वा देशवर्णना गीत रहैत अछि। नाट्यान्तमे शिव, भगवतीक स्तुति गीत ओ वैराग्यभावक गीत रहैत अछि। नाट्यवस्तुमे प्रवेशगीत, पैसारगीत, निस्सार गीत, वर्णनात्मक गीत ओ संवाद-गीत रहैत अछि। ई गीत सब तीन कोटिक होइत अछि—लघुगीत, दण्डक गीत ओ पूर्णगीत। लघुगीत एक, दुइ, तीन वा चारि चरण मात्रक होइत अछि जाहिमे कोनो भणिता नहि रहैत अछि। एहि गीत सबमे नाट्यवस्तुक पूर्व वा भावी कार्य-व्यापरक संकेत रहैत अछि। जगत्प्रकाशक नाटकमे एकटा विशेष प्रकारक संवाद गीतक प्रयोग भेल अछि जकरा दण्डक वा दण्डकगीत कहल गेल अछि। नाट्यवस्तुक स्थल विशेष पर एकहि रागमे दुइ पात्र दुइ-दुइ चरणमे अपन संवाद उक्ति-प्रत्युक्ति रूपमे कहैत अछि। एहि प्रकारक गीतकेँ दण्डकगीत कहल जाइत अछि। पूर्ण गीतमे भाव पूर्ण रूपमे व्यक्त रहैत अछि तथा अन्तमे कवि नामक भणिता रहैत अछि। एहन गीतकेँ कोनहु पात्रक उक्ति रहबाक कारणेँ एकरा पूर्ण संवादगीत कहल जा सकैत अछि। पूर्ण संवादगीत पात्रक मानसिक उल्लास, गहन उद्वेग, चिन्ता, अभिलाषा, संकल्प इत्यादिक अभिव्यक्ति हेतु प्रयुक्त भेल अछि। एहिमे बहुत गीत एहनो अछि जे अपनामे पूर्ण अछि तथा

सन्दर्भसँ विच्छिन्न भेलो पर ओकर अर्थबोधमे प्रसंग-अभिज्ञानक अपेक्षा नहि रहैत अछि।

गीतावली ओ नानार्थ गीत संग्रहमे उपरिचर्चित विभिन्न प्रकारक नाट्य-गीत सब संकलित कऽ देल गेल अछि जकर सूची ग्रन्थक विवरणक प्रसंगमे देखल जा सकैत अछि। एहिसँ इतर जगत्प्रकाशक मुक्त गीत सब विभिन्न गीत संग्रह सबमे संकलित अछि जाहिमे नाटकक ओहन पूर्ण संवाद गीत सब सेहो मिश्रित अछि जे अपनामे सम्पूर्ण अछि।

जगत्प्रकाशक मुक्त गीत सभक वर्ण्यवस्तुकेँ समग्ररूपमे देखला उत्तर दुइ गोट भावधाराक दर्शन होइत अछि : शृंगार ओ भक्तिक। एकटा तेसर धाराक प्रतीति होइत अछि 'गीत पंचक' नामक संग्रहमे जाहिमे वैयक्तिकताक योग सहित करुण रसक अभिव्यंजना भेल अछि।

कविक शृंगाररसात्मक गीतमे नायक-नायिकाक प्रेम ओ रतिक विभिन्न अवस्थाक चित्रण भेल अछि। ई गीत सब नायक, नायिका वा दूतिक उक्तिक रूपमे अछि। कवि नायककेँ कखनो पुरुप ओ कखनो नागर कहैत छथि, तहिना नायिकाकेँ कखनो स्त्री ओ कखनो कलावती कहैत छथि। गीत-संग्रह सबमे शृंगार रसाक ई गीत सब अनेक शीर्षक सबमे देल गेल अछि जाहि मे छओ गोट मुख्य शीर्षक अछि—पुरुषोक्ति गीत, स्त्रियोक्ति गीत, पुरुष विरहगीत, स्त्रीविरह गीत, दूती कलावति-संवाद ओ दूती-नागर संवाद। पुरुप ओ स्त्रीक उक्ति-गीतमे प्रेमासक्ति, पूर्वराग, प्रेमास्पदक रूप, सौन्दर्य, स्वभाव, प्रेमजन्य आकर्षणक प्रस्फुटन, आत्मतृप्ति इत्यादिक भाव वर्णित भेल अछि। विरह गीतमे नायक-नायिका विश्लेषसँ उत्पन्न दैहिक दशा, मानसिक व्यथा, आशा-निराशाक भाव व्यक्त करैत अछि। दूतीक उक्तिमे नायककेँ सम्बोधित कऽ नायिकाक तथा नायिकाकेँ सम्बोधित कऽ नायकक सौन्दर्य, प्रेम, विरहदशाक वर्णन करैत मानक परित्याग कऽ मिलनक कर्त्तव्य-बोध करयबाक भाव वर्णित अछि।

एहि गीत सबमे स्वकीया ओ परकीया, उभय कोटिक प्रेमक वर्णन भेल अछि। परन्तु कवि स्वकीयत्वकेँ अधिक महत्वे नहि देल अछि अपितु ओकरा श्रेयस्कर मानल अछि। नायिकाकेँ वेसी काल बधु, बालबधु, शिशुबधु, कुलबधु, कुलवनिता इत्यादि नाम दैत छथि। स्वकीया भावक प्रति कविक दृष्टिकोणक परिचय हुनक उक्तिए सबसँ भेटि जाइछ जाहिमे बधूकेँ पति-अनुरक्तिक निर्देश दैत छथि अथवा दाम्पत्य-रति ओ पतिभक्तिकेँ श्रेयस् स्थान दैत छथि। शृंगार-रसक विभाव, अनुभाव, संचारी भावक संयोजन उन्मुक्ततासँ करितो किछु एहन विशेषण, क्रियापद वा उक्तिक प्रयोग कऽ दैत छथि जाहिसँ समस्त गीत स्वकीया भावमे मर्यादित भऽ जाइछ। एहन किछु उक्तिक दृष्टान्तसँ एहि अभिमतक पुष्टि होइत अछि, यथा—

1. मोरा मन वचने तोहहि पए आरे।
तोहर चरणतरे धूरि भए वासे॥
2. भनथि जगत्प्रकाश नृप सुन बर युवति।
पुरावह तोहे अपन पतिक मति॥
3. कुलवनिताका करम थिक एहन पिया तेजि आन नहि देवा।
4. सुनह हमर मति आन नहि मोर गति पिया लागि अत(र)प परान।
5. कमलिनिका एक भमरहि सोभ।
6. पहु विनु अवला केओ नहि सोभ।
7. पति विनु अवला किछु नहि काज।
8. अवला पति विनु केउ नहि सोहे।
9. न होअ पति विनु रति।
10. पहु विनु रहए न जाए।
11. भोए नारि तोहरे सोआधिन।
12. सहजहि कुलबधु कर किछु लाज।
13. पियतम हम धनि जाति सुकूल।
14. नाथ बिनु नारि नहि किछु सोहे।

दोसर दिस परकीया प्रेमक प्रति नकारात्मक मानसिकताक अनुमान परकीया नायिकाक प्रति कविक एहि भर्त्सनात्मक उक्तिसँ भेटैत अछि—

पहु तजि तरुनि लेल कुलटा पद
की लेह पापक भाला।

ई बात नहि जे कवि नायककेँ निर्द्वन्द्व छोड़ि देने छथि। ओ नायकोकेँ स्वकीयाप्रेमक मर्यादामे रहबाक निर्देश दैत छथि—

'एक भमर कर नलिनि के आस।'
'कर पिए कुलबधु भावक आस।'
'चलु अपनुक वास।
कि कर पर नारि आस॥'

नायक अधनहु नायिकाक मानापनोदनक चेष्टा करैत जे भाव व्यक्त करैत अछि ताहिसँ स्वकीया प्रेमक प्रति कविक मानसिकताक संकेत भेटैत अछि—

तरुनि कटि हरिननृप नाभि तुअ गभीरे तोहर उरु गजकर समाने।
अउर नहि प्रेअसि मोर तोहहि एक पए न कर अति एखन तोहे माने॥
तोहहि मोर गृहिनि थिकि तोहहि मोर प्रानक बहुत निक मनिमय हारे।
हमर दुःख करह दुर विहसि हरि कर हे सुन्दरि तोह सुख विहारे॥

प्रेम जगत्प्रकाशक दृष्टिमे सर्वश्रेष्ठ वस्तु थिक। कवि प्रेम ओ प्रेमरसक महिमा-गान मुक्त कण्ठसँ गओलनि अछि। प्रेमकेँ स्पर्शमणि (प्रेम-परसमनि)क संज्ञा दैत कहैत छथि जे जल ओ मीन सदृश प्रेम करू। प्रीति जोड़ि ओकरा तोड़ नहि, कारण टूटल प्रेमकेँ जोड़ब कठिन अछि। प्रीति एकटा दुर्लभ वस्तु थिक जे बड़ पुण्यसँ प्राप्त होइछ। प्रीतिक वशीभूत सभ देही अछि। कविक प्रीति-प्रशस्तिक किछु कथन उद्धृत कयल जाइछ—

1. पिरिति बस सब देहि।
2. जगत्प्रकाश कहय एहि रस प्रीति करह विचारि ओ।
जकर सुकुल सुशील होअ जन सबहि करिए संभारि ओ॥
संभारि मिलह जे निए तुर।
पुनु जनु कर नीथु(ठु)र॥
3. टूटल पिरिति पुनु जोरए कठीन।
प्रेम करह सखि जइसे जल मीन॥
4. पीरिति करह जइसे जल मीन।

जगत्प्रकाश शृंगाररसक माध्यमे प्रेमरसहिक गान करैत छथि—'जगत्प्रकाश प्रेमरस गावे'। प्रेमरसक सागरमे प्रेमी ओ प्रेमिकाक तन-मन-प्राण निमज्जित रहैत अछि—

पहुक प्रेमरस दुहु तनु लागल,
रस सागर प्रभु जाय।

रसमे श्रेष्ठ प्रेमरस अछि। प्रेमरससँ बढ़ि आन किछु नहि। प्रेमक संबल पावि निष्कलुष वधू जीवन धारण करैत अछि। प्रेम प्राणक विभूति थिक—

सवहि रसपर प्रेम बड़ रस प्रेम सम नहि आन ओ।
प्रेमहि के हुति जिअए सिशुबधु प्रेमहि विभुति परान ओ॥

प्रेम शृंगाररसक आधार थिक तेँ जगत्प्रकाश शृंगार रसकेँ अत्यन्त पवित्र मानैत छथि। एहि रसकेँ 'उत्तमरस', 'शुचिरस', 'उज्ज्वलरस' कहि कऽ महिमा-मण्डित करैत छथि। रसिकहृदयेकेँ एहि रसक प्राप्ति होइछ। के एहन अछि जे एहि रसक वशीभूत नहि होअय। एकर मर्म कामदेव ओ रति अथवा गौरीपति महादेवे बुझैत छथि—

1. जगत्प्रकाश भन एह अति उत्तम रस।
2. जगत्प्रकाश रस बिरहक गाव।
3. रसिक जुवहि पए ई रस पाव।

4. जगत्प्रकाश भूप गाबए एहि रसे तोहे दुहु उचित समान।
पुरुष रतिपति यौवनवति रति सकल कलारस जान॥
5. जगत्प्रकाश रस शुचि भाने।
6. प्रकाश भूपति गाब ई शुचि रस।
से रसे जुवजन के न करय बस॥
7. परकाश नृप रस उज्ज्वल भान।
एकर भाव गौरीपति जान।
8. सानन्दमुज्ज्वल रसोल्लसितैक भावो···

जगत्प्रकाश शृंगाररसकेँ उत्तमरस, शुचिरस, उज्ज्वलरस तथा प्रेमरस कहि कऽ ओकर महनीयता स्थापित करैत छथि। वंगीय वैष्णव सम्प्रदायमेँ राधाकृष्णक प्रेमलीलामे निहित शृंगार रसकेँ सामान्य लौकिक शृंगारसँ भिन्न मानल गेल अछि। राधाकृष्णक अलौकिक प्रेमसँ निस्यन्दित रस सामान्य कोना भऽ सकैत अछि। अतः एकरा आदिरस वा मधुर रस कहल गेल अछि। एही मधुर रसकेँ प्रीतिरस वा प्रेमरस कहल गेल अछि। शृंगाररसक समस्त उपादान ओहि अलौकिक रागानुगा मधुराभक्तिक उपादान बनि जाइत अछि जकर विषय ओ आश्रय राधा ओ कृष्ण छथि। एहि रसमे परकीयाभावकेँ परम प्रतिष्ठा देल गेल अछि। चैतन्य चरितामृतमे कहल गेल अछि—'परकीया भावे अति रसेर उल्लास'। परकीया रतिक चरम परिणति राधा-माधव-प्रीतिमे होइत अछि। एकरे राधाभाव वा महाभाव कहल गेल अछि। वैष्णव आचार्य रूप गोस्वामी 'उज्ज्वल नीलमणि' नामक ग्रन्थमे एहि रसकेँ उज्ज्वल रस कहलनि अछि।

जगत्प्रकाश की एहि वैष्णव रसशास्त्रसँ प्रेरित-प्रभावित भऽ कऽ अपन काव्यक मुख्य रसकेँ उज्ज्वल रस, प्रेमरस, शुचिरस वा उत्तमरस कहलनि अछि, ई प्रश्न उठि सकैत अछि।

भरत नाट्यशास्त्रमे शृंगार रसक विवेचन करैत काल एहि रसक स्वच्छता, पवित्रता ओ निष्कलुषता देखयबाक लेल उज्ज्वल, शुचि, मेध्य, हृद्य इत्यादि शब्दक प्रयोग अछि।[1] अमरकोषमे भरत प्रदत्त विशेषणकेँ शृंगारक पर्याय मानि लेल गेल —शृंगारः शुचिरुज्वलः। महाकवि जयदेव 'गीत गोविन्द'क राधा-कृष्ण विषयक

1. नाट्यशास्त्र (काव्यमाला), अध्याय-6, पृ० 95-96
तत्र शृङ्गारो नाम रतिस्थायि भावप्रभव उज्ज्वलवेषात्मः। यथा यत्किञ्चिल्लोके शुचि मेध्यमुज्ज्वलं दर्शनीयं वा तच्छृङ्गारेणोपमीयते। यस्तावदुज्ज्वलवेषः स शृङ्गारवानित्युच्यते।···हृद्योज्ज्वलवेषात्मकत्वाच्छृङ्गारो रस इति।

शृंगार रसात्मक गीतकेँ उज्ज्वल गीति कहने छथि।[1] पन्द्रहम शताब्दीमे पूर्वोत्तर भारतक शुभंकर अपन 'संगीत दामोदर' नामक ग्रन्थमे शृंगाररसक हेतु विशेषणक रूपमे उज्ज्वल ओ शुचि शब्दक प्रयोग कयने छथि।[2] शुभंकर एही ग्रन्थमे प्रेमरसहुक उल्लेख कयने छथि किन्तु हिनक प्रेमरस वैष्णव प्रेमरससँ भिन्न सन्तति-प्रेम-विषयक अछि जकरा वत्सल सेहो कहल गेल अछि।[3]

जगत्प्रकाशक कतोक गीत ओ कृष्णचरित नाटकमे गोपी ओ कृष्णक प्रेमक प्रसंग वर्णित अछि। परन्तु लगैत नहि अछि जे ओ शृंगार रसकेँ उज्ज्वल वा शुचि-रस कहबामे वैष्णव भावधारासँ प्रभावित भेल छथि। अवश्ये शृंगाररसकेँ जखन प्रेमरस कहैत छथि तँ वैष्णव दर्शनक शृंगार-पक्ष हुनका मानसमे व्याप्त रहैछ। अन्यथा वैष्णव दर्शनमे परकीया भावक श्रेष्ठता अछि। जगत्प्रकाश स्वकीया भावकेँ श्रेयस्कर मानैत छथि। वैष्णवमतक शृंगार अलौकिक प्रेमा भक्ति-परक अछि, जगत्प्रकाशक शृंगार लौकिक अछि तथा भक्ति भावक कोनो संकेत नहि अछि।

एकर अर्थ ई नहि जे जगत्प्रकाशमे भक्तिभाव नहि अछि। विभिन्न देव-देवीक भक्तिक गीतक रचना ओ कयने छथि। एहि कोटिक गीत 'गीतावली' नामक संग्रहमे 'देवभाव' शीर्षकक अन्तर्गत संकलित अछि। नाटकक नान्दीगीत ओ समापनक गीत सब भक्तिभावसँ पूर्ण छनि। एहि सबमे विष्णुक अवतार कृष्णक किछु स्तुति परक गीत सब अछि। किन्तु एहिसँ अधिक परिमाणमे शिव-पार्वतीक वन्दना विषयक गीत सब अछि। एक गीतमे शिव ओ विष्णुक एकात्मकता प्रतिपादित करैत दुहु देवक हरिहर स्वरूपक समानान्तर स्तुति कयल गेल अछि—

जय चन्द्रशेखर जय मधुरिपु माधव,
जय करह दुहु ईसर॥ध्रु०॥
एक दिस अछि तिरशूल अभय।
आध दिस कर चक्र पदुम धरय॥
गिरिनन्दिनि सहित बसह चढ़ल।
लछिमि संगे गरुड़ासन बैसल॥

1. श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्ज्वल गीति।
2. संगीत दामोदरः पंचम स्तवक (संस्कृत कालेज, कलकत्ता)
अत्युज्ज्वलः शुचिर्दक्षः शृङ्गारो दृङ्मनः प्रियः।
3. तत्रैव
कश्चिदयाह-प्रेमनामा अपरो रसोऽस्ति, तन्मते दश रसाः भवन्ति।
प्रेमरसोदाहरणञ्च मातापुत्रमालिङ्गति पितापुत्रमालिङ्गति इत्यादि।
एतस्यैव प्रेमनाम्नो रसस्य मालती माधव टीकायां वत्सल इति नाम।

एक मुख दुयि आध नयन तोर।
विनति सुनिय देव किछुओ मोर॥
मोहि अनाथक पुरथु आस।
एहे रस भनथि जगतप्रकाश॥

गम्भीरतासँ जगतप्रकाशक रचना सभक मनन कयलासँ ई बात स्पष्ट भऽ जाइछ जे कविकेँ शिव ओ शक्तिक प्रति अनन्य भक्ति छलनि। शृंगार रसहुक गीत सभक भणिताक चरणमे निष्कर्ष रूपमे शिव अथवा ईश्वरीक आश्रयण कऽ सकल इष्टपूर्त्तिक कामना कयल गेल अछि। तथापि इहो मानऽ पड़ैछ जे जत्प्रकाशमे भगवतीक प्रति भक्तिक अतिशयता छल। हुनक अधिकांश नाटक परमेश्वरीक प्रीत्यर्थ रचित ओ अभिनीत भेल छल। कवि सर्वत्र अपनाकेँ 'देवी चरण कमल मधुकर' कहैत छथि। कविक कुल देवता छलथिन तलेजु भगवती। अतः भगवतीक प्रति कविक आत्मसमर्पण भाव सर्वथा स्वाभाविक अछि। अत्यन्त कष्ट ओ विपत्तिक क्षणमे ओ भगवतीक शरणमे जाइत छथि। अपन व्यथा-कथा कहि ओहिसँ त्राण करबाक प्रार्थना करैत छथि। देवीक कृपाकेँ ओ सर्वोपरि मानैत छथि। देवीक प्रति कविक अखण्ड निष्ठाक भाव विभिन्न भावक गीतक भणितामे तथा बहुतो स्वतन्त्र गीत सभमे अभिव्यक्त भेल अछि। किछु भणिताक चरण एतऽ देल जाइत अछि—

'हम देखि करुणा करह भवानी'
'जनमे जनमे हम जननी दासे'
'पुरावथु हमरा आस भवानी'
'देवि सेवा विनु किछु नहि पाविअ मोर मन एहि पए जान'
'देवि चरण मोर मती'
'मोरा चण्डि चरण एक आस'
'जननि सेवा विनु किछु नहि पाव'
इत्यादि।

जगत्प्रकाशक देवी-वन्दना विषयक एक-दुइ गोट गीत सेहो प्रस्तुत अछि जाहिसँ कविक भगवती-भक्तिक परिचय भेटत—

अनेक अपराध होए हमरा क्षमह जगत मात।
किछु सेवा कएल मोए नित्य नित्य करह सुदिठिपात॥
करुणा ते सुनि हमर विनति पुरह तोहे भवानि।
चारि पदारथ मागल मोए तोहे से देह सेवक जानि॥
अउर कि विनति करब हम तोह ई सब तोहहि जान।
पद युग धरि कह प्रकाश नृप सरण नहि मोर आन॥

नहि आनगति हमरा माता॥ध्रु०॥
मोजे मन वचन कएल तुअ सेवा।
करुणा कर कुल देवा॥
मोर अपराध क्षमह तोहे माता।
मोर रिपुका कर घाता॥
एहे संसार तोहे देवि सिरिजर।
तोहहि देह अभय वर॥
कर जोरि विनति कर प्रकाश।
पुरावथु मोर आस॥

जगत्प्रकाशक नाटक ओ गीत सबमे हुनक संघर्षमय जीवन, ओहिमे आयल निराशा ओ अवसाद, ओहिसँ मुक्तिक हेतु देवी-देवताक शरणापन्नता इत्यादिक प्रतिबिम्ब देखल जा सकैत अछि। एहिठाम स्मरण राखक थिक जे एक समयमे काठमाण्डूक राजा प्रतापमल्ल जगत्प्रकाशकेँ दीन-हीन दशामे पहुँचा देने छलथिन आ परिस्थिति एहन भऽ गेल छल जे जगत्प्रकाशकेँ राज्यच्युत भऽ पलायन करबाक अतिरिक्त और कोनो उपाय नहि रहि गेल छलनि। एहने परिस्थितिमे जगत्प्रकाश अपन कुलदेवीसँ याचना करैत छथि—

'मोर रिपुका कर घाता'
'जे हमरा अरि कर तसु नासे'
'निअ पद सओ हम जनु कर दूर'।

एकटा गीतमे वैयक्तिकताक अभिव्यक्ति अत्यन्त मर्मस्पर्शी भेल अछि। एहिमे जगत्प्रकाशक जीवनक ओहि स्थितिक आभास भेटैत अछि जखन सब दिससँ निराश भऽ कऽ श्रीनिवासमल्लक शरणापन्न भेल छलाह। भगवतीक प्रार्थना विषयक ओ गीत निम्न रूपक अछि—

जत अपराध मोर क्षमह भवानि।
होइतहु बेरि बेरि जानि अजानि॥
संकट बड़ भेल दुर कर दुख।
सुदिठिहि देखि कए कह मोहि सुख॥
निअ शिशु जनु भिखि मगाबह मायि।
सब दुख मोर देवि कहि नहि जायि॥
जगत्प्रकाश कह तोहे अधार।
करुणा कए मोर कर उपकार॥

श्रीनिवासमल्ल जगत्प्रकाशक विरुद्ध प्रतापमल्लक संग देब छोड़ि जगत्प्रकाश-

मल्लकें सम्मान पूर्वक अपना ओहिठाम स्वागत कऽ मैत्रीक हाथ बढ़ौने छलाह तथा जीवनभरि मैत्रीक निर्वाह करैत रहलाह। एहि घटनाक अभिव्यंजना कविक एहि पंक्तिमे होइछ—

जगतप्रकाश भन एहन मीत।
जेहि कर आपद् सेहे मोर मीत॥

वैयक्तिक जीवनक अनुभूतिकें काव्यक माध्यमसँ अभिव्यक्त करबाक दृष्टिएँ कवि-रचित 'गीत-पंचक' नामक गीतसंग्रह विशिष्ट कोटिक अछि। एहिमे कवि सर्वथा आत्मकेन्द्रित छथि। अपन अग्रजतुल्य अभिन्न अन्तरंग मित्र ओ महामात्य चन्द्रशेखरक वियोगमे अनुभूत मानसिक विकलताक यथावत् वर्णन कयलनि अछि। किन्तु गीत-पंचकक गीत सबमे जाहि प्रकारक भाव वर्णित भेल अछि तकरा केवल हुनक अपन मित्रहिक विषयमे घटित मानबामे तारतम्य उपस्थित होइत अछि। गीत सबमे अधिक ठाम स्वकीया नायिकाक वैयक्तिक गुण ओ कविक संग ओकर विभिन्न समयक अनुभूत क्षणक वर्णन करैत विश्लेषजन्य आत्मवेदनाक अभिव्यक्ति भेल अछि। किन्तु बहुतो स्थलक भाव स्त्रीपर घटित नहि भऽ पुरुष पर घटित होइत अछि। किछु स्थल पर देहली-दीपक न्यायसँ पुरुष ओ स्त्री दुहू पर घटित भऽ सकैछ।

लगैत अछि जेना कविकें एकहि समयमे अपन अन्तरंग सखा चन्द्रशेखरसिंह ओ अपन प्रियतमा पत्नी—दुहूक मृत्युजन्य शोक सहन करऽ पड़ल छलनि। यैह कारण अछि जे गीत-पंचकमे सखा ओ पत्नी दुहूक प्रति शोकक भाव प्रतिबिम्बित होइत रहैत अछि।

कवि बेर-बेर अपन अन्तरंग(मित्र ओ पत्नी)क मृत्यु-जन्य विश्लेषक वर्णन करैत कथि। निम्न अंशमे प्रायः चन्द्रशेखरक मृत्युक मार्मिक वर्णन अछि—

हरि हरि जह्निका हरि सम वेगे रह हरि तुल उड़ि गेल साथ।
नयनक हरि अति मेदिनि परल अबे दूर गेल हरि सम काय॥

दोसर दिस निम्नलिखित अंशमे पत्नी-वियोगक संकेत भेटैत अछि—

तोहहिं परमपद पावल साजनि तुअ पुने हमे रह साथ।
त्रिभुवन नहि थिकि हम सनि पापिनि मनिधर दुरगेल हाथ॥
हमहि कोर धरि नीद कयल दुहु से निद मोहि बड़ दूर।

'हरि न हरल हमे जिव हरि हरि लेल' सन उक्तिक अर्थ स्त्री ओ पुरुष दुहूक विछोह भऽ सकैत अछि। निम्नलिखित गीतमे प्रियतमा पत्नी ओ सखाक वियोग-व्यथा दुहू व्यंजित होइछ—

कमलिनि मूदलि कुमुद प्रकाश। से बेरि प्रिय सखि अयलहु पास।
ओहे रजनि आवे कत चलि गेल। जिवइते अवसहि कथि(ठि)नहि भेल॥
तातर(ल) अनले तनु सहि नहि जाय। कखने देखब हमे प्रिय सखि काय।
जगतप्रकासनृप रस एहि दुख। चाँदशेषरसिंह लए गेल सुख॥

किन्तु प्रत्येक गीतमे भणिताक चरणमे विभिन्न रूपमे सखा चन्द्रशेखरक स्मरण कयले गेल अछि। गीत-संग्रहक उद्देश्यो कवि द्वारा चन्द्रशेखरक गुणवर्णने कहल गेल अछि।

वास्तवमे गीतपंचक करुण रसक शोकगीति थिक जकर विषयालम्बन विभाव थिक कविक दिवंगत प्रियसखा ओ दिवंगता प्रियतमा पत्नी। आश्रया-लम्बन स्वयं कवि छथि तथा कविक मनोदशा, स्मृति-विस्मृति, आशा-निराशा, प्रसाद-विषाद विषयक भावोर्मिसँ समस्त काव्य व्याप्त अछि।

एहि ठाम संस्कृत साहित्यमे प्रसिद्ध कवि विल्हणकृत 'पंचाशिका' वा 'चौर-पंचाशिका'सँ गीतपंचकक तुलना कयल जा सकैत अछि। राजकुमारी चंपावतीक संग अविच्छेद्य प्रेम होयबाक कारण प्राप्त प्राणदण्डक प्रतीक्षामे विल्हण अपन प्रियाक रूप, गुण ओ प्रीतिक स्मरण करैत छथि। प्रेमक प्रगाढ़ता, समर्पण, बिछोहसँ उत्पन्न विह्वलता, आसन्न मृत्युक संभावनामे अग्रिम जन्ममे मिलनक अदम्य आशा ओ आकांक्षाक जेहन भाव विल्हण व्यक्त कयने छथि, तेहने भाव जगतप्रकाशो अपना काव्यमे व्यक्त कयने छथि। परिस्थिति जन्य भिन्नता ई अछि जे विल्हण प्रियतमासँ वियुक्त भऽ स्वयं प्राणदण्डक प्रतीक्षामे छथि किन्तु जगत-प्रकाशक प्रेमास्पदक मृत्यु भऽ चुकल छनि तथा स्वयं चिर वियोग-व्यथा सहि रहल छथि।

एहि अप्रकाशित काव्यसंग्रहक विशिष्टता ओ मार्मिकताक प्रत्यक्षीकरण एकर वर्णन ओ विषय-वस्तुक संकेत देने कथमपि संभव नहि अछि। ओना तँ समस्त काव्यमे करुणाक प्रवाह अछि। समस्त काव्येसँ कविक भाव-जगतक व्यापक दर्शन भऽ सकैछ किन्तु जें से संभव नहि अछि तें ओकर किछु गीत एतऽ निदर्श-नार्थ प्रस्तुत अछि—

(1)

जेठ जिवन सखि विसलेखे भेल मोरि मिथुन पिरिति सुकवारे।
नेपालक संमते नरदिठि वसु हय से दिन दुर गेल हारे॥
मति अति निरमल सरूप गाँगजल मोहि सुखदायक प्राणे।
लोल लोचन युग हमे अनुरंजन चारु दुहु खंजन जाने॥
भौह कुटिल प्रिय मनमथ धनु थिक ऋजु देखि के नहि भूले।
करजुग किशलय हृदय न धरि मोरि रजनिहु निद भेल दूरे॥

जगतप्रकाश भन चन्द्रशेखर शिव कय देह मिलन जुगुति।
आन न मोर गति तुअ पद पय मति देथु सदाशिव सुगुति॥

(2)

तोहे बर सहचरि जिवक दोसरि थिकि अबे मुख देखिय न भेला।
जेहि नयन जुग देखि हर मोहि दुख से पिय एखन दुर गेला॥
एकहि तलप बसि दुहुजन हँसि हँसि बोललहु एक जिव जानि।
हमहि रोदनकर दुर कर मोर सखि आँचल किशलय पानि॥
दुहुक पिरिति देखि शशधर कुमुदिनि कयलहु मति अति लाजे।
खने बिसलेख देखि उगल क्रूर शशि बहलि दखिन हरि आजे॥
तोह बिनु हम भेल भमर बिहिन जे सिरि हिन सारस जाने।
देखल जगत हमे अति अंधकार सन कुहु निशि सहजे मलाने॥
हरि हरि हरीहि साथहि सखि संग न गेलिहे पापिनि बारि।
जगत प्रकाश भन चाँदशेखरसिंह हमरा तोहहि अधारि॥

(3)

जखने साजनिमनि छल गोरि संगे हमहि प्रणवि पिय उठलि पराते॥धु॥
उगलहु शिशु हरि भेलहु बिहान, चकोर मिथुन अबे तेजल मलान॥
एहि खने सखि मोरि चिर हरि लेल, हमहि कोर धरि लावल तेल॥
पुनु सखि कय देल हमर सनाने, ए बिधि कत मोहि कयल तराने॥
से बिनु रहलाहे पापिनि पराण, मधु तेजि बिपिनक भेल समान॥
परकाश मन चाँदशेखर अधार, खन मनि दुर गेल हृदयक हार॥

(4)

निरधनि कर सओ खसल सुहीर, मोहि लग साजनि नहि भेल थीर॥
हरि हरि हम बड़ पापिनि बारि, हरि लेलि ईसरि हमर अधारि॥
मृगनृपतुल कटि कोमल पानि, हृदय राखल हमे किशलय जानि॥
तोह सनि हित सखि हमर न आन, तोहे बिनु मोहि लेखे जगत मलान॥
प्रकाश कयलहु तोहर धेआन, चाँदशेखर शिव करु अवधान॥

(5)

प्रिय सखि ओरे द्वितीय पहर बरिआयल, की मोहि थल
नयन देखल हमे सादर॥
दुर गेल ओरे जिवक दोसरि सखि किछु खन, की मोहि धग
तुअ तुल नहि थिक जत जन॥

तोह बिनु ओरे पति बिसलेखे हम रति, की सुभ मति
तेजलहु सहचरि जुगति॥
भन किछु ओरे जगतप्रकाश नृपतिवर, की पुरहर
चाँदशेखरसिंह अति भल॥

(6)

शशि बिनु ओरे रजनि सहजे अति मलिन, की तनु खिन,
सखि तेजि हम जल बिनु मिन॥
गुणमत ओरे गुपुतहि भेल मनि हमर की अति भल,
सहचरि दिठि कर कमल॥
जे बिनु ओरे जिवक कलेस अति बाढ़ल की जलधर,
निविड़हु देखि नहि पारल॥
दश दिस ओरे मलिन देखल अबे जगत, की गतागत,
हरि लेल जेहि पिय मोरि रत॥
कहलहु ओरे जगत प्रकाश नृप तिय दुख, की शशि मुख,
चाँदशेखर रह मोहि सुख॥

(7)

आबे गेलि आदर सखि बिनु मोरी॥
खनहु न तेज सखि हमे बड़ बारा, चाँद निकट रह तारा॥
शिवशिव सेहे मोरि परिहरि लेला, जोहि देवे दुख देला॥
जे बिनु निज घरे भेलहु उचाट; पाओल तहि संग थाट॥
परकास भन चाँदशेखर पराण, कुण्डल बिहिन भेल कान॥

(8)

जखने सजनि रह हमरा पासे, किछु नहि होय तरासे॥
हमर कारने पिये जिव दय गेल, मोरि सुख परिहरि लेल॥
कखने भेलहु दिन कओने खने राति, सुमरेते रहबहु काँति॥
जगतप्रकाश भन तोहहि अधार, चाँदशेखर सिंह हार॥

जगतप्रकाशक गीतमे अलंकारक सायास प्रयोग नहि देखल जाइत अछि। अनायास कतोक ठाम उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, रूपकातिशयोक्ति, प्रतीप वा व्यतिरेक अलंकार देखल जाइत अछि। एहि अलंकार सबमे कविक मौलिकता क्वचिते देखि पड़ैत अछि। सर्वत्र नहि, तँ अधिकठाम काव्यजगतमे रूढ़ ओ प्रसिद्ध उपमानक प्रयोग कयल गेल अछि। एकहि उपमानक पर्याय बदलि-बदलि कऽ सेहो प्रयोग बेर-बेर कयल गेल अछि। जाहि प्रसिद्ध उपमानक जगतप्रकाश द्वारा

वहुल प्रयोग भेल अछि तकर नमूना देखल जा सकैत अछि, यथा—

वदन कुशेशय, वदन तुअ कमलसम भमर तुल केशपाशे, कपोल तोहर दरपनके तूल, भोति समिप अछि मधूरी फूल, मधुरी फूल अधर देखु रंग, उरसि तनु रुचिर शिव गर कनक शंख, कटि हरित नृप, उरु गजकर समाने, उरु जुग तोर नाग-पोतककर उपमान, तुअ मुख गारि लेल चाँदक सार, वचन सुधारस, हासरूप क्षीर, तालि दल तुल तोर मुख काँति, तोहे तेजि हमे किछु न सोहावए जइसे विधु विनु राति, लाज नदि, विजुरि चमके तुल पीरिति तोर इत्यादि।

अवश्ये एहि प्रकारक अलंकार-योजनासँ अनेक स्थलपर कवि चमत्कृत करैत छथि। विशेष रूपसँ विप्रलम्भ शृंगारमे विरहदशाक अभिव्यक्तिमे अलंकारक प्रयोग मार्मिकताक सृष्टि करैत अछि। विरहक कारणे नायिकाक शरीरक क्षीणताक समता जेठमासक राति, अगहनमासक दिन तथा माधवक करसँ देखाय कवि अवश्ये चमत्कृत करैत छथि—

'विरहे पीड़ित तनु कएलह अतिखिन जामिनि जैसे राध मास'
'मास अगहन खिन देखह दिन से गुन मोर काए लेल'
'हमर वलय किंकिणि बड़ भेला। तनु माधव-कर जनि गुन लेला॥'
विरह दशामे नायिकाक स्थिति 'कुररि समाने' भऽ जाइछ।

प्रियतमसँ वियुक्त भेला पर नायिका कहैछ—'तिलभरि तोह विनु रहए न पारब जहेन चकेवा जोर' तथा 'तोहे त्यजि भेलि तेल विनु दीप'।

उपसंहार

जगत्प्रकाशमल्ल नाटक ओ काव्यक रचना कयलनि। नाटकक विषयवस्तु पुराण ओ लोकप्रसिद्ध कथा सबसँ ग्रहण कयल। काव्यमे गीतशैलीक प्रयोग कयलनि। हिनक गीत दुइ प्रकारक छनि—नाट्य गीत ओ मुक्त गीत। समेकित रूपसँ हिनक काव्यक दुइ गोट मुख्यधारा अछि शृंगार ओ भक्तिक। एहिमे शृंगारदिस कविक रुझान बेसी देखल जाइछ। भक्ति पक्षमे बहु देव-देवीक भक्तिमे विश्वास रहितो शिव ओ ईश्वरीक प्रति विशेष निष्ठा छनि। ओहूमे ईश्वरी-भक्ति अधिक छनि।

एकटा तेसर धारा अछि कविक आत्माभिव्यंजक। कवि अपन वैयक्तिक अनुभूति ओ आत्मनिष्ठ भावनाकेँ शृंगार अथवा भक्तिक माध्यमसँ व्यक्त कयलनि अछि। कविक समस्त कृतिमे हुनक संकटापन्न संघर्षमय जीवन, अवसाद, अपूर्ण आकांक्षा, प्रीति-अनुरक्तिक बुभुक्षा, अन्तरंग मित्र ओ प्रियतमाक वियोग-पीड़ाक प्रतिविम्बन अथवा सहज अभिव्यक्ति देखल जाइत अछि। चन्द्रशेखरसिंहक प्रति कविक प्रीति ततबा प्रगाढ़ छल तथा हुनका प्रति ततबा अनुरक्त ओ अभिभूत छलाह जे हुनक अकालमृत्यु भेला पर बेर-बेर हुनक स्मरणे नहि कयल, गीत-पंचक नामक शोक-काव्यक रचने नहि कयल अपितु हुनक नामक पूर्वपद 'चन्द्र' केँ अपन नामक उत्तरपद बनाय जगत्प्रकाशसँ 'जगत्चन्द्र' बनि गेलाह। एहि प्रकारक प्रीति-निर्वाह ओ काव्यरूपमे श्रद्धांजलि-अर्पणक उदाहरण काव्यजगतमे विरल मानल जा सकैत अछि।

भाषा ओ अलंकार पक्ष दुर्बल रहितो कविक संगीत पक्ष अधिक सशक्त अछि। शास्त्रीय राग, ताल ओ देशीय रागक संगहि लोकप्रसिद्ध भास सभक प्रयोग विश्वासपूर्वक कयलनि अछि।

काव्यक उद्देश्य लोकानुरंजनक संगहि मानव जीवनक हेतु संदेश देब सेहो रहैत अछि। जगत्प्रकाशक नाटकसँ ई संदेश भेटैत अछि जे कष्ट, संघर्ष, धैर्य ओ साहसक पश्चाते इष्टसिद्धि ओ जीवनक सुख-प्राप्ति संभव अछि।

मानवजीवनमे आनन्द आवश्यक। आनन्दक महत्त्वपूर्ण आधार थिक नारी-पुरुषक प्रीति। परन्तु एहि प्रीतिक स्वकीया प्रेममे मर्यादित रहब श्रेयस्कर।

काव्यमे ओ बंगीय वैष्णव दर्शनमे परकीया प्रेमक श्रेष्ठता रहितो सामाजिक जीवनमे एकरा विच्छृंखलता कहल जायत तेँ कवि जगत्प्रकाश अपन कृतिमे शृंगारक अवलम्बन करितो ओकरा दाम्पत्येजीवन धरि सीमित देखयबाक प्रयास कयलनि अछि।

कविक जीवनिकामे देखल गेल अछि जे कविक जीवनकाल बड़ अल्प रहल। बाल्यावस्थासँ मृत्युपर्यन्त अभिभावक-विहीन रहलाह। राजनीतिक संघर्षसँ आक्रान्त रहलाह तथा एहनो परिस्थिति आयल जखन ओ सर्वथा असहाय भऽ गेलाह। तथापि ओहि संकटक साहससँ निवारण करैत अपन ओ भक्तपुरक प्रतिष्ठाकेँ पुनः स्थापित करबामे कृतकार्य भेलाह। एहनहुँ परिस्थितिमे एतेक काव्य ओ नाटकक रचना कऽ लेब एकटा विशिष्ट बात थिक जाहि लेल कविक प्रति प्रशंसाभाव सहज रूपमे उदित होइछ। किन्तु जगत्प्रकाशक कृतिमे मानव जीवनक अनुभूत शाश्वत सत्यक अभिव्यक्तिक जे अपेक्षा भऽ सकैत अछि से भेटैत नहि अछि। शाश्वत सत्यक दर्शनमे वयसहुक योगदान रहैत अछि। किन्तु परिपक्व वयस जीवक ओ तज्जन्य अनुभव प्राप्त करबाक सुयोग कविकेँ प्राप्त नहि भेलनि। तथापि हिनक काव्यमे कतोक एहन सूक्ति सभक प्रयोग भेल अछि जाहिमे कोनो ने कोनो चिरन्तन सत्यक उद्‌घाटन भेल अछि। एहिठाम जगत्प्रकाशक किछु सूक्ति सभकेँ उद्धृत करैत एहि विनिबन्धकेँ समाप्त कयल जा रहल अछि—

1. पुरुख शिलीमुख जाति
2. सहए कठिन जुव मनमथ का दुख
3. मुगुधा नारि भाव नहि जान
4. अधिक मान सञो किछु नहि पाव
5. रसमन्त बूझय भाव
6. जे बुध जन होए सेहे रस पाव
7. जे होअ रसिक सेहे रस पाव
8. दुरद भार नलिनि नहि सहबी
9. मधु तेजि विपिनक की होए सोह
10. सब किछु समएहि सोह
11. परकाश भन मनि पावए कठीन
12. धैरज धर निय दुखे
13. जे होअ सुपुरुष अवस करए सेहि निय बच राखएके काज
14. आएल सरणके नास करए जे सुजनक ईं न उचीत
15. कबहु न होअ हरि हरिन समान
16. अवसे सब कर जिवए उपाए।
    जञो होअ सेवक तञो देवकाए॥

17. जेहि जिविका सेहि मोरि देवा
18. जीवन समय रहय दिन चारि
19. जानह जौवन अथीर
20. जौवन प्रभुता विभूति अथिर थिक की बुध की शिशु सबहि समान
21. अथिर कलेवर जानु हे कमल पातक जल तुले
22. भवन कनक जन रजत आदि जत थिर नहि रह सब जने
23. जगत्प्रकाश भन सबहि अथिर थिक शिशु मित जन धन दार।

सहायक ओ सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. जयदेव (मैथिली अनुवाद)—डा० सुनीति कुमार चटर्जी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
2. नाट्यशास्त्र—काव्यमाला-42, बम्बई, द्वितीय संस्करण, 1943
3. नानार्थ देव-देवी गीत-संग्रह—जगत्प्रकाशमल्ल, फूलपात (विशेषांक), सं० पण्डित सुन्दरझा शास्त्री, काठमाण्डू, सितम्बर, 1972
4. नेपाल उपत्यका को मध्यकालीन इतिहास—सूर्य विक्रमज्ञवाली, रायल नेपाल एकेडमी काठमाण्डू, सम्वत् 2019
5. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास—प्रफुल्लकुमार 'मौन', मैथिली साहित्य परिषद्, विराटनगर, नेपाल, 1972
6. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत—सं० डा० रामदेवझा, मैथिली साहित्य-परिषद् विराटनगर, नेपाल, 1972
7. प्रभावती हरण—जगत्प्रकामल्ल, सं० डा० लेखनाथमिश्र, पटना, 1972
8. भाषा-वंशावली, भाग-2—सं० देवीप्रसाद लंसाल, नेपाल राष्ट्रिय पुस्तकालय, काठमाण्डू, संवत् 2023
9. मिथिलांक, मिथिला मिहिर, दरभंगा, 1936
10. मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास—डा० लेखनाथमिश्र, पटना, 1978
11. मैथिली नाटक का उद्भव और विकास—डा० प्रतापनारायणझा, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 1973
12. मैथिली प्रकाश, कलकत्ता, 1972
13. मैथिली शैव साहित्य—डा० रामदेवझा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना, 1976।
14. श्रीमद्भागवत—गीता प्रेस, गोरखपुर
15. संगीतदामोदर—शुभंकर, संस्कृत कालेज, कलकत्ता, 1960
16. हरिवंश पुराण—गीता प्रेस, गोरखपुर
17. A History of Maithili literature, Vol-I—Dr. Jayakant Mishra, Tirbhukti Publications, Allahabad, 1949.

18. Medieval Nepal, Part-II—D. R. Regmi, Firma K. L. Mukhopadhyay, Calcutta, 1966.

जगत्प्रकाशमल्लक अप्रकाशित ग्रन्थ

(राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूक सूचीपत्रक भाग प्रथम संख्या द्वारा तथा हस्तलेखक बस्ताक क्रमांक द्वितीय संख्या द्वारा सूचित)

1. उषाहरणनाटक, 1/1564
2. कृष्ण चरित नाटक, 1/1696
3. गीत पंचक, 1/355, 1/357
4. गीतावली, 1/3154
5. नलचरित/नलीयनाटक, 1/397, 4/941
6. नानार्थ गीत, 1/395
7. नानार्थ देव-देवी गीत-संग्रह, 1/357
8. नानारंगगीत संग्रह/नानाराग गीतम्, 1/349
9. पद्यसमुच्चय, 1/1502
10. पारिजात हरण नाटक, 1/420
11. मदन चरित्र नाटक, 4/939
12. मलयगन्धिनी नाटक, 1/436
13. महाभारत नाटक, 1/1478
14. माधव मालति नाटक, 4/930
15. मूलदेव शशिदेवोपाख्यान, 1/377

□□